राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक

Www.gauravshalibharat.com

गौरवशाली भारत

नई दिल्ली से प्रकाशित

वर्ष : 11
अंक : 358
पृष्ठ : 08
नई दिल्ली
शनिवार 09 जूलाई 2022
मूल्य : 1.50/-
RNI No .DELHIN/2011/38334

मुख्य अपडेट | पेज 3 ज़नेस ब्लास्टर्स के फाइनलिस्ट स्टूडेंट्स को दिल्ली सरकार के टॉप यूनिवर्सिटीज में सीधे एडमिशन देगी केजरीवाल सरकार | पेज 5 बालू मौरंग की कालाबाजारी पर सीएम योगी सख्त, कड़ी कार्रवाई के निर्देश | पेज 7 शिंजो आबे पर गोली चलाने वाले शख्स ने खुद बनाई थी बंदूक, भागने की नहीं की कोशिश

कोविड-19 : बीते 24 घंटों 18,375 नए केस

केरल में नए संक्रमित 11 प्रतिशत घटे, लेकिन सबसे अधिक मौतें दर्ज की गई

नई दिल्ली। बीते दिन से कोरोना के मामलों में मामूली कमी देखी जा रही है। गुरुवार को कोरोना के 18,375 नए मामले सामने आए हैं, जबकि 37 संक्रमितों की मौत हो गई। पिछले दिन की तुलना में, 525 कम मामले दर्ज किए गए। वहीं, 15,228 लोग संक्रमण से ठीक हुए हैं। देश में एक्टिव केस यानी इलाज करा रहे मरीजों की संख्या बढ़कर 1 लाख 20 हजार 991 हो गई है। बुधवार के मुकाबले गुरुवार को नए केस में 10 फीसदी का इजाफा हुआ है। वहीं, केरल में नए मामलों में 11त्न की कमी आने के बावजूद यहां देशभर में सबसे अधिक मौतें दर्ज की गई हैं। नए संक्रमितों के मामले में भी केरल पहले नंबर पर है। गुरुवार के आंकड़ों में, देश में सबसे ज्यादा मामले केरल से आ रहे है। एक दिन में 3661

नए मामले दर्ज किए गए। यहां गुरुवार को संक्रमण से 16 लोगों की मौत हो गई। इसके साथ ही, राज्य में महामारी की शुरुआत से अब तक मरने वालों का आंकड़ा 70 हजार के पार हो गया है।

देश के पांच राज्यों में सबसे ज्यादा नए केस

देश में 5 राज्य ऐसे है, जहां से सबसे ज्यादा मामले सामने आ रहे है। इनमें केरल, महाराष्ट्र, तमिलनाडु, पश्चिम बंगाल और कर्नाटक शामिल है। पश्चिम बंगाल में, पिछले दिन के मुकाबले नए संक्रमित लोगों के आंकड़ों में 23त्न बढ़ोतरी हुई है। पिछले 24 घंटे में महाराष्ट्र में 2 लोगों की मौत हुई है। बुधवार को राज्य में 3 संक्रमितों की मौत हो गई। कोरोना के शुरुआती दौर से लेकर अब-तक हुई मौत के आंकड़ो में, महाराष्ट्र सबसे आगे चल रहा है। महाराष्ट्र में, टोटल 1 लाख 47 हजार से ज्यादा मरीजों की मौत हो चुकी है। ढाई करोड़ की आबादी वाले चीन के शंघाई में कोरोना के रिकॉर्ड नए मामले सामने आए हैं। जीरो कोविड नीति वाले चीन के इस शहर में ये मई के बाद सबसे बड़ी संख्या है। नए मामले सामने आने के बाद शंघाई के लोगों का हर तीसरे दिन दो बार पीसीआर टेस्ट कराए जाने के आदेश दिए गए हैं।

अमरनाथ में बादल फटा, 25 टेंट बहे; 45 श्रद्धालु फंसे

3 महिलाओं समेत 13 की मौत

अमरनाथ गुफा, जम्मू-कश्मीर। अमरनाथ गुफा के पास बादल फटने की खबर है। घटना शुक्रवार शाम 5 बजकर 30 मिनट पर हुई। जिस समय बादल फटा, उस समय गुफा के पास 10 से 15 हजार श्रद्दालु मौजूद थे। इस घटना में 3 महिलाओं समेत 13 लोगों की मौत हो गई है। 35 से 40 श्रद्धालुओं के अब भी फंसे होने की खबर है। गुफा के पास फंसे यात्रियों को पंचतरणी ले जाया गया है। बादल फटने की घटना पवित्र गुफा के एक से दो किलोमीटर के दायरे में हुई। पहाड़ों से तेज बहाव के साथ आए पानी से श्रद्धालुओं के लिए लगाए गए करीब 25 टेंट और दो से तीन लंगर बह गए। बारिश से पूरे इलाके में तेजी से पानी भर गया और कई लोग इसकी चपेट में आ गए। कई श्रद्धालु लापता हैं और उनके तेज बहाव में बहने की आशंका है। गांदरबल के मुख्य चिकित्सा अधिकारी ने बताया कि सभी स्वास्थ्य व्यवस्थाएं अलर्ट मोड में हैं।

सेना समेत कई एजेंसियां रेस्क्यू में जुटीं

घटना के तुरंत बाद सेना, ITBP, CRPF, BSF, NDRF और SDRF के साथ जम्मू-कश्मीर पुलिस की टीम ने रेस्क्यू शुरू कर दिया। NDRF के DG अतुल करवाल ने बताया कि लोगों को सुरक्षित निकालकर कैंपों तक पहुंचाया जा रहा है। घायलों को एयरलिफ्ट करके अस्पताल ले जाया गया है।

प्रधानमंत्री ने रेस्क्यू मिशन की जानकारी ली

हादसे के बाद पीएम नरेंद्र मोदी ने जम्मू-कश्मीर के उपराज्यपाल मनोज सिन्हा से बात की। उन्होंने हादसे पर दुख जताया और पीड़ित लोगों तक हर मुमकिन मदद पहुंचाने की बात कही। वहीं गृह मंत्री अमित शाह ने ट्वीट किया, बाबा अमरनाथ जी की गुफा के पास बादल फटने से आई बाढ़ के संबंध में मैंने LG मनोज सिन्हा जी से बात कर स्थिति की जानकारी ली है। लोगों की जान बचाना हमारी प्राथमिकता है। सभी श्रद्धालुओं की कुशलता की कामना करता हूं।

अमरनाथ श्राइन बोर्ड, जम्मू-कश्मीर पुलिस और एनडीआरएफ ने हेल्पलाइन नंबर जारी किए

0194 2313149
0194 2496240
9596779039
9797796217
01936243233
01936243018

जापान के पूर्व पीएम 'आबे' की हत्या

इलेक्शन कैंपेन में पूर्व सैनिक ने पीछे से गोली मारी, 6 घंटे बाद निधन; भारत में राष्ट्रीय शोक

एजेंसी

टोक्यो। जापान के पूर्व प्रधानमंत्री शिंजो आबे की शुक्रवार सुबह गोली मारकर हत्या कर दी गई। आबे नारा शहर में इलेक्शन कैंपेन के दौरान स्पीच दे रहे थे। 42 साल के हमलावर ने पीछे से फायरिंग की। आरोपी को मौके पर गिरफ्तार कर लिया गया। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक आरोपी का नाम यामागामी तेत्सुया है और वो आबे की नीतियों से नाखुश था।

दो गोलियां लगने के फौरन बाद आबे गिर पड़े। उन्हें हेलिकॉप्टर से नारा मेडिकल यूनिवर्सिटी हॉस्पिटल ले जाया गया।

6 घंटे तक मेडिकल टीम ने उन्हें बचाने की कोशिश की। इलाज के दौरान आबे को दिल का दौरा भी पड़ा। घटना भारतीय समयानुसार सुबह 8 बजे (जापान के समय के मुताबिक सुबह 11.30 बजे) की है। आबे की जान बचाने की कोशिश करने वाली मेडिकल टीम में शामिल एक डॉक्टर ने कहा- आबे को लगी एक गोली उनके दिल तक पहुंच गई थी।

मोदी बोले- पूरा भारत शोक में डूबा

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने आबे के निधन पर गहरा दुख व्यक्त किया है। मोदी ने एक ट्वीट में कहा- भारत और जापान के रिश्तों और ग्लोबल पार्टनरशिप में आबे की अहम भूमिका रही। आज पूरे भारत में शोक है।

इस मुश्किल वक्त में हम पूरी ताकत के साथ अपने जापानी भाई-बहनों के साथ खड़े हैं।

उन्होंने शिंजो के सम्मान में कल यानी 9 जुलाई को एक दिन के राष्ट्रीय शोक की घोषणा भी की।

आबे पर फायरिंग उस वक्त की गई, जब वे चुनावी सभा को संबोधित कर रहे थे। इस दौरान फायरिंग की आवाज आई और आबे गिर पड़े। शुरुआती रिपोर्ट्स में कहा गया कि किसी ने उन्हें सीने पर गोली मारी। बाद में ये साफ हुआ कि उन पर पीछे से फायरिंग हुई।

हमलावर को गिरफ्तार किया गया

हमलावर यामागामी तेत्सुया को गिरफ्तार कर लिया गया। उसके पास से गन बरामद हुई है। ये किसी टीवी कैमरे की तरह नजर आती है। जापानी मीडिया के मुताबिक हमलावर ने हैंडमेड गन का इस्तेमाल किया। वो मेरीटाइम सेल्फ डिफेंस फोर्स का मेंबर था।

उत्तराखंड में सड़क हादसा, 9 की मौत

नदी के तेज बहाव से कार पलटी; मृतकों में ज्यादातर पंजाब के, 2 को बचाया गया

नैनीताल। उत्तराखंड के रामनगर में शुक्रवार सुबह 5:45 बजे पर्यटकों की कार ढेला नदी में पलट गई। हादसे के समय पुल पर तेज बहाव था और कार का संतुलन बिगड़ने से वह पलट गई। कार में सवार 9 लोगों की मौत हो गई। हादसे के बाद हुए रेस्क्यू में 1 लड़की नाजिया और एक बच्चे को बचा लिया गया। दोनों को रामनगर अस्पताल में भर्ती हैं। ये सभी ढेला के ही एक रिसॉर्ट में रुके थे। सभी ऑर्केस्ट्रा ग्रुप से जुड़े हुए थे और कार्यक्रम से वापस लौट रहे थे। कुमाऊं रेंज के छ्ठ्ठल आनंद भरण ने बताया कि मरने वालों में कई लोग पंजाब के पटियाला के रहने वाले थे। सुबह से हो रही भारी बारिश के चलते नदी उफान पर थी, जिसके कारण हादसा हुआ।

कार में सवार मरने वालों के नाम

हादसे में मरने वालों की पहचान पवन जैकब (45) पुत्र सुरजीत जैकब और इकबाल (35) निवासी भीम नगर सफाबादी गेट झुंगियां (पटियाला), कविता पत्नी भूपिंदर सिंह निवासी गुरु अंगददेव कॉलोनी राजपुरा (पटियाला), सपना पुत्री बलविंद्र सिंह, हिना, माही गांव इंदिरापुरम (पटियाला), अमनदीप सिंह पुत्र मनोहर सिंह चेलां भट्टी भवानीगढ़ (संगरूर) की मौत हो गई। वहीं, एक महिला आशिया रामनगर (उत्तराखंड) की भी बताई जा रही है।

जहां कार बही, वहां पहले भी हुए हादसे

चश्मदीदों के मुताबिक घटना सुबह 5:45 बजे की है। इन लोगों ने कार को रोकने की कोशिश की, लेकिन कार की रफ्तार इतनी तेज थी कि वे उसे रोक नहीं पाए। ढेला गांव की इस नदी का बहाव इतना तेज था कि वह कार को भी बहा ले गया। बताया जा रहा है कि प्रशासन इस नदी पर पुल बनाने की योजना बना रहा था, क्योंकि यहां पहले भी ऐसे हादसे हो चुके हैं।

मौसम विभाग ने दी थी भारी बारिश की चेतावनी

मौसम विभाग ने 4 जुलाई को ही उत्तराखंड के देहरादून, नैनीताल, बागेश्वर, पिथौरागढ़, टिहरी, पौड़ी और चंपावत में भारी बारिश का अलर्ट जारी किया था। सोमवार को भी देहरादून में भारी बारिश हुई जिसमें कई पेड़ उखड़ गए और वाहन क्षतिग्रस्त हो गए। पिछले हफ्ते उत्तराखंड में मानसून ने दस्तक दी, जिससे पहाड़ी राज्य में भूस्खलन की घटनाएं बढ़ गई हैं।

संवेदनशील इलाकों में भूस्खलन, चट्टान गिरने, सड़कों पर मलबा, कटाव और नदी नालों में पानी के बहाव को लेकर लोगों को सतर्क रहने की सलाह भी दी गई थी।

शिंजो की हत्या से देश में शोक की लहर, एक दिन के राष्ट्रीय शोक की घोषणा

नयी दिल्ली। जापान के पूर्व प्रधानमंत्री शिंजो आबे की मृत्यु से शुक्रवार को देश में शोक की लहर व्याप्त हो गयी और भारत में दिवंगत नेता के सम्मान में शनिवार को राष्ट्रीय शोक की घोषणा की गयी है।

राष्ट्रपति राम नाथ कोविंद, प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी, गृह मंत्री अमित शाह, रक्षा मंत्री राज नाथ सिंह , कांग्रेस अध्यक्ष सोनिया गांधी और अन्य गणमान्य व्यक्तियों ने श्री शिंजों की हत्या पर गहरा दुख व्यक्त किया है और भारत एवं जापान के संबंधों को और प्रगाढ़ बनाने में उनके योगदान का स्मरण करते हुए उन्हें भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की है।

श्री कोविंद ने कहा कि श्री आबे की हत्या 'सम्पूर्ण मानवता के लिए त्रासदी' है।

उन्होंने कहा, यह विश्वास करना कठिन हो रहा है कि शिंजो आबे अब इस दुनिया में नहीं है। वह एक महान नेता थे, वह अपने मिलनसार व्यक्तित्व के कारण पूरी दुनिया के लोगों के बीच प्रिय बन गये थे।

उन्होंने कहा, श्री आबे का एक हत्यारे की गोली से मारा जाना पूरी मानवता के लिए एक बड़ी त्रासदी है। मैं उनके परिजनों और जापान की जनता के प्रति गहरी संवेदना व्यक्त करता हूं।

श्री मोदी ने कहा, मैं जापान के पूर्व प्रधानमंत्री शिंजो आबे की हत्या से स्तब्ध हूं और इस पर दुख व्यक्त करने के लिए मेरे पास शब्द नहीं हैं। वह मेरे सबसे प्रिय मित्रों में एक थे, वह दुनिया के कद्दावर राजनेता और उनकी प्रशासनिक क्षमता उल्लेखनीय थी।

प्रधानमंत्री ने एक के बाद एक ट्वीट करते हुए कहा, श्री शिंजो ने अपना पूरा जीवन जापान और दुनिया को बेहतर स्थान बनाने के लिए अपना पूरा जीवन समर्पित कर दिया था।

गृह मंत्री अमित शाह ने कहा, श्री शिंजो की हत्या की खबर सुनकर मुझे बहुत पीड़ा हुई है। भारत-जापान संबंध को मजबूत बनाने में उनके योगदान को हमेशा याद किया जायेगा।

एक करोड़ रिश्वत मांगता आईएफएस अफसर गिरफ्तार

पंजाब में कॉलोनाइजर को एफआईआर का डर दिखा वसूली; हर महीने 10 लाख भी मांगे

चंडीगढ़। पंजाब में विजिलेंस ब्यूरो ने एक करोड़ रिश्वत मांगने वाले इंडियन फॉरेस्ट सर्विस विशाल चौहान को गिरफ्तार कर लिया। यही नहीं, इसके बाद हर महीने 100 लाख रुपए और जमीन बिक्री में 5 लाख रुपए का कमीशन मांगा था। उसने पंजाब लैंड रिजर्वेशन एक्ट में आती जमीन पर कब्जे का आरोप लगा कॉलोनाइजर को FIR का डर दिखाया था। पहले पकड़े ठेकेदार और फॉरेस्ट अफसरों से पूछताछ के बाद IFS पर यह कार्रवाई की गई। पंजाब विजिलेंस ब्यूरो ने 2 जून को मोहाली के छ्ठ्ठल गुरअमनप्रीत सिंह और ठेकेदार हरमिंदर सिंह हमी को करप्शन केस में पकड़ा था। इनसे

पूछताछ में पता चला कि रिश्वतखोरी के धंधे में ड्डस्र विशाल चौहान भी शामिल है। जिसके बाद विजिलेंस ने उसे केस में नामजद कर लिया।

कॉलोनाइजर की कुछ जमीन PLPA के अधीन

जांच में पता चला कि सेक्टर 10 चंडीगढ़ के रहने वाले दविंदर संधू के पास गांव मसौल और टांडा में 100 एकड़ जमीन है। इसका कुछ हिस्सा पंजाब लैंड प्रिजर्वेशन एक्ट के अधीन आती है।

पहले शिकायत करवाई

कॉलोनाइजर दविंदर संधू के पिता कर्नल बलजीत संधू और उनके कर्मचारी तरसेम सिंह के खिलाफ एक शिकायत पुलिस तक पहुंची। रेंज अफसर रणजोध सिंह ने यह शिकायत दी। उन्होंने दविंदर संधू को बताया कि यह शिकायत छ्ठ्ठल गुरअमनप्रीत सिंह और शिवालिक सर्कल के कंजरवेटर (वनपाल) विशाल चौहान के कहने पर दी है। संधू इन दोनों से मिलकर बात कर ले वर्ना उन पर एफआईआर दर्ज हो जाएगी। इसके बाद दविंदर संधू की ठेकेदार हमी और डीएफओ गुरअमनप्रीत सिंह के साथ डेढ़ घंटा बातचीत हुई। संधू ने ठेकेदार के कहने पर डीएफओ को 2 लाख रुपए का पैकेट दिया। डीएफओ ने कहा कि बाकी पैसों के बारे में वह चौहान से बात कर उसे बता देगा। संधू ने पूरे मामले की वीडियो रिकॉर्डिंग कर ली।

प्रोजेक्ट शुरू करना है तो एक करोड़ दो

इसके बाद ठेकेदार हमी ने संधू से संपर्क किया। उसने बताया कि उसकी और डीएफओ की कंजरवेटर चौहान से बात हो चुकी है। प्रोजेक्ट की शुरूआत करनी है तो पहले एक करोड़ रुपए देने होंगे। फिर हर महीने 10 लाख रुपए और जो भी जमीन बिकेगी, उसमें से 5 लाख रुपए देने होंगे। हालांकि संधू इसके लिए सहमत नहीं हुआ।

संधू ने सीएम हेल्पलाइन पर भेजी शिकायत

दविंदर संधू ने इसकी शिकायत सीएम भगवंत मान की हेल्पलाइन पर भेज दी। जिसके बाद पहले डीएफओ और ठेकेदार को गिरफ्तार किया गया। जांच में पता चला कि IFS चौहान ने दबाव डालकर दविंदर संधू के पिता पर केस दर्ज करवा दिया।

अवैध रेस्तरां

दिल्ली में अवैध रेस्तरां पर कार्रवाई,166 के किए चालान

14 रेस्टोरेंट-गेस्ट हाउस सील, 20 को बंद का नोटिस

नई दिल्ली। दिल्ली नगर निगम के अनेक इलाकों में भूतल और छतों पर अवैध तरीके से रेस्तरां चल रहे हैं, तो वहीं महिपालपुर में बड़ी संख्या में गेस्ट हाउसों का संचालन किया जा रहा है। रेस्टोरेंट और गेस्ट हाउस चलाने वालों के पास ना तो निगम का लाइसेंस हैं और ना ही अग्निशमन विभाग की तरफ से अनापत्ति प्रमाण पत्र। सूत्रों का कहना है कि अवैध रूप से चल रहे रेस्तरां और गेस्ट हाउसों को निगम के अधिकारियों का अप्रत्यक्ष रूप से संरक्षण प्राप्त है।

जानकारी के मुताबिक एकीकृत निगम से पहले दक्षिण, उत्तरी और पूर्वी निगम में शहरी गांवों में रेस्तरां

चलाने की अनुमति देने का योजना को मंजूरी दी गई थी, लेकिन वह लागू नहीं की जा सकी। इसी तरह से अनाधिकृत नियमित कॉलोनियों अनिधकृत कॉलोनियों और शहरीकृत गांव में कारोबारियों को राहत देने के लिए लाइसेंस प्रदान करने की नीति लाई गई थी। निगम सूत्रों ने बताया कि रेस्तरां , गेस्ट हाउस और भोजन प्रतिष्ठानों को चलाने के लिए निगम से लाइसेंस और अग्निमशन विभाग से अनापत्ति प्रमाण लेना अनिवार्य है। लेकिन पंजाबी बाग, महरौली, महिपालपुर, हौजखास विलेज, छतरपुर, ओखला, करोलबाग, शकरपुर, कृष्णा नगर, गीता कालोनी ,अंसल प्लाजा, ग्रेटर कैलाश -दो मार्केट, तिलक नगर, मॉडल टाउन , मुखर्जी नगर, फतेहपुरी सहित अन्य इलाके ऐसे हैं जहां सैंकड़ों की संख्या में बगैर लाइसेंस के रेस्टोरेंट, गेस्ट हाउस और आवास प्रतिष्ठान गैर कानूनी तरीके से चल रहे हैं। ओखला में भूतल में चल रहे एक गैर कानूनी रेस्टोरेंट में आग लगने पर एक युवक की मौत हो गई थी।

क्या कहते हैं निगम के स्वास्थ्य विभाग अधिकारी

दिल्ली नगर निगम स्वास्थ्य विभाग अधिकारियों का कहना है कि दक्षिण जोन में 11 रेस्टोरेंट सील किए गए तो वहीं तीन गेस्ट हाउस को भी सील किया गया है। जबकि दस रेस्टोरेंट स्वत ही बंद कर लिए गए। मध्य जोन में एक रेस्टोरेंट सील किया गया। नजफगढ़ जोन के महिपालपुर में 166 रेस्तरां के चालान किए गए और 20 को बंद करने का नोटिस जारी किया जा चुका है। इसके अलावा करोलबाग जोन में दस रेस्टोरेंटों का चालान किया गया। निगम स्वास्थ्य अधिकारियों का कहना है कि अन्य जोनों में भी यह कार्रवाई चल रही है।

समावेशन के बिना विकास, विकास के बिना समावेशन संभव नहीं : मोदी

नयी दिल्ली। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने कहा कि समावेशन के बिना विकास और विकास के बिना समावेशन संभव नहीं है और सबका साथ सबका विकास उनकी सरकार के इसी मंत्र को उद्भासित करता है। मोदी ने यहां विज्ञान भवन में आयोजित प्रथम अरुण जेटली व्याख्यानमाला को संबोधित करते यह बात कही। कार्यकम में वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण व्याख्यानमाला का विषय -'समावेशन से विकास- विकास से समावेशन' था। प्रधानमंत्री ने अपने व्याख्यान में श्री जेटली को अपना अभिन्न मित्र बताते हुए उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की और सरकार की नीतियों के निर्माण में उनके योगदान को याद किया। प्रधानमंत्री ने अपने

संबोधन की शुरुआत में कहा, ये आयोजन अरुण जेटली जी को समर्पित है। बीते दिनों को याद करते हैं, तो उनकी बहुत सारी बातें, उनसे जुड़े बहुत से वाकये याद आते हैं। उनकी वक्तृत्व कला के तो हम सभी कायल थे। उनका व्यक्तित्व विविधता से भरा था, उनका स्वभाव सर्वमित्र था। इस हॉल में जमा सभी लोग उनके मित्र कहे जाते हैं। उन्होंने कहा, उनके व्यक्तित्व की खूबी को सभी आज भी याद करते हैं और हर कोई उनकी कमी महसूस करता है। मैं अरुण जेटली जी को अपनी विनम्र श्रद्धांजलि देता हूं।

श्री मोदी ने व्याख्यानमाला के विषयवस्तु पर बोलते हुए कहा, मैं आप सभी से ये प्रश्न पूछना चाहता हूं। क्या बिना समावेशन के सही विकास संभव है? क्या बिना विकास के समावेशन के बारे में सोचा जा सकता है? उन्होंने कहा कि शासनाध्यक्ष के तौर पर 20 वर्ष के उनके अनुभवों का सार यही है कि- बिना समावेशन के वास्तविक विकास संभव ही नहीं है। और, बिना विकास के समावेशन का लक्ष्य भी पूरा नहीं किया जा सकता।

शार्ट न्यूज

बर्थडे पार्टी में शामिल हुई नाबालिग को कमरे में बंद कर किया गैंगरेप, क्लासमेट ने वीडियो बनाकर सीनियर को भेजा

नई दिल्ली। तमिलनाडु के कडलूर में एक हैरार करने वाला मामला सामने आया है। जहां, बर्थडे पार्टी में शामिल हुई एक नाबालिग छात्रा के साथ उसके तीन क्लासमेट ने गैंगरेप की घटना को अंजाम दिया है। मामला सामने आने के बाद पुलिस ने तीनों लड़कों को हिरासत में ले लिया और यौन अपराधों से बच्चों का संरक्षण अधिनियम अधिनियम के तहत मामला दर्ज किया है। पीड़ित की उम्र 15 साल है और वो एक सह-शिक्षा सरकारी स्कूल में पढ़ती है। उसे उसी स्कूल के कक्षा 12 के छात्र के जन्मदिन की पार्टी में आमंत्रित किया गया था। जहां, उसके क्लासमेट भी शामिल हुए थे। गैंगरेप से पहले कक्षा 10 के एक स्टूडेंट ने नाबालिग को किसी विषय पर चर्चा करने के लिए एक कमरे में बुलाया।

उपराज्यपाल फलों से लदे वाहनों की आवाजाही सुचारू करे : केएफजीडीए

श्रीनगर। कश्मीर फल उत्पादक एवं डीलर एसोसिएशन (केएफजीडीए) के एक प्रतिनिधिमंडल ने शुक्रवार को राजभवन में उपराज्यपाल मनोज सिन्हा से मुलाकात करके अमरनाथ यात्रा के बीच श्रीनगर-जम्मू राष्ट्रीय राजमार्ग पर फलों से लदे वाहनों की आवाजाही सुचारू करने मांग की है। आधिकारिक प्रवक्ता ने शुक्रवार को यहां बताया कि जम्मू- कश्मीर नेशनलिस्ट पीपुल्स फ्रंट के अध्यक्ष शेख मुजफ्फर के नेतृत्व में एक प्रतिनिधिमंडल ने श्री सिन्हा को राष्ट्रीय राजमार्ग पर फलों से लदे वाहनों की आवाजाही सुचारू करने से संबंधित मुद्दों और मांगों से अवगत कराया गया है। प्रतिनिधिमंडल ने उपराज्यपाल से अंतरराष्ट्रीय बाजार में जम्मू-कश्मीर के बागवानी उत्पादों को निरंतर बढ़ावा देने, कोविड महामारी के मद्देनजर किसान क्रेडिट कार्ड (केसीसी) ऋण में छूट की भी मांग की। प्रतिनिधिमंडल के सदस्यों ने पिछले दो वर्षों में जम्मू-कश्मीर के बागवानी क्षेत्र के अभूतपूर्व वृद्धि और विकास के लिए उपराज्यपाल का आभार व्यक्त किया। उन्होंने कहा इससे किसानों की आय में वृद्धि हुई है। उपराज्यपाल ने प्रतिनिधिमंडल के सदस्यों से बताया कि प्रशासन ने जम्मू-कश्मीर के बागवानी क्षेत्र के तेजी से विकास के लिए कई महत्वपूर्ण पहल की है। उन्होंने सभी वास्तविक मुद्दों का उचित समाधान का आश्वासन दिया।

राज्यपाल को बताया गया अग्निपथ भर्ती योजना की बारीकियां

देहरादून। उत्तराखंड के राज्यपाल लेफ्टिनेंट जनरल (सेवानिवृत्त) गुरमीत सिंह को सेना के जोनल रिक्रूटिंग ऑफिसर मेजर जनरल एन.एस. राजपुरोहित ने शुक्रवार को अग्निपथ योजना के तहत अगस्त एवं सितम्बर माह में राज्य में होने वाली भर्तियों के सम्बन्ध में विस्तृत प्रस्तुतीकरण दिया। राज्यपाल ने इसे उत्तराखण्ड के लिए गर्व की बात बताया कि अग्निपथ योजना हेतु भर्ती प्रक्रिया की शुरुआत यहां से हो रही है। भर्ती रैली के लिए यहां के युवाओं में अलग ही जोश देखने को मिलेगा। उन्होंने कहा कि उत्तराखण्ड के युवाओं के लिए यह भर्ती रैली एक अवसर रहेगी। उन्होंने अधिक से अधिक युवाओं से रैली में प्रतिभाग कर देश सेवा के अवसर का भागी बनने की अपील भी की।श्री सिंह ने मेजर जनरल एन.एस. राजपुरोहित को आश्वासन दिया कि भर्ती प्रक्रिया में हर सम्भव सहयोग किया जाएगा। उन्होंने राज्य के युवाओं को भर्ती प्रक्रिया में शामिल होने में किसी भी प्रकार की समस्या न हो, इसके लिए सम्बन्धित विभागीय अधिकारियों से समन्वय बनाने को कहा।

ओड़िशा में लगातार तीसरे दिन कोरोना के चार सौ से ज्यादा मामले सामने आए

भुवनेश्वर। ओड़िशा में लगातार तीसरे दिन कोरोना संक्रमण के 400 से अधिक मामले सामने आए हैं।राज्य में पिछले 24 घंटों में इस वायरस से संक्रमित 470 नये मामले सामने आने के बाद संक्रमितों की कुल संख्या बढ़कर 12,92,416 हो गई है। स्वास्थ्य विभाग के सूत्रों ने बताया कि 30 में से 11 जिलों में 470 मामलों में से 276 क्वारंटीन सेंटर और 194 स्थानीय लोगों के संपर्क में आने से संक्रमित हुए हैं। पिछले तीन दिनों में कोरोना संक्रमण के क्रमश-401, 428 और 470 नए मामले सामने आए हैं। राज्य में दैनिक संक्रमण दर पुरी में 8.1, कटक में 8.1 प्रतिशत के बाद खोदरा जिले सर्वाधिक पॉजीटिव दर 10.6 प्रतिशत है। राज्य में प्रतिदिन संक्रमण दर 2.7 फीसदी है। ओडिशा में पिछले 24 घंटो में 218 मरीजों ने कोरोना को मात दी और इसी के साथ इस महमारी से निजात पाने वालों की कुल संख्या बढ़कर 12,80,750 हो गई है।

आबे की हत्या मानवता के लिए बड़ी त्रासदी

नयी दिल्ली। राष्ट्रपति राम नाथ कोविंद ने जापान के पूर्व प्रधानमंत्री शिंजो आबे की हत्या को मानवता के लिए बड़ी त्रासदी करार देते हुए कहा है कि यह भरोसा करना मुश्किल है कि वह अब इस दुनिया में नहीं हैं। श्री कोविंद ने शुक्रवार को अपने शोक संदेश में श्री शिंजो की हत्या को पूरी मानवता के लिए एक बड़ी त्रासदी करार दिया। उन्होंने कहा, मुझे यह विश्वास करना मुश्किल है कि शिंजो आबे अब इस दुनिया में नहीं हैं। वह एक महान देशभक्त थे और उनके मधुर तथा मिलनसार व्यवहार ने उन्हें दुनिया भर में प्रिय बना दिया था। राष्ट्रपति ने कहा, शिंजो आबे का एक सिरफिरे हमलावर की गोली से मारा जाना पूरी मानवता के लिए एक त्रासदी है। मैं उनके परिवार और जापान की जनता के प्रति गहरी संवेदना व्यक्त करता हूं। गौरतलब है कि श्री आबे की शुक्रवार को चुनाव प्रचार करते समय जापान के नारा क्षेत्र में गोली मारकर हत्या कर दी गयी थी।

शिंजो आबे के सम्मान में एक दिन का राष्ट्रीय शोक

नयी दिल्ली। केन्द्र सरकार ने जापान के पूर्व प्रधानमंत्री श्री शिंजो आबे के सम्मान में शनिवार को समूचे देश में एक दिन के राष्ट्रीय शोक की घोषणा की है। गृह मंत्रालय ने शुक्रवार को एक वक्तव्य जारी कर कहा , दिवंगत श्री शिंजो आबे के सम्मान में, भारत सरकार ने निर्णय लिया है कि कल पूरे भारत में एक दिन का राष्ट्रीय शोक होगा। इस दौरान देश भर में सभी जगह पर राष्ट्रीय ध्वज आधे झुके रहेंगे और किसी तरह के आधिकारिक मनोरंजन कार्यक्रम का आयोजन नहीं किया जायेगा। गौरतलब है कि श्री आबे की शुक्रवार को चुनाव प्रचार करते समय जापान के नारा क्षेत्र में गोली मारकर हत्या कर दी गयी थी।

खुले में न करें कुर्बानी , सोशल मीडिया पर न डाले फोटो : इमाम

नयी दिल्ली। नमाज़-ए-जुमा से पहले देश भर की प्रमुख मस्जिदों के इमामों ने खुले में कुर्बानी नहीं करने और जानवरों की कुर्बानी की फोटो सोशल मीडिया पर नहीं डालने की नसीहत दी है। राष्ट्रीय राजधानी और अन्य राज्यों की मस्जिदों के इमामों ने शुक्रवार को एक बयान जारी करके कहा,मुस्लिम समाज कोई ऐसा काम न करे जिससे पूरे मुस्लिम समाज को शर्मिंदगी उठानी पड़े।कुर्बानी सड़कों पर और खुले में न करें, प्रतिबंधित जानवर की कुर्बानी न करें जिससे किसी की भावनाओं को ठेस पहुंचे और देश में सद्भाव कायम रह सके। बयान में कहा गया,बकरीद पर जहां तक मुमकिन हो कुर्बानी करने की कोशिश करनी चाहिए। लेकिन कुर्बानी के जानवर की फोटो और वीडियो सोशल मीडिया पर न डालें। उन्होंने कहा कि सोशल मीडिया पर आने वाली अफवाहों पर ध्यान न दें। बकरीद के दिन कुर्बानी के बाद बचे हुए अवशेषों का सही ढंग से निस्तारण करें ताकि आसपास के क्षेत्रों में गन्दगी और बदबू न फैले। उन्होंने कहा कि किसी भी अप्रिय घटना की सूचना तुरंत नज़दीकी पुलिस को दे। उन्होंने समाज के बड़े बुज़ुर्ग से नौजवानों पर नज़र रखने की भी अपील की। क़ादरी मस्जिद शास्त्री पार्क दिल्ली के इमाम मुफ्ती अशफाक हुसैन क़ादरी, रतलाम के सुन्नी जामा मस्जिद के मुफ्ती बिलाल निजामी, मकराना के मुफ़्ती शम्सुद्दीन बरकाती, हमीरपुर के मौलाना शाहिद मिस्बाही, मिसबाही खतीब तथा इमाम मस्जिदे आला हज़रत निज़ामिया लखनऊ, नागपुर में मौलाना मुस्तफा रज़ा और अमन शहीद जामा मस्जिद के मौलाना तनवीर अहमद और दिल्ली मुस्तफाबाद में मौलाना मुशर्रफ ने बकरीद को लेकर यह बयान जारी किया।

कांग्रेस में 11 विधायकों पर बढ़ी रार

फ्लोर टेस्ट में न पहुंचने वालों पर फिर ऐक्शन की मांग

मुंबई। महाराष्ट्र की सियासत में मची रार थमने का नाम नहीं ले रही है। अब इसकी आंच कांग्रेस विधायकों तक भी पहुंचने लगी है। मुंबई कांग्रेस अध्यक्ष भाई जगताप ने पार्टी हाईकमान से 7 कांग्रेस विधायकों के खिलाफ सख्त कार्रवाई की मांग की है। इन विधायकों पर एमएलसी चुनाव में क्रॉस वोटिंग में शामिल होने का आरोप है। उन्होंने कहा कि कांग्रेस ने इन सात के अलावा उन 11 विधायकों को भी नोटिस जारी की है, जो कि महाराष्ट्र विधानसभा में फ्लोर टेस्ट के दौरान समय पर नहीं पहुंचे थे।

मुंबई कांग्रेस के अध्यक्ष भाई जगताप ने यह बातें विधानपरिषद सदस्यता की शपथ लेने के बाद कहीं। उन्होंने कहा कि आज मैंने शपथ ली है। भाई जगताप ने कहा कि मुझे और भी ज्यादा खुशी होती अगर चंद्रकांत हंडोरे ने भी हमारे साथ जीत हासिल की होती। उन्होंने कहा कि जब तक क्रॉस वोटिंग करने वाले 7 विधायकों पर कार्रवाई नहीं होती है, चंद्रकांत हंडोरे को न्याय नहीं मिलेगा।

बता दें महाराष्ट्र विधानपरिषद के चुनाव में कांग्रेस ने दो प्रत्याशियों को खड़ा किया था। इनमें से एक थे चंद्रकांत हंडारे और दूसरे थे भाई जगताप।

कांग्रेस की तरफ से अपने विधायकों को वोटिंग के लिए निर्देश जारी किए गए थे। सभी विधायकों से कहा गया था कि वह पहली वरीयता का वोट चंद्रकांत और दूसरी वरीयता का वोट भाई जगताप को देंगे। लेकिन वोटिंग के दौरान सात विधायक पार्टी लाइन से अलग चले गए और क्रॉस वोटिंग कर दी। इससे चंद्रकांत हंडारे चुनाव हार गए।

कश्मीर घाटी में बाढ़ सुरक्षा कार्यों को मंजूरी

श्रीनगर। जम्मू-कश्मीर प्रशासनिक परिषद (एसी) ने कश्मीर संभाग में जल शक्ति विभाग द्वारा झेलम बाढ़ सुरक्षा कार्यों को शुक्रवार को प्रशासनिक मंजूरी प्रदान की। उपराज्यपाल मनोज सिन्हा की अध्यक्षता में हुई एसी की बैठक में कश्मीर संभाग में जल शक्ति विभाग द्वारा झेलम बाढ़ सुरक्षा कार्यों को प्रशासनिक स्वीकृति पर सहमति बनी। एसी ने झेलम नदी और उसकी सहायक नदियों, चरण (द्वितीय) भाग (ए) के लिए परियोजना-व्यापक योजना को मंजूरी दी, जिसकी राशि प्रधानमंत्री के विकास पैकेज के तहत 1623.43 करोड़ रुपये है। इस परियोजना की परिकल्पना केंद्रीय जल आयोग के अध्यक्ष की अध्यक्षता में तीन सदस्यीय समूह द्वारा की गई सिफारिशों के आधार पर की गई थी, जिसका गठन भारत के प्रधानमंत्री के निर्देश पर सितंबर 2014 की बाढ़ के तुरंत बाद किया गया था। यह झेलम बेसिन में 1700 क्यूमेक्स के बाढ़ के खतरे को कम करेगा। साठ हजार क्यूसेक के बाढ़ के खतरे को सुरक्षित रूप से कम करने के लिए प्रस्तावित कार्य मौजूदा साइट स्थितियों और संगम के मुख्य झेलम डाउनस्ट्रीम के मुद्दों पर वुलर झील, बाढ़ स्पिल चैनल और सहायक नदियों सहित आउटफॉल चैनल पर आधारित हैं। बाढ़ के पानी के सुरक्षित मार्ग के लिए जल निकासी की भीड़ के मुद्दों से निपटने और जीवन और संपत्ति के नुकसान को कम करने के लिए झेलम नदी, बाढ़ फैल चैनल तथा आउटफॉल चैनल में कमजोर स्थानों पर चैनल सुधार और संरक्षण कार्य प्रस्तावित किया गया है। झेलम नदी और बहिर्वाह चैनलों की वहन क्षमता बढ़ाने के अलावा परियोजना अत्यंत महत्वपूर्ण स्थानों पर प्रस्तावित कटाव-रोधी कार्यों द्वारा सहायक नदियों से गाद इनपुट को भी विनियमित करेगी।

आप के बर्खास्त मंत्री विजय सिंगला को मिली जमानत

चंडीगढ़। भ्रष्टाचार मामले में फंसे पंजाब के पूर्व स्वास्थ्य मंत्री विजय सिंगला को जमानत मिल गई है। शुक्रवार को पंजाब और हरियाणा उच्च न्यायालय ने आम आदमी पार्टी नेता की जमानत मंजूर की। सिंगला को 24 मई को पंजाब की भ्रष्टाचार रोधी शाखा ने गिरफ्तार किया था। गिरफ्तार से पहले ही उन्हें मुख्यमंत्री भगवंत मान ने कैबिनेट से बर्खास्त कर दिया था।

आप नेता सिंगला पर अपने ओएसडी प्रदीप कुमार के जरिए रिश्वत लेने के आरोप लगे थे।

मई में मोहाली के फेज 8 पुलिस स्टेशन में उनके खिलाफ सुप्रीटेंडेंट इंजीनियर रजेंद्र सिंह से रिश्वत मांगने की शिकायत दर्ज हुई थी। FIR के अनुसार, 20 मई को सिंह से 10 लाख रुपये की मांग की गई थी। साथ ही उन्हें आगे होने वाले आवंटन के लिए एक फीसदी कमीशन देने के लिए भी कहा गया था। 10 मार्च को ही पंजाब विधानसभा चुनाव के नतीजे घोषित हुए थे। इसके बाद मई में ही राज्य की आप सरकार की तरफ से यह बड़ी कार्रवाई की गई थी। मुख्यमंत्री कार्यालय की तरफ के मुताबिक, सिंगला ठेकों के लिए अधिकारियों से 1 प्रतिशत दलाली मांग रहे थे। साथ ही सीएमओ ने यह भी कहा था कि सिंगला के खिलाफ मजबूत सबूत मिला है।

अरविंद केजरीवाल ने की थी मान की तारीफ

सिंगला के खिलाफ सरकार की तरफ से की गई कार्रवाई पर दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल ने सीएम मान की तारीफ की थी। उन्होंने ट्वीट किया था, आप पर मुझे गर्व है भगवंत।

आपकी कार्रवाई से मेरी आंखों में आंसू आ गए। आज पूरा देश आप पर गर्व कर रहा है। पंजाब के सीएम ने कहा था कि आप में भ्रष्टाचार के खिलाफ जीरो टोलरेंस पॉलिसी है।

कश्मीर सरकार ने पुलिस भर्ती परीक्षा की रद्द

श्रीनगर। केन्द्र शासित प्रदेश जम्मू-कश्मीर सरकार ने पुलिस सब-इंस्पेक्टर भर्ती परीक्षा रद्द कर दी है और चयन प्रक्रिया में केन्द्रीय जांच ब्यूरो (सीबीआई) से जांच की मांग की है। उपराज्यपाल मनोज सिन्हा ने शुक्रवार को कहा, जम्मू-कश्मीर पुलिस सब-इंस्पेक्टर भर्ती परीक्षा रद्द कर दी गई है और चयन प्रक्रिया में सीबीआई जांच की सिफारिश की गई है। दोषियों को जल्द न्याय के कटघरे में खड़ा किया जाएगा। यह हमारे युवाओं के भविष्य को सुरक्षित करने की दिशा में पहला बड़ा कदम है और सरकार जल्द ही आगामी भर्ती पर विचार करेंगी। श्री सिन्हा ने नौ जून को धोखाधड़ी के आरोप में पुलिस उप-निरीक्षकों की भर्ती की जांच के आदेश दिए थे। जम्मू-कश्मीर सेवा चयन बोर्ड द्वारा चार जून को उप-निरीक्षकों के 1,200 पदों के लिए एक अंतिम सूची घोषित किए जाने के बाद, नाराज उम्मीदवार सड़कों पर उतर आए। प्रदर्शनकारियों ने दावा किया कि 27 परिवारों के के बच्चों ने परीक्षा उत्तीर्ण की है।

यूपी पुलिस की गिरफ्तारी से मोहम्मद जुबैर को मिली राहत

सुप्रीम कोर्ट ने दी अंतरिम जमानत

नई दिल्ली।ऑल्ट न्यूज़ के सह-संस्थापक मोहम्मद जुबैर को उनके खिलाफ यूपी में दायर मामले में सुप्रीम कोर्ट से 5 दिन की अस्थायी राहत मिली है। कोर्ट ने अंतरिम जमानत दे दी है। सुप्रीम कोर्ट ने स्पष्ट किया कि यह आदेश सीतापुर मामले से संबंधित है और जुबैर के खिलाफ किसी अन्य प्राथमिकी में असरदार नहीं होगा। आपको बता दें कि मोहम्मद जुबैर ने सीतापुर में दर्ज एफआईआर में गिरफ्तारी से बचने के लिए याचिका डाली थी।

सुप्रीम कोर्ट ने फैसला सुनाते हुए कहा, जमानत की शर्त यह होगी कि याचिकाकर्ता कोई ट्वीट नहीं करेगा और दिल्ली नहीं छोड़ेगा। जमानत की अन्य शर्तें सीतापुर जिला अदालत तय करेंगी। इलाहाबाद हाई कोर्ट के आदेश को चुनौती देने वाली जुबैर की याचिका पर यूपी पुलिस को नोटिस भी जारी किया गया है।

उत्तर प्रदेश पुलिस की ओर से पेश

हुए एडिशनल सॉलिसिटर जनरल एसवी राजू ने सुप्रीम कोर्ट से कहा कि अगर जुबैर इतने अच्छे इंसान होते तो उन्हें ट्वीट नहीं करना चाहिए था। वह यूपी पुलिस को चिट्ठी लिखते। लेकिन, उन्होंने इस तरह का ट्वीट कर अपराध किया है। अगर उन्हें जमानत मिल जाती है तो वह बेंगलुरु में सबूत नष्ट कर सकते हैं।

दिल्ली से सीतापुर जेल किया गया था शिफ्ट

आपको बता दें कि मो. जुबैर को तिहाड़ जेल से सीतापुर जेल शिफ्ट किया गया था। यहां सीजेएम कोर्ट में उसकी ओर से दाखिल जमानत अर्जी अदालत ने खारिज कर दी थी। पुलिस रिमांड पर अब उनसे पूछताछ की तैयारी चल रही थी।। पुलिस के मुताबिक 16 जुलाई तक रिमांड मिली थी। जुबैर को गुरुवार को भारी सुरक्षा के बीच दिल्ली से ले जाया गया था। दिल्ली पुलिस और सीतापुर पुलिस ने उसे अदालत में पेश किया।

क्या है आरोप?

खैराबाद थाने में एफआईआर संख्या 0226 में 295-ए तथा भारतीय प्रौद्योगिकी संशोधन अधिनियम की धारा 67 के तहत मामला दर्ज है। यह रिपोर्ट राष्ट्रीय हिन्दू शेर सेना के राष्ट्रीय अध्यक्ष भगवान शरण ने 27 मई 2022 को दर्ज कराई थी।

उसमें संतों का अपमान करने और धार्मिक भावनाएं भड़काने व हत्या के लिए उकसाने जैसे आरोप लगाए गए थे। उसी कड़ी में पुलिस जुबैर को तलाश रही थी।

त्रिपुरा में ईद से पहले पशु बलि की अधिसूचना पर विवाद शुरू

अगरतला। त्रिपुरा में रविवार को कुर्बानी का पर्व बकरीद से पहले पशु बलि पर विशेष दिशा-निर्देशों की अधिसूचना जारी होने और अवैध वध एवं उसके परिवहन पर प्रतिबंध को लेकर विवाद खड़ा हो गया है।

वार्षिक बकरीद मनाने से पहले इस तरह के फैसले पर विपक्षी दलों ने तीखी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए प्रशासन से किसी समुदाय या संप्रदाय की धार्मिक प्रथा में हस्तक्षेप नहीं करने का आग्रह किया। विभिन्न सामाजिक-धार्मिक संगठनों ने ईद के दिन राज्य में किसी भी तरह की सांप्रदायिक अराजकता को देखते हुए सुरक्षा कड़ी करने का आग्रह किया।

इस बीच जमीयत उलेमा हिंद के प्रदेश समिति के अध्यक्ष मुफ्ती तैयबुर रहमान ने कहा कि उन्हें कुर्बानी के पर्व पर प्रतिबंधों के बारे में कोई सूचना नहीं मिली है। उन्होंने कहा, हमें ईद के पर्व पर सरकार की ओर से कभी भी किसी भी परेशानी का सामना नहीं करना पड़ा और कुर्बानी इस्लाम पर विश्वास रखने वालों की एक रस्म है। हमने लोगों से अनुरोध किया है कि वे सार्वजनिक स्थानों पर किसी भी पशु का वध न करें, किसी अन्य धर्म की भावना को ठेस न पहुंचायें और साथ ही सभी कचरे को निर्धारित स्थान पर निस्तारित करें।

उन्होंने बताया कि किसी भी समुदाय के धार्मिक त्योहार एक पारंपरिक प्रथा है और विशेष रूप से, ईद खुशी का त्योहार है तथा मानव समाज की भलाई के लिए अल्लाह का रहमत मांगता है। उन्होंने कहा,इसलिए,मुझे आशा है कि धर्मनिरपेक्ष ताने-बाने और दूसरों की धार्मिक आस्था के सम्मान को इस बार भी और हमेशा के लिए बनाए रखना होगा, क्योंकि समाज आधुनिक शिक्षा तथा मूल्यों के साथ आगे बढ़ रहा है।

अधिसूचना के संदर्भ को स्पष्ट करते हुए त्रिपुरा के पशु संसाधन विकास निदेशक डी के चकमा ने कहा कि यह किसी भी तरह से बकरी ईद के जश्न या किसी समुदाय या आस्था को लक्षित करने से संबंधित नहीं है क्योंकि यह पिछले 18 जून को जारी दिशा-निर्देश के आधार पर जारी किया गया था। राष्ट्रीय पशु कल्याण बोर्ड कई न्यायालय के निर्णयों और जानवरों के खिलाफ क्रूरता के खिलाफ मौजूदा कानूनों का पालन करता है।

पूर्व मुख्यमंत्रियों को मिलकर बैठक स्थगित करनी चाहिए : शेखर

पुडुचेरी। केन्द्र शासित प्रदेश पुडुचेरी में अन्नाद्रमुक (पश्चिम) के सचिव ओम शक्ति शेखर ने शुक्रवार को कहा कि अन्नाद्रमुक कार्यकर्ता दोनों पूर्व मुख्यमंत्रियों ओ पनीरसेल्वम (ओपीएस) और ए के पलानीस्वामी (ईपीएस) को पार्टी में चाहते हैं और इन दोनों नेताओं को मिलकर 11 जुलाई को चेन्नई में प्रस्तावित पार्टी की सामान्य परिषद की बैठक को स्थगित करना चाहिए। श्री शेखर ने यहां पत्रकारों से कहा कि पिछली आम परिषद की बैठक के बाद जिला स्तर पर पार्टी का रुख बदल गया है और इसलिए नेताओं को कार्यकर्ताओं और जिला पदाधिकारियों के विचारों का सम्मान करना चाहिए। उन्होंने कहा कि पार्टी में सदस्यों की मांग पर एकल नेतृत्व पर चर्चा करने के लिए बुलाई गई बैठक में वह शामिल नहीं होंगे और यह मुद्दा स्वीकार्य नहीं है।

अन्नाद्रमुक के पूर्व मंत्री कामराज के परिसरों पर डीवीएसी का छापा

एजेंसी

चेन्नई। सतर्कता और भ्रष्टाचार निरोधक निदेशालय (डीवीएसी) के अधिकारियों ने शुक्रवार को अन्नाद्रमुक के पूर्व मंत्री आर. कामराज के परिसरों पर उनकी आय के ज्ञात स्रोतों से अधिक 58.44 करोड़ रुपये की संपत्ति अर्जित करने के आरोप में छापेमारी की।

डीवीएसी सूत्रों ने बताया कि आज सुबह एक साथ 49 जगहों पर छापेमारी की गयी, जिसमें तिरुवरूर जिले में पूर्व मंत्री का के पैतृक मन्नारगुडी स्थित आवासीय और कार्यालय परिसर सहित चेन्नई के छह स्थान शामिल है।

एडप्पादी के. पलानीस्वामी के करीबी नेता श्री कामराज वर्तमान में तिरुवरूर के मौजूदा विधायक हैं। डीवीएसी ने इससे पहले अन्नाद्रमुक सरकार के पूर्व मंत्रियों जैसे एम.आर. विजयभास्कर, सी. विजयभास्कर, एस.पी. वेलुमणि, के.सी. वीरमणि और थगमानी के परिसरों पर छापेमारी की थी। डीवीएसी ने श्री कामराज, उनके दो पुत्र डॉ. एम के एनियान, डॉ. के इनबान तथा आर चंद्रकासन, डी कृष्णमूर्ति और एस उदयकुमार के खिलाफ संबंधित धारा के तहत मामले दर्ज किए जाने के बाद छापे मारे। डॉ. एनियन और डॉ. इनबान दोनों एक हेल्थकेयर फर्म के प्रबंध निदेशक हैं, जबकि चंद्रकासन पूर्व मंत्री के परिवार से संबंधित एक होटल के प्रबंध निदेशक हैं और कृष्णमूर्ति होटल के निदेशकों में से एक हैं।

डीवीएसी द्वारा दर्ज प्राथमिकी के अनुसार श्री कामराज ने अप्रैल 2015 से मार्च 2021 तक मंत्री के रूप में अपने कार्यकाल के दौरान उनके और उनके परिवार के सदस्यों के नाम पर 58.44 करोड़ रुपये की संपत्ति अर्जित की, जो उनकी आय के ज्ञात स्रोतों से अधिक है।

चीन से तिरंगे के आयात से करोड़ों लोगों की रोजी पर सीधा हमला : कांग्रेस

नयी दिल्ली। कांग्रेस ने कहा है कि जिस खादी की प्रशंसा कर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने उसके इस्तेमाल के लिए लोगों का आह्वान किया था अब उनकी सरकार ने उसी खादी ग्रामोद्योग से निर्मित राष्ट्रीय ध्वज तिरंगे की जगह चीन में तैयार पॉलिस्टर के झंडे को आयात करने का निर्णय लिया है और देश के करीब दस करोड़ लोगों की रोजी रोटी पर सीधा हमला हुआ है।

कांग्रेस के सिक्कम, त्रिपुरा एवं नागालैंड के प्रभारी महासचिव डॉ अजय कुमार ने शुक्रवार को यहां पार्टी मुख्यालय में संवाददाता सम्मेलन में कहा कि देश की आजादी की 75वीं वर्षगांठ पर भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) सरकार ने पॉलिस्टर निर्मित राष्ट्रीय ध्वज के निर्माण और आयात की अनुमति देने के लिए भारतीय झंडा संहिता में संशोधन करने का निर्णय लिया है। पॉलिस्टर के तिरंगों का निर्माण चीन से कराया जाएगा या चीन से पॉलिस्टर आयात करके देश में तिरंगों का निर्माण कराया जाएगा और इसका फायदा चीन को होगा।

उन्होंने कहा कि हमारे यहां खादी ग्रामोद्योग तिरंगा बनाता है और इस उद्योग से दस करोड़ से ज्यादा लोगों की रोजी रोटी चलती है। श्री मोदी ने खुद को भारत के खादी उद्योग के संरक्षक के रूप में पेश करते हुए रेडियो पर प्रसारित अपने मासिक कार्यक्रम मन की बात में देशवासियों से खादी उत्पाद खरीदने का आह्वान किया था, लेकिन अब उनकी सरकार मशीन निर्मित और आयातित पॉलिस्टर निर्मित तिरंगे के आयात की अनुमति देकर देश की भावनाओं तथा खादी ग्रामोद्योग से जुड़े दस लाख लोगों के पेट पर हमला कर दिया है।

डॉ. कुमार ने कहा कि मोदी सरकार के इस निर्णय से हजारों श्रमिकों का रोजगार ही नहीं छीना है बल्कि हर घर तिरंगा अभियान का मज़ाक भी उड़ाया है और इसे हर घर में चीन का बना हुआ तिरंगा बनाकर रख दिया है। देश के सरकारी उपक्रमों को बेचने में लगी मोदी सरकार ने अब तिरंगे को भी बेचने का फैसला कर दिया है।

उनका कहना था कि कांग्रेस के लोगों ने तिरंगे के सम्मान के लिए जान दी है और 11 जनवरी 1942 को तिरंगा फहराने के आरोप में अंग्रेजों ने छह देशभक्तों की गोली मारकर हत्या कर दी थी। दूसरी तरफ भाजपा के मातृ संगठन राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) ने हमेशा तिरंगे का अपमान किया है और अपने मुख्यालय पर कभी तिरंगा नहीं लहराया है।

उन्होंने कहा कि तिरंगा को आयात करने का फैसला कर मोदी ससरकार ने दस करोड़ से ज्यादा लोगों के पेट पर सीधा हमला किया है।

जापान की कम्पनियों के एमओयू से राजस्थान में आयेगा 1338 करोड़ रूपये का निवेश : गहलोत

अलवर। राजस्थान के मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने कहा है कि जापान की 11 कम्पनियों से किए गए एमओयू से 1338 करोड़ रूपये का निवेश राज्य में आएगा और जापान एवं राजस्थान के रिश्ते और ऊंचाई पर जाएंगे।

श्री गहलोत गुरूवार को नीमराना स्थित डाईकिन जापानीज इंस्टीट्यूट ऑफ मैन्यूफेक्चरिंग एक्सिलेंस (डीजेआईएमई) में आयोजित एमओयू सेरेमनी को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि राज्य में जापान की कम्पनियों ने प्रमुखता से निवेश किया और जापानी निवेश राजस्थान में उद्यमियों के लिये प्रेरणास्त्रोत रहा है। अब जापान की कम्पनियों को बाड़मेर में बन रहे पैट्रोकैमिकल कॉम्पलैक्स,

इनवेस्ट राजस्थान और स्किल डवलपमेंट सेंटर के निर्माण में निवेश कर एक अध्याय और लिखना चाहिए।

श्री गहलोत ने कहा कि जापानी जोन उद्यमियों में चर्चा का विषय रहता है और जापान की 11 कम्पनियों द्वारा किए गए एमओयू से जापान एवं राजस्थान के रिश्ते और ऊंचाई पर जाएंगे। उन्होंने जापान की कम्पनियों से आह्वान किया कि वे पचपदरा में बन रही रिफाइनरी के पैट्रोकैमिकल कॉम्पलैक्स में भी निवेश करें। ग्रामीण क्षेत्रों के युवाओं को भी रोजगार देने के लिये स्किल डवलपमेंट सेंटर खोलें, इनमें जो भी अपेक्षित सहयोग होगा राज्य सरकार द्वारा दिया जायेगा।

मुख्यमंत्री ने कहा कि भूतपूर्व प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह वर्ष 2005 में जापान यात्रा पर गए थे। इसी दौरान जापानी निवेश, दिल्ली मुम्बई इंडस्ट्रियल कॉरिडोर (डीएमआईसी) एवं फ्रंट कॉरिडोर की भूमिका तैयार हुई थी। नीमराना स्थित जापानीज जोन भी डीएमआईसी का पार्ट है। उन्होनें बताया कि डीएमआईसी राज्य में छह स्थानों पर बनना है। राज्य सरकार की प्राथमिकता है कि सभी स्थानों पर योजनाबद्ध तरीके से काम हो और कॉरिडोर का निर्माण शीघ्र हो।

भीलवाड़ा का शाहपुरा कस्बा कन्हैयालाल हत्याकांड को लेकर रहा बंद

भीलवाड़ा। राजस्थान के भीलवाड़ा जिले का शाहपुरा कस्बा उदयपुर कन्हैयालाल हत्याकांड के आरोपियों को फांसी की सजा देने सहित अन्य मांगों को लेकर आज बंद रहा।

सकल हिन्दू समाज के आह्वान पर विभिन्न हिन्दू संगठन के लोग उपखंड अधिकारी कार्यालय पहुंचे और कन्हैयालाल के चित्र पर पुष्प अर्पित कर उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की गई तथा बाद में ज्ञापन का वाचन किया गया।

ज्ञापन में कन्हैयालाल के हत्यारों को मृत्यु दंड देने, देश में पीएफआई संगठन को प्रतिबंधित करने, राष्ट्रविरोधी असामाजिक तत्वों को चिह्नित कर उनके खिलाफ कार्रवाई करने, मृतक कन्हैयालाल के परिजनों को पांच करोड़ रूपए बतौर मुआवजा देने की मांग की है।

इस मौके पर पूर्व विधानसभा अध्यक्ष एवं शाहपुरा विधायक कैलाश मेघवाल, सकल हिन्दू समाज के संयोजक एडवोकेट दुर्गालाल राजौरा, हिन्दू जागरण मंच के जिला संयोजक हनुमान धाकड़, हिन्दू युवा वाहिनी के प्रदेश उपाध्यक्ष रामेश्वरलाल धाकड़ तथा अन्य जनप्रतिनिधि मौजूद थे। बाद में उपखंड अधिकारी सुनिता यादव को ज्ञापन दिया गया। प्रदर्शन के मद्देनजर अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक चंचल मिश्रा की अगुवाई में अतिरिक्त पुलिस जाब्ता तैनात रहा और प्रदर्शन के दौरान शांति रही।

पुलिस एवं प्रशासन की अनुमति के अभाव में बाजार से मौन जुलूस निकाल कर सामूहिक हनुमान चालीसा का पाठ करने का कार्यक्रम नहीं हो सका। इस मौके श्री मेघवाल ने कहा कि श्री कन्हैयालाल की हत्या की आज समूचा देश निन्दा कर रहा है।

शार्ट न्यूज

विद्यामंदिर क्लासेज ने मनाया अपना 36वां स्थापना दिवस

नई दिल्ली। शिक्षा उद्योग में 36 साल की शानदार यात्रा की शुरुआत, जो 1986 में एक छोटे से छत के कमरे से शुरू हुई थी, अब एक साम्राज्य के लिए, देश भर में 60 केंद्र हैं। अग्रणी विद्यामंदिर क्लासेस ने नीट और अन्य प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी के लिए बेंचमार्क स्थापित किया है, अपना स्थापना दिवस बड़े उत्साह और उत्साह के साथ मनाया। इस दिन ने न केवल विद्यामंदिर क्लासेस (वीएमसी) की शानदार यात्रा का जश्न मनाया, बल्कि उन कर्मचारियों को भी पहचाना और पुरस्कृत किया जो हमेशा एक परिवार रहे हैं और संस्थापकों ने कहा कि उन्हें यह कहते हुए भी गर्व हो रहा है कि वीएमसी में बेजोड़ टीम ने हजारों इंजीनियरों का उत्पादन किया है। पिछले तीन दशक और छात्रों को डॉक्टर बनने के लिए प्रेरित करने का सफर अभी शुरू ही हुआ है। जबकि संस्थापकों को विरासत बनाने के लिए सम्मानित किया गया था, वीएमसी की अकादमिक टीम को उनकी प्रतिबद्धता और छात्रों के सपनों को साकार करने में निरंतर समर्थन के लिए सम्मानित किया गया था। इसके अलावा, श्याम मोहन गुप्ता, सह-संस्थापक, वीएमसी ने 36 वर्षों की शानदार यात्रा को साझा किया, जबकि ृज मोहन और संदीप मेहता ने अपनी हार्दिक कृतज्ञता व्यक्त की। अमेरिका में रहने वाले मनमोहन गुप्ता ने एक अद्भुत वीडियो संदेश भेजा। भव्य कार्यक्रम में दिल्ली के प्रमुख स्कूलों के एमडी ने भाग लिया। हम अपने सभी कर्मचारियों के आभारी हैं जिन्होंने इस यात्रा को अद्भुत और चिरस्थायी बना दिया। बृज मोहन ने कहा वीएमसी हमेशा नवाचार के मामले में कई चीजों को शुरू करने वाला पहला रहा है, हाल ही में समाप्त हुई ग्रैंड मैराथन कक्षाएं जो 100 से अधिक घंटों के लिए आयोजित की गई थीं, इसका एक सफल प्रमाण है। हाल ही में वीएमसी सीयूईटी की तैयारी शुरू करने वाला पहला कोचिंग संस्थान बन गया है, और इस साल जल्द ही विदेश विभाग में वीएमसी अध्ययन शुरू करने की भी घोषणा की है।

दिल्ली महिला आयोग ने 16 साल की लड़की पर हमले के मामले में दिल्ली पुलिस को नोटिस जारी किया है

नई दिल्ली। दिल्ली महिला आयोग ने दिल्ली के तिलक नगर इलाके में 16 साल की लड़की पर हमले के मामले में दिल्ली पुलिस को नोटिस जारी किया है। लड़की की मां ने दिल्ली महिला आयोग में एक शिकायत दर्ज़ करायी जिसमें उन्होंने आयोग को बताया कि वह एक अकेली मां है और उनकी एक 16 साल की बेटी है। उन्होंने बताया कि एक लड़का उनकी बेटी के साथ कोचिंग सेंटर में पढ़ता था और उसे परेशान करता था। उन्होंने बताया कि लड़का लगातार लड़की को अलग-अलग मोबाइल नंबरों से कॉल करके धमकाता था। उन्होंने आरोप लगाया कि उन्होंने लड़के के खिलाफ स्थानीय पुलिस स्टेशन में शिकायत दर्ज कराई थी, मगर पुलिस ने उन्हें मामले में समझौता करने के लिए कहा। लड़की की माँ ने बताया कि 07.07.2022 को लड़के ने उनकी बेटी पर चाकू से हमला कर बेरहमी से कई बार किये। इस समय लड़की अस्पताल में भर्ती है और उसकी हालत नाजुक बनी हुई है। आयोग की अध्यक्षा स्वाति मालीवाल ने मामले पर संज्ञान लेते हुए दिल्ली पुलिस को नोटिस जारी कर मामले में की गई कार्रवाई की रिपोर्ट मांगी है। नोटिस में आयोग की अध्यक्षा ने मामले में दर्ज एफआईआर और की गई गिरफ्तारी का ब्योरा मांगा है। आयोग ने लड़की द्वारा पहले की गयी शिकायत पर भी की गई कार्रवाई का ब्योरा मांगा है। इसके अलावा आयोग ने पहले की शिकायत पर समझौता करने के संबंध में मां द्वारा लगाए गए आरोपों पर की गई किसी भी जांच की जानकारी मांगी है। दिल्ली महिला आयोग की अध्यक्षा स्वाति मालीवाल ने कहा,हमारे सामने एक बहुत ही गंभीर मामला आया है, एक 16 वर्षीय लड़की पर एक लड़के ने चाकू से हमला किया जो एक लंबे समय से लड़की का पीछा कर रहा था और उसे धमका रहा था। लड़की की मां ने आरोप लगाया है कि पुलिस ने उनकी पिछली शिकायत पर समझौता करने को कहा। मैंने दिल्ली पुलिस को नोटिस जारी कर की गयी कार्रवाई की रिपोर्ट मांगी है। इस मामले में कड़ी कार्रवाई की जानी चाहिए और एक मिसाल कायम की जानी चाहिए।

दिल्ली के गांधीनगर में थाने पर पथराव

नई दिल्ली। दिल्ली के यमुनापार के गांधी नगर इलाके में गुरुवार देर शाम बवाल के बाद करीब 20 लोगों को हिरासत में लेकर पूछताछ की जा रही है। पुलिस के अनुसार, पूछताछ में पता चला है कि एक स्थानीय नेता की भड़काऊ बातों से भीड़ बेकाबू हो गई और हाथों में पत्थर लेकर आधे घंटे तक उत्पात मचाया। पुलिस का आरोप है कि कैंडल मार्च निकालने की इजाजत नहीं दिए जाने के बाद भी गुरुवार शाम करीब सात बजे सैकड़ों की तादात में लोग कैंडल मार्च निकालने के लिए इकट्ठा हुए। पुलिस ने उन्हें समझाया कि हत्यारे को गिरफ्तार कर लिया गया है और मार्च की इजाजत भी नहीं दी गई है। मना करने और सख्ती दिखाने से लोग हिंसक हो गए और थाने पर पथराव कर दिया।

ज़नेस ब्लास्टर्स के फाइनलिस्ट स्टूडेंट्स को दिल्ली सरकार के टॉप यूनिवर्सिटीज में सीधे एडमिशन देगी केजरीवाल सरकार

400+ स्टूडेंट्स के लिए आयोजित किया ओरिएंटेशन प्रोग्राम

प्रफुल्ल राय गौरवशाली भारत

नई दिल्ली। केजरीवाल सरकार का बिज़नेस ब्लास्टर्स प्रोग्राम सुपरहिट साबित हुआ और इसने पूरे देश में एंत्रप्रेन्योरशिप को चर्चा का विषय बना दिया। इस प्रोग्राम की शुरुआत में केजरीवाल सरकार द्वारा दिल्ली सरकर के एनएसयूटी, डीएसईयू, अम्बेडकर यूनिवर्सिटी सहित अन्य शीर्ष विश्वविद्यालयों में बिज़नेस ब्लास्टर्स प्रोग्राम के फाइनलिस्ट टीमों के सदस्यों को सीधे एडमिशन की बात कही गई थी। इस दिशा में एक और कदम बढ़ाते हुए दिल्ली सरकार के शीर्ष विश्वविद्यालयों ने शुक्रवार को बिज़नेस ब्लास्टर्स के 126 फाइनल टीमों 400+ स्टूडेंट्स एंत्रप्रेन्योर्स के लिए संयुक्त रूप

से एक नेताजी सुभाष यूनिवर्सिटी ऑफ़ टेक्नोलॉजी में एक ओरिएंटेशन प्रोग्राम का आयोजन किया। इस मौके पर उपमुख्यमंत्री व शिक्षा मंत्री श्री मनीष सिसोदिया ने कहा कि यह भारत के इतिहास में पहली बार है कि किसी स्थान पर 400 स्टूडेंट्स बैठे हैं और राज्य के टॉप 5 विश्वविद्यालयों के उपकुलपति सीधे उन स्टूडेंट्स को अपने संस्थानों में एडमिशन देने के लिए बात कर रहे है। जो चीजे कभी आईआईटी, आईआईएम, हार्वर्ड या एमआईटी जैसे संस्थाओं में संभव नहीं हो पाई, उसे दिल्ली सरकार के स्कूलों के स्टूडेंट्स ने अपनी मेहनत के दम पर संभव कर दिखाया है। जो पढ़ाई के अपने कन्वेंशनल तरीके से दूर जाते हुए एंत्रप्रेन्योर माइंडसेट डेवेलोप कर अपना खुद का व्यवसाय स्थापित कर चुके हैं। ज्ञात हो कि बिज़नेस ब्लास्टर्स कार्यक्रम 60 करोड़ रूपये की सीड मनी, 3 लाख बच्चे व 51,000+ बिज़नेस आइडियाज के साथ विश्व का सबसे बड़ा स्कूल एंत्रप्रेन्योरशिप प्रोग्राम रहा7 यहां विभिन्न स्तर पर शार्टलिस्टेड होते-होते 126 टीमों के 774 स्टूडेंट्स फाइनलिस्ट रहें। इन 774 स्टूडेंट्स में से 416 स्टूडेंट्स 12 वीं कक्षा में थे, जो इस साल स्कूल से पास हो जाएंगे। इन स्टूडेंट्स को दिल्ली के कुछ शीर्ष विश्वविद्यालयों में सीधे प्रवेश पाने का विकल्प दिया जा रहा है, जिनमें NSUT, DTU, IGDTUW, DSEU, DPSRU, अम्बेडकर और IIIT-D शामिल हैं।सिसोदिया ने कहा कि स्कूली शिक्षा के बाद अब उच्च शिक्षा के लिए हमारे बिजनेस ब्लास्टर्स की यात्रा बहुत महत्वपूर्ण है क्योंकि स्टूडेंट्स अब जो भी कदम उठाएंगे उसका असर देश की अर्थव्यवस्था पर पड़ेगा।

उन्होंने कहा कि हर दौर की अपनी एक जरुरत रही है, ऐसे भी दौर रहे है जब स्कूलों में बच्चों को सैन्य ट्रेनिंग दी गई क्योंकि वो उस दौर की जरुरत थी7 लेकिन वर्तमान में भारत के सन्दर्भ में हमें अपने स्कूलों में बच्चों के अंदर एंत्रप्रेन्योरशिप माइंडसेट विकसित कर रहे है क्योंकि देश की अर्थव्यवस्था को अव्वल बनाने और बेरोजगारी की समस्या को दूर करने के लिए ये इस दौर की जरुरत है।

दिल्ली में 12वीं कक्षा की लड़की को चाकू घोंपने के मामले में सह आरोपी भी गिरफ्तार

नई दिल्ली। पश्चिमी दिल्ली के तिलक नगर क्षेत्र में 12वीं कक्षा में पढ़ने वाली लड़की को चाकू घोंपने के मामले में पुलिस ने सह-आरोपी को भी गिरफ्तार कर लिया है। अधिकारियों ने शुक्रवार को यह जानकारी दी। पुलिस ने बताया कि बृहस्पतिवार को तिलक नगर में 17 वर्षीय लड़की को चाकू घोंपकर 22 साल के एक युवक ने घायल कर दिया था। एक झगड़े के बाद वह उसे कई सप्ताह से परेशान कर रहा था। आरोपी शिवम को घटना के दिन ही गिरफ्तार कर लिया गया था। पुलिस उपायुक्त (पश्चिम) घनश्याम बंसल ने कहा कि सह-आरोपी शगुन (20) को भी गिरफ्तार कर लिया गया है जो तिलक नगर की रहने वाली है और उसने अपराध करने के बाद शिवम को फरार होने में मदद की। पुलिस ने बताया कि शिवम और पीड़िता का घर तिलक नगर में एक दूसरे के नजदीक है और दोनों के बीच गत दो-तीन साल से दोस्ती है।

दिल्ली के होलंबी कलां में बनेगा देश का पहला ई-कचरा ईको पार्क

नई दिल्ली। दिल्ली के होलंबी कलां में 12 एकड़ भूमि में भारत का पहला ई-कचरा ईको पार्क बनेगा। यह पार्क लगभग 23 महीने में बनकर तैयार हो जाएगा। दिल्ली के पर्यावरण मंत्री गोपाल राय ने शुक्रवार को एक ई-कचरा ईको पार्क के निर्माण को लेकर पर्यावरण विभाग और दिल्ली प्रदूषण नियंत्रण समिति के अधिकारियों के साथ एक संयुक्त समीक्षा बैठक की।

राय ने कहा कि भारत का पहला ई-कचरा ईको पार्क दिल्ली के होलंबी कलां में बनेगा और यह 12 एकड़ भूमि में फैला होगा। उन्होंने कहा कि परियोजना के लिए 11 सदस्यीय संचालन समिति का गठन किया गया है और दिल्ली राज्य औद्योगिक एवं बुनियादी ढांचा विकास निगम (डीएसआईआईडीसी) को इसकी क्रियान्वयन एजेंसी बनाया गया है। गोपाल राय के मुताबिक, ईको पार्क का निर्माण तेजी से पूरा करने के लिए संबंधित एजेंसी को जल्द से जल्द एक सलाहकार नियुक्त करने का निर्देश दिया गया है। उन्होंने बताया कि दिल्ली में हर साल दो लाख टन से ज्यादा ई-कचरा पैदा होता है, जो देशभर में उत्पादित कुल ई-कचरे का लगभग 9.5 फीसदी हिस्सा है। राष्ट्रीय राजधानी में पैदा महज पांच फीसदी ई-कचरे को ही ठीक तरीके से रिसाइकिल किया जाता है। राय ने कहा कि ई-कचरा ईको पार्क से हमारा अभिप्राय एक ऐसी जगह की स्थापना है, जहां ई-कचरे को इस तरह से तोड़ा, नवीनीकृत, रिसाइकिल और नई वस्तु में ढाला जाता है, जो विज्ञान और पर्यावरण के अनुकूल हो। उन्होंने कहा कि ई-कचरा ईको पार्क के निर्माण का फैसला इस तथ्य के मद्देनजर किया गया है कि दिल्ली भारत में महाराष्ट्र, तमिलनाडु, उत्तर प्रदेश और पश्चिम बंगाल के बाद ई-कचरा की पांचवीं सबसे बड़ी उत्पादक है।

उपमुख्यमंत्री व पीडब्ल्यूडी मंत्री मनीष सिसोदिया ने केन्द्रीय रेल मंत्री अश्विनी वैष्णव को लिखी चिट्ठी

ज़खीरा अंडरपास पर होने वाले जलजमाव पर रेलवे द्वारा नहीं लिया जा रहा संज्ञान, की हस्तक्षेप की मांग

आनंद राय गौरवशाली भारत

नई दिल्ली। ज़खीरा अंडरपास में मानसून के दौरान होने वाले जलजमाव के कारण यहां से आवाजाही करने वाले लोगों को समस्याओं का सामना करना पड़ता है। दिल्ली सरकार द्वारा यहां जलजमाव की समस्या से निजात पाने के लिए कई कदम उठाएं वहां मौजूद रेलवे लाइन से गिरने वाले कचरे और रेलवे के नाले की डी-सिल्टिंग न होने के कारण सारा कचरा पानी में बहकर अंडरपास में आ जाता है और यहां मौजूद पम्पों को जाम कर देता है जिस कारण यहां जलजमाव की समस्या उत्पन्न हो जाती है। इस बाबत 20 जून 2022 में दिल्ली सरकार के पीडब्ल्यूडी के प्रधान सचिव की अध्यक्षता में रेलवे सहित अन्य एजेंसी के अधिकारियों के साथ बैठक की हुई7 बैठक में प्रधान सचिव, पीडब्ल्यूडी ने रेलवे के अधिकारियों से रेलवे द्वारा डाउनस्ट्रीम पाइप का आकार बढ़ाने,रेलवे जमीन की जमीन पर मौजूद कचरे को हटाने, रेलवे द्वारा बिछाई गई पुलिया और पाइप ड्रेन की डिसिल्टिंग करवाने के साथ-साथ रेलवे की जमीन पर से अतिक्रमण और अनाधिकृत व्यावसायिक गतिविधियों को हटाने का आग्रह किया।

अब जब मानसून की शुरुआत हो चुकी है और कई प्रयासों के बावजूद रेलवे के अधिकारियों द्वारा इन मुद्दों पर कोई कदम नहीं उठाया गया है तो इस बाबत उपमुख्यमंत्री व पीडब्ल्यूडी मंत्री मनीष सिसोदिया ने केन्द्रीय रेल मंत्री अश्विनी वैष्णव को चिट्ठी लिख इस समस्या से अवगत करवाया तथा इस मामले में उनके हस्तक्षेप की मांग की ताकि समस्याओं को दूर कर मानसून के दौरान यहां होने वाले जलजमाव की समस्या से बचा जा सकें। श्री सिसोदिया ने रेल मंत्री को लिखा कि ज़खीरा अंडरपास पर मानसून के दौरान होने वाला जलजमाव एक गंभीर समस्या है। मानसून के दौरान यहां लोगों को बहुत समस्या होती है और कई बार तो ये लोगों के लिए बेहद खतरनाक साबित होता है। इस समस्या का समाधान करने के लिए दिल्ली सरकार के पीडब्ल्यूडी विभाग ने रेलवे सहित अन्य स्टेकहोल्डर्स के साथ इसपर चर्चा की।

श्री सिसोदिया ने लिखा कि, इस समस्या को लेकर 20 जून को पीडब्ल्यूडी तथा रेलवे कर अधिकारियों की बैठक हुई तथा रेलवे से डाउनस्ट्रीम पाइप का आकार बढ़ाने, रेलवे द्वारा बिछाई गई पुलिया की डिसिल्टिंग करवाने, रेलवे जमीन की जमीन पर मौजूद कचरे व अतिक्रमण हटाने आदि के लिए शीघ्र कार्रवाई करने की मांग की गई। उन्होंने केन्द्रीय रेलवे मंत्री से इस मामले पर हस्तक्षेप कर इस मामले पर त्वरित करवाई की मांग की ताकि बरसात के दिनों में आम जनता को किसी भी प्रकार की समस्या का सामना न करना पड़ें।

केजरीवाल पिछले सात सालों से विकास के नाम पर दिल्लीवालों को मुंगेरी लाल के सपने दिखाते रहे हैं : आदेश गुप्ता

दिल्ली की सड़कों पर गढ्ढें होने के कारण आए दिन दुर्घटनाएं होती रहती हैं : आदेश गुप्ता

विवेक राय गौरवशाली भारत

नई दिल्ली। भारतीय जनता पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष श्री आदेश गुप्ता ने कहा कि मुख्यमंत्री केजरीवाल के खोखले वायदों की तरह ही दिल्ली की सड़कें भी खोखली हो चुकी हैं। पिछले सात सालों से दिल्ली की जनता को मुंगेरी लाल के सपने दिखाने वाले केजरीवाल का हर वायदा कोरे पन्नों की तरह है जिसपर जो चाहे वह बड़े- बड़े वायदें लिखे तो जाते हैं लेकिन उसे जब पूरा करने की बात आती है तो दिल्ली की जनता को हमेशा निराशा ही हाथ लगती है। केजरीवाल सरकार के सड़कों को लेकर सप्ताहिक प्लान पर तीखी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए श्री आदेश गुप्ता ने कहा कि पिछले सात सालों में केजरीवाल सरकार ने दिल्ली के विकास की रुपरेखा तैयार कर रही है, लेकिन जब इस पर काम करने की बात आती है तो परिणाम शून्य हो जाता है। आज दिल्ली की सड़कों को पेरिस-लंदन जैसी सड़क बनाने की बात करने वाले केजरीवाल सात साल पहले भी दिल्ली की सड़कों को सर्फ से धोने की बात कर रहे थे लेकिन आज तक क्या हुआ यह दिल्लीवालों को पता है। उन्होंने कहा कि सड़कों पर कोई ध्यान नहीं दिया गया। यही कारण है कि दिल्ली की ऐसे तमाम क्षेत्रों की सड़कों के बीच में गड्ढा बना पड़ा है जिसमें आए दिन कोई न कोई दुर्घटनाएं होती रहती हैं। आदेश गुप्ता ने कहा कि अरविंद केजरीवाल सत्ता में आने के बाद दिल्ली की जनता को सिर्फ वायदों का सब्जबाग दिखाते रहे हैं लेकिन उनका कोई भी वायदा चाहे वह वाईफाई हो, कैमरे लगाना हो, युवाओं को रोजगार देना हो, बस खरीदना हो, घर-घर नल से जल देना हो या फिर अन्य कोई भी वायदा हो, सभी में वे फिसड्डी साबित हुए हैं। उन्होंने कहा कि आज दिल्ली की जनता खुद को ठगा हुआ महसूस कर रही है क्योंकि जब भी केजरीवाल वायदा करते हैं तो दिल्लीवालों की उम्मीद जगती है लेकिन उस उम्मीद को हमेशा तोड़ने का काम केजरीवाल ने किया है। गुप्ता ने कहा कि 39 ऐसे ही योजनाएं केजरीवाल ने शुरु करने की बात कही लेकिन उनमें से एक भी योजना शुरु तक नहीं हो पाई। आज दिल्ली की सड़कों पर सीवर का गंदा पानी बहता रहता है। मानसून अभी पूरी तरह से आया नहीं, लेकिन उसकी पहली बारिश पड़ते ही दिल्ली की सड़कें जलमग्न हो गई थी, जो केजरीवाल सरकार की तैयारियों की पोल खोलने के लिए काफी थी। सीवर का गंदा पानी बिमारियों का सबब बना हुआ है।

शालीमार बाग में एक 80 वर्षीय बुजुर्ग महिला की गला रेतकर हत्या

नई दिल्ली। उत्तर पश्चिमी दिल्ली के शालीमार बाग में अज्ञात हमलावरों ने एक 80 वर्षीय महिला की उसके घर पर हत्या कर दी। इस बात की जानकारी पुलिस ने शुक्रवार को दी। पुलिस ने कहा कि हत्या की जानकारी पुलिस कंट्रोल रूम को शुक्रवार सुबह करीब 11 बजे एक कॉल के जरिए मिली और इसे शालीमार बाग थाने में ट्रांसफर कर दिया गया।

पुलिस उपायुक्त (उत्तर पश्चिम) उषा रंगनानी ने बताया कि हत्या बीएस प्रखंड में हुई। महिला बिस्तर पर पड़ी मिली और उसका गला कटा हुआ था। हालांकि, अभी तक हत्या के पीछे के सही मकसद का पता नहीं चल पाया है। पुलिस ने कहा कि लूट की संभावना नहीं थी क्योंकि महिला के गहने वहीं हैं और तोड़फोड़ के कोई संकेत नहीं मिले थे। डीसीपी रंगनानी ने कहा, घर में अन्य घरेलू सामान भी मिला हुआ था। गर्दन पर कटे घाव के अलावा कोई अन्य चोट स्पष्ट रूप से दिखाई नहीं दे रही थी।

पुलिस ने कहा कि उन्होंने शालीमार बाग पुलिस स्टेशन में भारतीय दंड संहिता की धारा 302 के तहत हत्या का मामला दर्ज किया है। मामले की जांच संदिग्धों की पहचान करने और उन्हें जल्द से जल्द गिरफ्तार करने के लिए पुलिस थाने की टीम का गठन किया गया है।

डीसीपी रंगनानी ने कहा, संदिग्धों के बारे में सुराग के लिए महिला के घर के आसपास लगे सीसीटीवी कैमरों की जांच की जा रही है।

16 से 22 अगस्त तक जंतर मंतर पर होगा रोजगार आंदोलन

रोजगार संसद मे आये दिल्ली के 500 से अधिक प्रमुख संगठन

नई दिल्ली। बेरोजगारी के खिलाफ राष्ट्रीय आन्दोलन की रूपरेखा को लेकर एक दिवसीय रोजगार संसद दिल्ली विश्वविद्यालय के शंकरलाल कॉन्सर्ट हॉल मे हुआ, जिसमे निर्णय लिया गया की 16-22 अगस्त को होगा बेरोजगारी के खिलाफ राष्ट्रीय रोजगार आन्दोलन। देश की बात फाउंडेशन के आह्वान पर संयुक्त रोजगार आंदोलन समिति के बैनर तले आज दिल्ली विश्वविद्यालय में स्तिथ शंकर लाल कॉन्सर्ट हॉल में रोजगार संसद का आयोजन हुआ। एक दिवसीय रोजगार संसद में दिल्ली के 500 से अधिक प्रमुख छात्र संगठन, युवा संगठन, महिला संगठन, शिक्षक संगठन, ट्रेड यूनियन, किसान यूनियन, NGO's आदि संगठनों के सदस्यों ने भाग लिया। दिल्ली विश्वविद्यालय से प्रोफेसर नरेंद्र पांडेय ने अध्यक्षता की और साथ ही प्रवक्ता रहें कृष्णा यादव (देश की बात फाउंडेशन, सेंट्रल कोआर्डिनेशन इंचार्ज), भानु भारतीय (सेंट्रल कोऑर्डिनेटर, देश की बात फाउंडेशन), गुलेश जैनर (श्रमिक विकास संगठन, दिल्ली अध्यक्ष), आइशी घोष , शुभाशु पूर्व सचिव), रोहित लाकर (प्रभारी युथ विंग), रवि पांडेय , डॉ हंसराज सुमन प्रभारी), केदारनाथ (नॉन टीचिंग स्टाफ) ,नयन , अभिषेक (स्व्नद्ध दिल्ली एग्जीक्यूटिव), रविंद्र सिंह तोमर (मानव अधिकार एवं सामाजिक न्याय संगठन), खालिद रजा खां(पहल दृष्टि , राष्ट्रीय भवन निर्माण मजदूर संघ), मनोज क्रन्तिकारी (बेरोजगारी मुक्ति क्रांति सेना, प्रेजिडेंट), ऋषिपाल अम्बावत (भारतीय किसान यूनियन, प्रेजिडेंट), अमित सांगवान (संयुक्त किसान मोर्चा, लीगल सेल कन्वेनर), फारुख खां (उमंग एक नयी उड़ान)।

मुख्य अतिथि रहे श्री गोपाल राय ने कहा कि देश में दो तरह का संघर्ष चल रहा है, एक सत्ता के लिए संघर्ष और दूसरा बेरोजगारी का संघर्ष। जब ईस्ट इंडिया कंपनी आयी तो 1857 में झाँसी की रानी ने माँ भारती के लिए तलवार उठायी ।

सांसद खेल महोत्सव में रोहतास नगर रेंजर्स और सीलमपुर रेंजर्स ने अपने अपने मैच जीते

नई दिल्ली। सांसद मनोज तिवारी द्वारा आयोजित खेल महोत्सव के चौथे दिन आज डिस्ट्रिक्ट पार्क नंद नगरी के खेल मैदान पर सीलमपुर रेंजर्स एवं पुलिस पैंथरस और शाम को रोहतास नगर रेंजर्स एवं घोंडा लायंस के बीच टी20 क्रिकेट मैच खेले गए इस अवसर पर खिलाड़ियों का हौसला बढ़ाने के लिए सांसद मनोज तिवारी के साथ उत्तर पूर्वी दिल्ली के पुलिस उपायुक्त संजय सेन एवं आईएएस अकैडमी के सीएमडी बालेंद्र सिंह अभिनेता राहुल बूचर मुख्य अतिथि के रूप में खेल के मैदान पर पहुंचे इस अवसर पर वरिष्ठ भाजपा नेता डॉ अनिल गुप्ता विधायक अजय महावर जितेंद्र महाजन प्रदेश प्रवक्ता बृजेश राय पूर्व निगम पार्षद प्रवेश शर्मा प्रमोद गुप्ता सुरजन उत्तर पूर्वी जिले के मोहन गोयल उपाध्यक्ष आनंद त्रिवेदी सचिन मावी ठाकुर बृजेश सिंह महामंत्री डॉ यूके चौधरी नवीन शाहदरा जिला के उपाध्यक्ष आशीष तिवारी भाजपा नेता विकास त्यागी संजीव कुमार मित्तल धरमवीर नागर आयोजन कमेटी के पदाधिकारी तेज प्रकाश गंगाराम माहोर अश्वनी शर्मा आरडी शर्मा कई गणमान्य लोग मौजूद रहे। इस अवसर पर मौजूद खिलाड़ियों एवं दर्शकों को संबोधित करते हुए सांसद मनोज तिवारी ने कहा कि खेल महोत्सव के ऐसे अतिथियों का आगमन हो रहा है जो दिल्ली के निर्माण में निर्णायक भूमिका निभा सकते हैं और मेरा प्रयास है कि खेल प्रतिभाओं के विकास के साथ ही क्षेत्र के विकास की राह भी निकले उन्होंने कहा कि अगर क्षेत्र के युवा नशा छोड़ कर खेल को अपना लें तो सच्चे मायने में महोत्सव का उद्देश्य सफल हो जाएगा इस खेल महोत्सव के साथ साथ क्षेत्र के लोग जागरूक हो रहे हैं और अपनी जिम्मेदारी और दिल्ली के निर्माण में अपनी भागीदारी को समझ रहे हैं।अपने संबोधन में पुलिस उपायुक्त संजय सेन ने कहा कि सांसद मनोज तिवारी लोकप्रिय सांसद हैं जिसकी परिभाषा जन जन की भावनाओं को समझने वाला व्यक्ति होता है और नंद नगरी में आयोजन से उन्होंने यह साबित कर दिया है माननीय प्रधानमंत्री जी के विजन हर क्षेत्र को विकसित करने के साथ-साथ जागरुक भी करना चाहते हैं क्योंकि जब मैं नंद नगरी में आता हूं तो नेगेटिव छवि मेरे सामने प्रस्तुत की जाती है लेकिन आज बदले माहौल से साबित हो गया है नंद नगरी को भी आदर्श बनाया जा सकता है जरूरत नेक नियत से किए गए प्रयास की उन्होंने उपस्थित बच्चों से खेल के साथ-साथ आने वाले अतिथियों से सीख लेकर एक कामयाब इंसान जीवन बनने का आह्वान किया। आज सुबह के मैच में मुकाबला सीलमपुर रेंजर्स और दिल्ली पुलिस पैंथरस की टीम के बीच हुआ सीलमपुर रेंजर्स की टीम ने टॉस जीता और पहले बल्लेबाजी करते हुए निर्धारित 20 ओवर में 191 रन बनाए और दिल्ली पुलिस पैंथरस के सामने 192 रनों का लक्ष्य रखा लक्ष्य का पीछा करते हुए दिल्ली पुलिस पैंथरस के सभी खिलाड़ी 17 ओवर में 135 रन ही बना सके और यह मैच सीलमपुर रेंजर्स की टीम ने 57 रन से जीत लिया।

दिल्ली को क्राइम सिटी बनने से रोकने की बजाय 'आप' को बदनाम करने में व्यस्त भाजपा की दिल्ली पुलिस और नए उपराज्यपाल

भाजपा की दिल्ली पुलिस के नेतृत्व में पिछले वर्ष की तुलना में इस वर्ष अपराधों के मामलों में 15 प्रतिशत की बढ़ोतरी : दुर्गेश पाठक

नई दिल्ली। आप विधायक दुर्गेश पाठक ने कहा कि दिल्ली को क्राइम सिटी बनने से रोकने की बजाय आप को बदनाम करने में व्यस्त भाजपा की दिल्ली पुलिस और नए उपराज्यपाल। भाजपा की दिल्ली पुलिस के नेतृत्व में पिछले वर्ष की तुलना में इस वर्ष अपराधों के मामलों में 15त्न की बढ़ोतरी हुई है। भाजपा की दिल्ली पुलिस पर जनता का भरोसा कम हो रहा लेकिन एलजी साहब यह सोचने में व्यस्त हैं कि दिल्ली सरकार के कामों को किस प्रकार से रोका जाए। दिल्ली के एलजी से गुजारिश करते हुए दुर्गेश पाठक ने कहा कि राजनीति छोड़ दिल्ली सरकार के साथ मिलकर दिल्लीवालों के लिए काम करें। दिल्ली सरकार आपका पूरा सहयोग करेगी।

आम आदमी पार्टी से राजेंद्र नगर के विधायक एवं एमसीडी प्रभारी दुर्गेश पाठक ने शुक्रवार को पार्टी मुख्यालय में एक महत्वपूर्ण प्रेसवार्ता को संबोधित करते हुए कहा कि आजकल जब सुबह का अखबार पढ़ता हूं तो दिल्ली की कानून व्यवस्था को देखकर भयभीत हो जाता हूं। दिल्ली में प्रतिदिन भयावह अपराध हो रहे हैं लेकिन इसको रोकने के लिए कोई कदम नहीं उठाया जा रहा है। आज एक 12 साल की लड़की की चाकू से गोदकर हत्या

की कोशिश की गई। बच्ची की हालत गंभीर है।

उन्होंने कहा कि 7 जुलाई को तिलक विहार इलाके में वह बच्ची स्कूल जा रही थी। उसी दौरान उसके पड़ोसी ने उसपर चाकू से हमला कर दिया। वहीं, सोनिया विहार इलाके में एक साधु को पीट-पीटकर मार दिया गया। 6 जुलाई को एक 27 वर्षीय लड़के ने पटेल नगर क्षेत्र में ओपन फायर किया। दिल्ली के वेलकम एरिया में एक व्यक्ति ने अपनी पूर्व पत्नी पर ब्लेड और चाकू से कई बार हमला किया। उसकी हालत नाजुक है। 4 जुलाई को एक 7 वर्षीय बच्ची के साथ दुष्कर्म हुआ। 2 जुलाई को पश्चिम विहार इलाके में एक बिल्डर को गोली मारकर हत्या कर दी गई। उसी दिन 2 बाइक सवार ने एक व्यक्ति को गोली मारकर हत्या कर दी। 1 जुलाई को 22 वर्षीय महिला का बलात्कार करने के बाद हत्या कर दी गई।

दुर्गेश पाठक ने कहा कि दिल्ली में भारतीय जनता पार्टी की पुलिस की कानून व्यवस्था इतनी खराब हो चुकी है कि पिछले वर्ष की तुलना में इस वर्ष अपराध की वारदातों में 15 प्रतिशत की बढ़ोतरी हुई है। 2021 और 2022 के शुरुआती 6 महीनों के आंकड़े देखें तो 2021 में चोरी के 2302 मामले तो इस साल 9450 मामले देखने को मिले। पिछले साल हत्या की कोशिश के 296 मामले तो इस साल 418 मामले देखने को मिले। स्नैचिंग के मामले पिछले साल 4124 रहे तो इस साल 4660 मामले हुए। मर्डर के मामले पिछले साल 214 थे तो इस साल 253 मामले हुए। डकैती के मामले पिछले साल 1014 थे तो इस साल 1161 मामले हुए हैं।

भाजपा की दिल्ली पुलिस के नेतृत्व में धीरे-धीरे दिल्ली एक क्राइम सिटी बनती जा रही है। देश की सभी मेट्रो सिटीज की तुलना में दिल्ली में बलात्कार के 40 प्रतिशत अधिक मामले होते हैं। अटेंप्ट-टू-मर्डर के 25 प्रतिशत अधिक मामले देखने को मिलते हैं। इन सभी घटनाओं को देखकर दिल्लीवासी डरे हुए हैं। दिल्ली पुलिस इन सब मामलों की रोकथाम करने के बजाय आम आदमी पार्टी के नेताओं पर अनाप-शनाप आरोपों में फंसाकर उन्हें जेल भेजने की कोशिश में लगी रहती है। दिल्ली पुलिस सिर्फ और सिर्फ भाजपा के नेताओं की सुरक्षा में व्यस्त रहती है। दिल्ली पुलिस के हेड यानी कि दिल्ली के नए एलजी साहब सिर्फ और सिर्फ आम आदमी पार्टी के कामों में हस्तक्षेप करने का काम कर रहे हैं। 22 मई को उनकी ड्यूटी की शुरुआत हुई और उसी दिन उन्होंने 40 अधिकारियों को ट्रांसफर कर दिया। इसके लिए न तो उन्होंने दिल्ली सरकार के साथ चर्चा की और न ही स्टैंडिंग कॉउंसिल से कोई बात की।

उन्होंने कहा कि एलजी साहब के लगातार हस्तक्षेप के कारण दिल्ली की बसों की खरीद में समस्या आ रही है। यहां तक कि उन्होंने डोर-स्टेप राशन डिलीवरी भी रोक दी। हर दिन दिल्ली के अधिकारियों को बुलाकर धमकाते हैं। अभी सिंगापुर की सरकार ने दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल जी को आमंत्रित कि आप आएं और बताएं कि आप ने दिल्ली में बड़े बड़े बदलाव किए हैं। केजरीवाल सिंगापुर जाकर कहीं देश के पक्ष में कोई बात ना कर दे इसलिए एलजी साहब ने अभी तक उसकी फाइल रोक रखी है।

संपादकीय

आईटी पेशेवरों के नौकरी छोड़ते रहने की वजह समझिए

अब देश की सभी प्रमुख आईटी कंपनियां अपने मार्च-जून तिमाही के नतीजों का ऐलान करना चालू कर देंगी। यह भी तय है कि करीब-करीब सभी के मुनाफे और कुल जमा कारोबार में निश्चित वृद्धि होगी। कोरोना काल के बाद सभी भारतीय आईटी कंपनियां अब अपनी पूरी क्षमताओं के साथ काम कर रही हैं। उन्हें देश-विदेश से नए-नए आर्डर भी मिल रहे हैं। ये सभी भारतीय आई.टी. कम्पनियां कोरोना काल में आई सुस्ती की भरपाई करने में लगी हुई हैं। कोरोना के दौर में सभी क्षेत्रों में काम की रफ्तार प्रभावित हुई थी। पर अब कोरोना के भय को कारोबारी दुनिया पीछे छोड़ते हुए तेजी से आगे बढ़ रही है।

अब ठोस संकेत मिल रहे हैं कि भारत की चार सबसे प्रमुख आई टी सेक्टर की कंपनियां क्रमशः टाटा कंसलटेंसी सर्विसेज (टीसीएस), इंफोसिस, विप्रो और एचसीएल टेक्नोलॉजी जब अपने नतीजे घोषित करेंगी तो वे यह भी बताएंगी उनके कितने पेशेवरों ने बीते मार्च-जून, 2022 के दौरान अपनी कंपनियों को छोड़ा। यह जानकारी तो सभी कंपनियां अपने नतीजों की घोषणा करते हुए सामान्य रूप से बताती ही हैं। वे यह भी बताती हैं कि उनके साथ कितने नए पेशेवरों ने अपने को उनकी कंपनी से जोड़ा। पर इस बार माना जा रहा है कि देश की प्रमुख आईटी कंपनियों से औसत 17 से 27 फीसद पेशेवरों ने अन्य कंपनियों का रुख कर लिया है। जाहिर है कि अगर यही आकड़ा सामने भी आया तो ये काफी बड़ा आंकड़ा है। इसका मोटा-मोटी यह मतलब है कि आईटी क्षेत्र में रोजगार के अवसर बढ़ते ही चले जा रहे हैं। उनके रोजगार की सुनामी सी आ गई है। जो नौजवान आईटी क्षेत्र से किसी तरह से जुड़े हुए हैं, उन्हें आज के दिन नौकरी की कोई कमी नहीं है। यही नहीं, उन्हें थोड़ा सा अनुभव लेने के बाद ही शानदार जॉब के अवसर तेजी से मिलते रहते हैं।

एक बात और जान लें कि अब पेशेवर छोटी-मोटी वेतन वृद्धि से संतुष्ट नहीं होते। वे अब अधिक से अधिक प्रगति चाहते हैं। फिर मौजूदा दौर के आईटी सेक्टर या अन्य क्षेत्रों के पेशेवरों को अपनी कंपनी से किसी तरह का कोई भावनात्मक संबंध भी नहीं होता। उन्हें जो कंपनी बेहतर सैलरी और सुविधाएं देने के लिए तैयार रहती हैं, वे उससे रिश्ता जोड़ लेते हैं। अब वह दौर नहीं रहा जब कोई मुलाजिम एक कंपनी में ही 30-40 साल तक रहने के बाद रिटायर हो जाता था। वे किसी कंपनी को तब ही छोड़ते थे जब उनके गले में फेयरवेल वाले दिन की चंदन की माला पहनाई जाती थी और ग्रेच्युटी का चेक दिया जाता था। यानी सब कुछ बदल रहा है। भारत का चेहरा बदलने में आईटी सेक्टर का रोजगार जगत के चेहरा बदलने में सबसे अहम रोल रहा है। इसकी मार्फत भारत को हर साल अरबों डॉलर की विदेशी मुद्रा भी आसानी से मिल रही है। अब लगभग हरेक मिडिल क्लास भारतीय के परिवार का एक सदस्य सीधे या अप्रत्यश्र रूप से आईटी सेक्टर से जुड़ी जॉब कर रहा है।

बेशक, भारत का आईटी क्षेत्र यदि आज तेजी से छलांग लगा रहा है तो इसमें वर्तमान सरकार की भी अहम भूमिका रही है। अब सरकार का लक्ष्य है कि भारत के सेवा क्षेत्र के निर्यात को एक दशक के दौरान बढ़ाकर एक लाख करोड़ डॉलर तक पहुँचाने में मदद करेगी।

भारत चालू वर्ष के दौरान 400 अरब डॉलर के अपने व्यापारिक निर्यात लक्ष्य को हासिल करने की दिशा में अग्रसर है, जबकि सेवा निर्यात करीब 240अरब डॉलर से 250 अरब डॉलर होने की संभावना है, जो वैसे तो काफी कम है, लेकिन इसमें तेजी से बढ़ोतरी हो सकती है और यह व्यापारिक निर्यात की तेज रफ्तार पकड़ सकता है। सबसे सुखद बात यह है कि आई टी कंपनियां ने अब टियर-2और टियर-3के शहरों की ओर भी अपना रुख करना चालू कर दिया है। वे इन शहरों में अपने बडे कैंपस स्थापित कर रही हैं। जाहिर है, इससे लाखों नई नौकरियां पैदा होंगी। अब आईटी उद्योग को उन कस्बों की पहचान करनी चाहिए जहां वे जा सकें। केंद्र सरकार उन्हें सभी आवश्यक बुनियादी ढांचे तथा सुविधाएं प्रदान करने में मदद करने को तैयार है ही।

शिंजो आबे को गोली मारने की घटना से बीजिंग में क्यों जश्न, क्या है जापान और चीन की अदावत की कहानी

अभिनय आकाश

शिंजो आबे का राजनीतिक बैकग्राउंड ही ऐसा रहा जो जापान के किसी भी मुद्दे पर कोई भी किस्म का समझौता नहीं करने वाले नेता के रूप में रही है। चीन की नजरों में भी आबे को उसके सबसे बड़े दुश्मन के रूप में देखा जाता था।

जापान के सबसे लंबे काल तक प्रधानमंत्री रहे, जिन्होंने 2020 में खराब तबीयत और क्रानिक इलनेस की वजह से अपने पद से इस्तीफा दिया था। पूर्व प्रधानमंत्री शिंजो आबे पर एक हमला हुआ। ये हमला एक छोटे से कस्बे नारा में हुआ। आबे को विमान से एक अस्पताल ले जाया गया, लेकिन उनकी सांस नहीं चल रही थी और उनकी हृदय गति रुक गयी थी। अस्पताल में बाद में उन्हें मृत घोषित कर दिया गया। जापान में घटित इस दुखद घटना पर दुनियाभर से प्रतिक्रियाएं आ रही हैं। वहीं चीन की तरफ से भी पूरे मामले को लेकर रिएक्शन आया है। चीन के सरकारी अखबार ग ?लोबल टाइम्?स ने इस मौके पर भी जापान के खिलाफ जहर उगला है और कहा कि हमले के बाद दक्षिणपंथी भड़क जाएंगे। आबे, दुनिया के वो नेता रहे हैं जिन्?होंने हमेशा चीन को उसकी ही भाषा में जवाब दिया है। चीन के लोग इस घटना पर खुशी जता रहे हैं। वो हमलावर को हीरो करार दे रहे हैं। ऐसे में आपको चीन और जापान की दुश्मनी की दास्तां सुनाते हैं। इसके साथ ही शिंजो आबे से क्यों इतनी नफरत करते हैं चीनी इसके पीछे की कहानी भी बताते हैं।

द्वीपों का देश जापान

प्रशांत महासागर के उत्तर पश्चिमी हिस्से में बसा जापान एक द्विपीय देश है। करीब 6 हजार 852 द्वीप हैं यहां। इनमें से कुछ ही द्वीप हैं जहां आबादी रहती है। लगभग 430 द्वीप ही ऐसे हैं जहां पर लोग रहते हैं। इन 430 द्वीपों में सबसे प्रमुख पांच -होक्काइदो, होनशु, शिकोकु, क्युशू और ओकिनावा हैं। लेकिन चीन के लिए जापान इतना बड़ा नासूर कैसे बन गया। ये जानने के लिए आपको अतीत में झांकना होगा।

चीन और जापान का युद्ध

25 जुलाई 1894 में चीन और जापान के बीच पहला युद्ध हुआ था। कोरिया की चोसून सल्तनत को लेकर चीन के क्विंग राजवंश और जापान के राजा में तकरार इतनी बढ़ी की जंग हो गई। इस जंग में जापान ने चीन को धूल चटा दी। कोरिया को जापान ने चीन से छीन लिया। 43 साल बाद यानी 1937 में फिर दोनों मुल्क जंग के मैदान में आमने सामने आए। जब भी जापान और चीन के दुश्मनी भरे रिश्ते और इतिहास की बात होती है तो 1937 में दिसंबर में चीनी शहर नानजिंग में शुरू हुए क़त्लेआम को ज़रूर याद किया जाता है। जापानी सैनिकों ने नानजिंग शहर को अपने क़ब्ज़े में लेकर हत्या, रेप और लूट को अंजाम देना शुरू कर दिया था। यह क़त्लेआम 1937 में दिसंबर महीने में शुरू हुआ था और 1938 में मार्च महीने तक चला था। बड़ी संख्या में महिलाओं से रेप भी हुआ था। मार्को पोलो ब्रिज पर इन दोनों देशों की सेनाएं भिड़ गईं। उसके

बाद दूसरे चीन-जापान युद्ध का ऐलान हो गया। जापान इस युद्ध में भी चीन पर भारी पड़ रहा था। लेकिन जापान ने एक गलती कर दी। उसने दिसंबर 1941 में पर्ल हार्बर पर अटैक करके 2 हजार से ज्यादा अमेरिकी सैनिकों को मार दिया। इस हमले के बाद अमेरिका और रूस चीन को सपोर्ट करने लगे। महाशक्तियों के सामने जापान कमजोर पड़ने लगा।

अमेरिका की एंट्री और पर्ल हार्बर अटैक का बदला

पर्ल हार्बर पर हमले के बाद अमेरिका ने द्वितीय विश्व युद्ध में एंट्री की और चार साल बाद बदला लेते हुए दो परमाणु बम गिरा दिए। जापान युद्ध भी हारा और उसके सरेंडर के साथ विश्व युद्ध का अंत भी हो गया। अब जापान एटम बम गिराने वाले अमेरिका का तो दोस्त है, लेकिन वो चीन की चालबाजी को कभी माफ नहीं कर पाया। जापान अपने तीन लाख लोगों के परमाणु हमले में मौत के लिए चीन के छेड़े गए युद्ध को जिम्मेदार मानता है। 29 जून 1960 अमेरिका और जापान के बीच एक संधि हुई जिसके मुताबिक जापान पर कोई विदेश हमला करता है तो अमेरिका जंग में उतर जाएगा। इसलिए अब तक ना तो चीन और ना ही नॉर्थ कोरिया जापान पर हमले की जुर्रत कर पाया है।

सेनकाकु द्वीप विवाद

ईस्ट चाइना सी जापान और चीन के बीच खराब संबंधों की दूसरी सबसे बड़ी वजह है। यहां सात वर्ग किलोमीटर में सेनकाकू नाम का एक द्वीप है। जिस पर चीन और जापान दोनों अपना दावा ठोंकते हैं। ये द्वीप न केवल शिपिंग लेन और फिशिंग इंडस्ट्री के लिहाज से बेशकीमती है। बल्कि यहां ईंधन का बहुत बड़ा भंडार भी है। इसलिए चीन किसी भी कीमत पर सेनकाकू पर कब्जा चाहता है। चीन के मुताबिक बहुत पुराने समय से यह आईलैंड उसके ताइवान प्रांत का हिस्सा है। 1895 में जापान ने चीन को हराकर ताइवान को अपने कब्जे में ले लिया। वर्ल्ड वॉर-2 के बाद 1951 में एक संधि के तहत चीन को ताइवान वापस मिल गया, ऐसे में सेनकाकु भी उसका हो गया। वहीं जापान इसे अपने ओकिनावा प्रांत का हिस्सा बताता है। इसके मुताबिक उसने 19 वीं सदी में 10 सालों तक इस आईलैंड का सर्वे किया और 1895 में इसको अपने देश में शामिल किया। 1945 में वर्ल्ड वॉर-2 में जापान की हार के बाद 1951 में हुई एक संधि से ओकिनावा पर अमेरिका का कब्जा हो गया। 1971 में अमेरिका ने जापान को ओकिनावा लौटाया, तब सेनकाकुस भी वापस जापान के पास आ गया, तब से ही इस पर जापान का अधिकार है।

शिंजो आबे और चीन

शिंजो आबे का राजनीतिक बैकग्राउंड ही ऐसा रहा जो जापान के किसी भी मुद्दे पर कोई भी किस्म का समझौता नहीं करने वाले नेता के रूप में रही है। चीन की नजरों में भी आबे को उसके सबसे बड़े दुश्मन के रूप में देखा जाता था। आबे के कार्यकाल के दौरान पूर्वी चीन सागर में जापान अपने द्वीपों की सुरक्षा के लिए चीनी राष्ट्रपति शी जिनपिंग से भी भिड़ने को तैयार था। आबे का चीन के प्रति रवैया भी बेहद सख्त रहा है। ईस्ट एशिया में चीन की दादागिरी आबे ने मुखरता से मुखालफत की और अपनी पहचान दुनिया में चीन से सीधे भिड़ने का माद्दा रखने वाले राजनेता के रूप में करवाई। ये आबे ही थे जिनके कार्यकाल में जापान की नौसेना को सशक्त करने की दिशा में रक्षा बजट में इजाफा ही नहीं किया गया था बल्कि ताइवान की स्वतंत्रता को लेकर सीधी चुनौती भी दी गई थी। आबे ने स्व-शासित द्वीप पर चीन के अपने क्षेत्र के रूप में दावा और हमले की धमकी को लेकर एक भाषण में चेतावनी देते हुए किसी भी किस्म की सैन्य कार्रवाई आर्थिक आत्महत्या की ओर ले जाने वाला कदम बताया था।

क्वाड की स्थापना में अहम रोल, चीन की दादागिरी को कड़ी चुनौती

29 दिसंबर 2004 को अमेरिकी राष्ट्रपति जार्ज बुश ने घोषणा की कि भारत, जापान, ऑस्ट्रेलिया और अमेरिका मिलकर एक अंतरराष्ट्रीय गठबंधन बनाएंगे। जिसका उद्देश्य होगा सुनामी में पानी में फंसे लोगों को बचाने, राहत पहुंचाने, बेघर लोगों के पुर्नवास, बिजली कनेक्टिवीटी और अन्य सेवाओं को बहाल करने के लिए काम करना होगा। सुनामी राहत का ये मिशन खत्म हुआ तो इस गठबंधन का एक नया ढांचा क्वाड के रूप में सामने आया। जापान के तत्कालीन प्रधानमंत्री शिंजो आबे ने इस बात पर जोर दिया कि भारत को साथ लेकर जापान, ऑस्ट्रेलिया और अमेरिका को समुद्र में अच्छे और मजबूत दोस्त बनाने चाहिए। 2006 में जब मनमोहन सिंह टोक्यो पहुंचे तो मामले को लेकर क्वाड की बैठक भी हुई और चीजों का विस्तार होना शुरू हुआ। क्वाड की स्थापना 2007 में हुई। वर्तमान दौर में चीन को घेरने के लिए बनाया गया क्वाड संगठन आज चीनी राष्ट्रपति शी जिनपिंग के लिए नाक में दम बना हुआ है। क्योंकि, इसके चलते उसकी दादागिरी को कड़ी चुनौती मिलने लगी है।

हरियाली के विस्तार से समृद्ध स्वास्थ्य

विजय गर्ग

भारतीय संस्कृति में आम, पीपल, बरगद, आंवला आदि पादपीय प्रजातियों को प्रदत्त पूजनीय स्थान इसी विश्वास का द्योतक है। आज भी अनेक मांगलिक अनुष्ठानों में वृक्षवंदना का पारम्परिक प्रचलन, प्रकृति व मानव का अटूट संबंध दर्शाता है।

भौतिक विकास प्रक्रिया में प्राकृतिक वन सम्पदा का क्षरण निश्चय ही विडंबनापूर्ण है। कंक्रीट सभ्यता ने वन्य जीवों को बेघर कर डाला, अनेकों प्रजातियां विलुप्ति के कगार पर जा पहुंचीं। वन स्थिति रिपोर्ट 2021 के अनुसार, देश का कुल वन-वृक्ष आवरण 80.9 मिलियन हेक्टेयर है, जोकि कुल भौगोलिक क्षेत्र का लगभग 24.62 है। 2019 की अपेक्षा 2261 वर्ग कि.मी. तुलनात्मक वृद्धि दर्ज की गई, लेकिन पौधरोपण एवं वन संरक्षण लक्ष्य प्राप्ति अभी बाकी है। तकनीकी सुलभता में पहाड़ दरकने लगे, वनस्पतियां सिमटने लगी, ग्लेशियर पिघल रहे हैं। एक ओर अनावृष्टि का चीत्कार, दूसरी तरफ अतिवृष्टि का तांडव। मार्च माह में जून सी तपन, आखर इस अप्रत्याशित ऋतु-परिवर्तन में किसका हाथ है? विज्ञान का अनुमोदन करने वाले कैसे भूल गए, पौधों में भी जीवन है? वे भी सांस लेते हैं, थिरकते हैं, अवमानना पर कुपित भी होते हैं। बढ़ता तापमान, महामारी का प्रकोप, पूर्वोत्तर में अनियन्त्रित बाढ़-भूस्खलन; सभी रोष प्राकट्य के स्पष्ट संकेत ही तो हैं।

वैश्विक स्तर पर जैव विविधता जलवायु परिवर्तन व ग्लोबल वार्मिंग के संकट से जूझ रही है। कार्बन उत्सर्जन तथा जलवायु परिवर्तन समस्याओं से निपटने हेतु भारत सरकार ने 2030 तक वन क्षेत्र को बढ़ाकर 33 प्रतिशत करने का लक्ष्य रखा है। किंतु सफलता तभी तय है, जब फूड एंड एग्रीकल्चर ऑर्गेनाइजेशन ऑफ यूनाइटेड नेशंस द्वारा जारी 'द स्टेट ऑफ द वर्ल्ड्स फॉरेस्ट्स' रिपोर्ट में रेखांकित पेड़-पौधों एवं वन पर आधारित उत्पादों के सम्पूर्ण महत्व के बारे जागरूकता फैलाई जाए। रिपोर्ट के अनुसार, अधिकांश लोग इस बात से अनभिज्ञ हैं कि ऑक्सीजन व स्वच्छ वातावरण प्रदान करने सहित, वन संसाधनों की भूमिका सीधे तौर पर हमारी अर्थव्यवस्था से भी जुड़ी है। सरकार चाहे तो पेड़ों से प्राप्त फल आदि उत्पादों के लिए न्यूनतम समर्थन मूल्य तय करके लोगों को पौधरोपण अभियान से जोड़ सकती है।

विशेषज्ञों के अनुसार छायादार, फलदार, आर्थिकी, सुगंध, औषधीय गुणों से परिपूर्ण विश्व की श्रेष्ठतम प्रजातियां भारत में मौजूद हैं। हरियालीयुक्त वातावरण तापमान को 7 डिग्री तक घटा सकता है। संतुलित पर्यावरण चक्र को संतुलित अवस्था में लाना हो तो कम से कम एक-तिहाई भूभाग को वृक्ष सम्पदा से आच्छादित करना होगा। 'एग्रोफॉरेस्ट्री मिशन% के तहत कृषकों को खेत की मेड़ पर पेड़ लगाने हेतु प्रोत्साहित करना सराहनीय पहल है। भारतीय भौगोलिकता के अनुसार उत्तर, मध्य व दक्षिण क्षेत्रों में स्थानीय परिस्थितियों, मृदा की गुणवत्ता, विशेषता के आधार पर पौधों का चयन करके क्षेत्र को हरीतमा प्रदान करना प्रत्येक नागरिक का अपरिहार्य लक्ष्य होना चाहिए। शिशु की भांति पौधे भी सामयिक देखभाल मांगते हैं।

पौधरोपण मानवीय दायित्व है। ज्ञातव्य है, तटीय क्षेत्रों में रोपित सघन पेड़ों ने ही 2004 में आयी सुनामी की आगामी लहरों को अवशोषित करके, बड़ी संख्या में मानवीय निवास-स्थलों को संरक्षित किया। कोविड-प्रभाव भी तुलनात्मक दृष्टि से हरियाले क्षेत्रों में कम रहा।

भारत के हर बच्चे के लिए हमें स्वस्थ खुशहाल बचपन सुनिश्चित करना

वर्ष 1968 में रिलीज हुई दो कलियां फिल्म में साहिर लुधियानवी द्वारा लिखा गीत, बच्चे मन के सच्चे,सारे जग के आंख के तारे, ये वो नन्हे फूल है जो भगवान को लगते प्यारे!!सभी को, खासकर युवाओं को सुनकर रेखांकित करना जरूरी है कि बच्चों को वात्सल्य, प्यार देखभाल सहित भारत के हर बच्चे के लिए हमें स्वस्थ खुशहाल बचपन सुनिश्चित करना संवेदनशील समर्थनकारी और समकालीन की कोशिश व्यवस्था स्थापित करना होगा क्योंकि बच्चे ईश्वर अल्लाह का रूप ही नहीं हमारे देश का भविष्य भी हैं इसलिए ही केंद्रीय वित्तमंत्री ने बजट 2022 में मिशन वात्सल्य को आगे बढ़ाने की बात की थी तथा अभी 5 जुलाई 2022 को महिला बाल कल्याण मंत्रालय द्वारा अपने 78 पृष्ठों का मिशन वात्सल्य का दिशानिर्देश जारी किए हैं जो एक अप्रैल 2022 से लागू रहेंगे इसलिए आज हम इस आर्टिकल के माध्यम से बच्चों उनके संबंधित कानूनोंअंतरराष्ट्रीय संधियों और मिशन वात्सल्य पर चर्चा करेंगे।

साथियों बात अगर हम मिशन वात्सल्य कीकरें तो पीआईबी के अनुसार, महिला एवं बाल विकास मंत्रालय ने बच्चों के कल्याण एवं पुनर्वास के लिए 2009-10 से एक केन्द्र प्रायोजित योजना मिशन वात्सल्य यानें बाल संरक्षण सेवा योजना शुरू की है। मिशन वात्सल्य का लक्ष्य भारत के हर बच्चे के लिए एक स्वस्थ एवं खुशहाल बचपन सुनिश्चित करना, उन्हें अपनी पूर्ण क्षमता का पता लगाने के लिए अवसर प्रदान करना, हर क्षेत्र में विकास के लिए सहायता प्रदान करना, उनके लिए ऐसी संवेदनशील, समर्थनकारी और समकालिक इको-व्यवस्था स्थापित करना है जिसमें उनका पूर्ण विकास हो।

साथियों इसके साथ ही राज्यों और केन्द्र शासित प्रदेशों को किशोर न्याय कानून 2015 के अनुरूप सुविधाएं मुहैया कराने तथा सतत विकास लक्ष्यों को हासिल करने में मदद करना था। मिशन वात्सल्य अंतिम उपाय के रूप में बच्चों के संस्थागतकरण के सिद्धांत के आधार पर कठिन परिस्थितियों में बच्चों की परिवार आधारित गैर-संस्थागत देखभाल को बढ़ावा देता है। पिछले साल स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय द्वारा मिशन वात्सल्य शुरू किया गया था। मिशन वात्सल्य को वात्सल्य मैत्री अमृत कोष के नाम से भी जाना जाता है। जैसा कि इस मिशन का नाम दर्शाता है,ये एक दूरदर्शी प्रयास है जिसके माध्यम से स्तनपान को बढ़ावा देने और शिशु मृत्यु दर को कम करने का प्रयास किया जा रहा है। इस साल हुई बजट घोषणा में ये साझा हुआ था कि केंद्र सरकार मिशन वात्सल्य को आगे ले जाएगी और शिशुओं और माताओं के लाभ में प्रयत्नशील रहेगी। महिला और बाल विकास मंत्रालय ने भी अपनी मुख्य योजनाओं को तीन पार्ट में बांटा है। इसमें उन्होंने सभी महत्वपूर्ण योजनाओं को मिशन पोषण 2.0, मिशन शक्ति और मिशन वात्सल्य नामक तीन वर्गों में विभाजित किया है। इसका तात्पर्य ये है कि महिला और बाल विकास मंत्रालय की तीन अंब्रेला स्कीम्स में से मिशन वात्सल्य भी एक स्कीम है।

मिशन वात्सल्य के मुख्य कार्यों में संवैधानिक निकायों के कामकाज में सुधार लाना, सेवा प्रदान करने के ढांचे को मजबूत बनाना, संस्थागत देखभाल और सेवाओं के स्तरमें वृद्धि करना,गैरसंस्थागत समुदाय आधारित देखभाल को प्रोत्साहित करना, आपात स्थिति में पहुंच उपलब्ध कराना,प्रशिक्षण एवं क्षमता निर्माण शामिल हैं। मंत्रालयने मिशन वात्सल्य योजना के विस्तृत दिशा-निर्देश जारी किए हैं और राज्यों तथा केन्द्रशासित प्रदेशों के प्रशासनों से वर्ष 2022-23 के लिए इस संबंध में वित्तीय नियम दिशा-निर्देश के आधार पर अपने वित्तीय प्रस्ताव और योजनाएं तैयार करने को कहा है। मिशन वात्सल्य योजना के नियम एक अप्रैल 2022 से लागू होंगे।

सभी राज्यों और केन्द्र शासित प्रदेशों ने अपने यहां इस योजना को लागू करने के लिए मंत्रालय के साथ समझौता पत्र पर हस्ताक्षर किए हैं। मिशन वात्सल्य को केन्द्र द्वारा प्रायोजित योजना के तौर पर केन्द्र तथा राज्यों/केन्द्रशासित प्रदेशों की सरकारों के बीच निर्धारित लागत बंटवारा अनुपात के अनुरूप लागू किया जाएगा।

साथियों बात अगर हम भारत में बच्चों संबंधी कानूनों नियमों अन्तर्राष्ट्रीय संधियों की करें तो बच्चों के कल्याण में इसे कानून, नीति एवं कानून द्वारा पूरा किया जाने की परिकल्पना की गई है। अन्य मंत्रालयों के साथ समन्वय के साथ योजनाबद्ध हस्तक्षेप औरसंगठन। राष्ट्रीय बाल नीति, (2013 में संशोधित) और राष्ट्रीय बच्चों के लिए कार्रवाई की योजना, 2016 ने बाल कल्याण के लिए नीति ढांचा निर्धारित किया और सुरक्षा। भारतीय संसद ने इसके पक्षमें अनेक ऐतिहासिक कानून पारित किए हैं। बच्चों की तरह किशोर न्याय (बच्चों की देखभाल और संरक्षण) अधिनियम 2015,यौन अपराधों से बच्चों की सुरक्षा अधिनियम 2012 सुरक्षा आयोग। बाल अधिकार अधिनियम, 2005, बाल विवाह अधिनियम, 2006 का निषेध और अधिकार शिक्षा अधिनियम 2009भारतमहत्वपूर्ण अंतरराष्ट्रीय संधियों का एक हस्ताक्षरकर्ता भी है।संयुक्त राष्ट्र बाल अधिकारसम्मेलन और गोद लेने पर हेग सम्मेलन। बच्चों का प्रणालीगत विकास और बाल न्याय को मजबूत बनाना आवश्यक है।

साथियों बात अगर हम मिशन वात्सल्य के उद्देश्यों की करें तो, मिशन वत्सल्य के प्रमुख उद्देश्य हैं,केंद्रीयता रखते हुए प्रशासन की योजना में बच्चों को प्राथमिकता देना।मिशन के तहत किए गए सभी गतिविधियों और कार्यों के दौरान परियोजनाओं की रूपरेखा तैयार करते अथवा सुपुर्दगी देते समय बच्चे का सर्वोत्तम हित।कार्यक्रम और सकारात्मक कार्रवाई करने के लिए खुश होने का अधिकार सुनिश्चित करना।परिवारों का समर्थन करने के लिए मजबूत सामाजिक सुरक्षा के साथ परिवार के वातावरण बच्चों के जीवित रहने, विकास, संरक्षण और अधिकार सुनिश्चित करना।

गीत

भूलो मत मेरे यार पुराने यारों को।
देते रहना प्यार पुराने यारों को।
कागज़ की कश्ती से लेकर कालेज तक,
बीच बुढ़ापे सैर सुबह की पार्क तक,
मिलता रहे सत्कार पुराने यारों को।
भूलो मत मेरे यार पुराने यारों को। जबभी अपने गांव में तुम आओगे,
मुमकिन कि हमारे घर पांवों पाओगे,
दे जाना दीदार पुराने यारों को।
भूलो मत मेरे यार पुराने यारों को।
अगर अचानक ही इकट्ठे हो जाओ,
मैख़ाने में हास्य ठिठोली फिर पाओ,
करना ना इनकार पुराने यारों को।
भूलो मत मेरे यार पुराने यारों को।
जिस में बीते वक़्तों का सरमाया है,
इक गुलदस्ता चित्त के साथ सजाया है,
यादों का भंडार पुराने यारों को।
भूलो मत मेरे यार पुराने यारों को।
फिर से एक पुरानी ग़ज़ल सुनाता हूं,
अपनी ठाठ जवानी में फिर आता हूं,
महफ़िल के श्रृंगार पुराने यारों को।
भूलो मत मेरे यार पुराने यारों को।
विश्व विद्यालय की नुक्कड़ में आज भी है,
जिस के नीचे मिलने के कई राज़ भी है,
भूले ना कचनार पुराने यारों को।
भूलो मत मेरे यार पुराने यारों को।
खट्टी-मीठी यादें सब दे जाऊंगा,
यादों की फरियादें सब दे जाऊंगा,
इक सुंदर संसार पुराने यारों को।
भूलो मत मेरे यार पुराने यारों को।
दुःख सुख भीतर रहबर बन कर चलते थे,
हर आदत अनूकूल बराबर ढलते थे,
कहते सृजनहार पुराने यारों को।
भूलों मत मेरे यार पुराने यारों को।
ग़ज़ल कहानी कविता कवित्त रूबाई में,
बालम, बीते वक़्तों की शहनाई में,
दिया है सभ्याचार पुराने यारों को।
भूलो मत मेरे यार पुराने यारों को।

बलविंदर बालम ओंकार नगर गुरदासपुर पंजाब वटस आप 9815625409,एडमिंटन कनेडा

वो स्कूल वाले दिन

वो स्कूल वाले दिन
आगे जिंदगी उन सबके बिन
अपने बच्चों की तरह हमें पढ़ाना
हम सभी का आपको सताना
अपनी गल्तियों के लिए डाट खाना
स्कूल ना जाने के लिए बनाने
वाला बहाना उन हसीन यादों में
आज भी गुम हो जाते है वो स्कूल
के दिन बड़े याद आते है...
हर बात याद आती है वहाँ की
उन यादों को ना भूल जाना
प्रार्थना के स्वर गाना बजाना
कार्यक्रमों में खुद नाचना गुरुजनों
को नचाना याद करके अपनी
नादानियाँ मन ही मन मुस्कुराते है
वो स्कूल के दिन बड़े याद आते
है...
वो बीच पीरियड में ही स्कूल से
भाग जाना बेस्वर गाना गा के टेबल
बजाना मिल बाट कर पिने वाला
एक बोतल का पानी
याद करेंगे सारी नदानी
वार्षिक उत्सव मे खेल के मैदान मे
जान लगाना
15 अगस्त 26 जनवरी में
स्वाभिमान से तिरंगा लहराना
हम नही भूले उन शिक्षकों को जो
अपनो सा रिश्ता निभाते है
वो स्कूल के दिन बड़े याद आते
है...

शार्ट न्यूज

बलिया : बुजुर्ग की हत्या के 10 दोषियों को आजीवन कारावास की सजा

बलिया। बलिया जिले की एक स्थानीय अदालत ने एक वृद्ध की हत्या करने के मामले में 10 आरोपियों को दोषी करार देते हुए आजीवन कारावास की सजा सुनाई है। अभियोजन विभाग के संयुक्त निदेशक सुरेश पाठक ने शुक्रवार को बताया कि जिले के फेफना थाना क्षेत्र के गौरा त्रिमुहानी पर 6 सितंबर 2016 की शाम चितबड़ागांव थाना क्षेत्र के करना गांव निवासी अशोक कुमार सिंह की हत्या कर दी गई थी। इस मामले में सिंह के पुत्र शशि कांत सिंह की शिकायत पर भृगुनाथ सिंह, रंजीत यादव, राज कुमार यादव, मेवा यादव, सुरेश यादव, रामनाथ यादव, निरहू यादव, गौतम यादव, अजीत यादव एवं मंजित यादव के विरुद्ध भारतीय दंड संहिता की संबंधित धाराओं के तहत मामला दर्ज किया गया। पुलिस ने जांच के बाद सभी आरोपियों के विरुद्ध अदालत में आरोप पत्र दाखिल किया। उन्होंने बताया कि जिला न्यायाधीश जितेन्द्र कुमार पाण्डेय की अदालत ने दोनों पक्षों की दलील सुनने के बाद सभी 10आरोपियों को दोषी करार देते हुए आजीवन कारावास की सजा सुनाई और 20-20 हजार रुपये का जुर्माना भी लगाया है।

गोवर्धन में 8 दिन चढ़ेगा 50,000 लीटर दूध

मथुरा। मथुरा के गोवर्धन में भगवान की पूजा और परिक्रमा का विशेष महत्व है। यहां भक्त भगवान गोवर्धन का दूध से अभिषेक कर पूजन करते हैं। यहां आठ जुलाई से मेला शुरू हो रहा है जो 15 जुलाई तक चलेगा। इस बीच हर रोज दूध चढ़ेगा। द्वापर युग में भगवान कृष्ण गाय चराने जाते थे। एक दिन नंदबाबा ने इंद्र देव की पूजा के लिए तैयारी शुरू की। पकवान, व्यंजन और तैयारियां देख भगवान कृष्ण ने नंदबाबा से पूछा यह क्या चल रहा है, किसकी पूजा की तैयारी चल रही है। इस पर नंदबाबा ने कहा कि इंद्र देव की पूजा की जाएगी। इस पर भगवान कृष्ण ने कहा कि इंद्र की पूजा क्यों ? हमको तो गोवर्धन पर्वत की पूजा करनी चाहिए, इस पर हमारी गाय भ्रमण करती हैं। भगवान की जिद के आगे नंदबाबा ने गोवर्धन पर्वत की पूजा करने का निर्णय लिया। नंद बाबा के इस निर्णय से इंद्र क्रोधित हो गए और उन्होंने ब्रज को डुबाने के लिए बारिश शुरू कर दी। तब भगवान कृष्ण ने इंद्र का मान भंग करने के लिए सात कोस में फैले गिर्राज पर्वत को अपनी कन्नी उंगली पर उठा लिया। 7 दिन तक कन्नी उंगली पर पर्वत को उठाए रखने से परेशान इंद्र भगवान की शरण में आए और क्षमा मांगने लगे। इसके बाद भगवान कृष्ण ने ब्रजवासियों के साथ पहले गोवर्धन नाथ का दूध, दही से अभिषेक किया और उसके बाद भोग लगाया। तभी से आज तक भक्त गोवर्धन पर दूध से अभिषेक करते हैं और फिर 21 किलोमीटर की परिक्रमा करते हैं।

दारूल उलूम की अपील - ईद-उल-अजहा पर गौवंश की कुर्बानी न दें

सहारनपुर। उत्तर प्रदेश के सहारनपुर स्थित देवबंद में सामाजिक संगठन दारुल उलूम ने ईद-उल- अजहा के मद्देनजर गोवंश की कुर्बानी नहीं देने की अपील की है। इस बीच प्रशासन ने भी शनिवार को मनाए जाने वाले इस पर्व को लेकर पूरी तरह सतर्कता बरतते हुए शांति व्यवस्था बनाये रखने की पूरी तैयारी कर ली है। अधिकारियों ने जिला मुख्यालय से लेकर थाना स्तर पर शांति समितियों के माध्यम से इस पर्व पर लोगों से शांति और सद्भाव बनाए रखने की अपील की है। जिलाधिकारी अखिलेश सिंह ने मुसलमानों से अपील की है कि वे किसी भी सूरत में सार्वजनिक स्थानों पर पशुओं की कुर्बानी नहीं करें। यदि कहीं इस तरह की घटना पाई गई तो उनके खिलाफ कड़ी कानूनी कार्रवाई की जाएगी। दारूल उलूम देवबंद ने भी हर साल की तरह इस साल भी मुसलमानों से गौवंश सुरक्षा अधिनियम के मद्देनजर अपील की है कि वे किसी भी सूरत में गौवंश की कुर्बानी ना करें। इस कानून के तहत गौवंश की कुर्बानी गैर कानूनी घोषित है। दारूल उलूम देवबंद ने गौहत्या के खिलाफ फतवा भी जारी किया हुआ है। दारूल उलूम के शीर्ष अधिकारी मोहतिमम अबुल कासिम नौमानी ने मुसलमानों से कहा कि वे ईद का पर्व शांति एवं सौहार्द्र से मनायें और नमाज मस्जिदों के भीतर ही अदा करें। सार्वजनिक स्थानों पर पशुओं की कुर्बानी ना करें और ना ही पशुओं के अवशेषों को सड़कों पर खुलेआम फेंके।

फर्रूखाबाद : गैंगस्टर हरगोविंद की 54 लाख रुपये से अधिक की सम्पत्ति होगी कुर्क

फर्रूखाबाद। उत्तर प्रदेश में फर्रूखाबाद के मोहम्मदाबाद कोतवाली क्षेत्र में कुख्यात बदमाश हरगोविंद सिंह यादव उर्फ पिन्टू व उसकी पत्नी के गैंगस्टर एक्ट के तहत कार्रवाई करते हुए जिला प्रशासन ने गैरकानूनी गतिविधियों से एकत्र की गयी 54 लाख रुपये से अधिक कीमत की संपत्ति को कुर्क करने की प्रक्रिया शुरु कर दी है। जिला प्रशासन की ओर से शुक्रवार को दी गयी जानकारी के मुताबिक हरगोविंद और उसकी पत्नी की 54 लाख 55 हजार 232 रूपये की चल-अचल सम्पत्ति की कुर्की के लिये फर्रूखाबाद सदर तहसीलदार श्रृद्धा पाण्डेय को प्रशासक नियुक्त किया गया है। जिले में मोहम्मदाबाद कोतवाली क्षेत्र के परगना खिमसेपुर ग्राम बैरामनगर निवासी गैंग लीडर हरगोविंद सिंह यादव उर्फ पिन्टू पुत्र श्याम सिंह यादव व उनकी पत्नी संगीता देवी के विरूद्ध उत्तर प्रदेश गिरोह बंद व समाज विरोधी क्रियाकलाप निवारण अधिनियिम की धारा 14 (1) के तहत अवैध रूप से अर्जित की गई संपत्ति को चिन्हित किया गया है। चल-अचल ज्ञात संपत्ति के जब्तीकरण हेतु थानाध्यक्ष जहांनगंज देवेश पाल द्वारा प्रेषित आख्या के क्रम में जिला मजिस्ट्रेट फर्रूखाबाद द्वारा हरगोविंद की उक्त सम्पत्ति को कुर्क करने के लिये फर्रूखाबाद की सदर तहसीलदार श्रृद्धा पाण्डेय को प्रशासक नियुक्त किया गया हैं। पुलिस के अनुसार कुर्क की जाने वाली संपत्ति में 48 लाख 72 हजार 272 रूपये की कीमत की संपत्ति हरगोविंद की है और 05 लाख 82 हजार 960 रूपये की संपत्ति उसकी पत्नी है।

जौनपुर : माफियाओं को चिह्नित कर कार्रवाई करने का डीएम ने दिया निर्देश

जौनपुर। उत्तर प्रदेश के जौनपुर में भू-माफियाओं के खिलाफ जिला प्रशासन ने सख्ती बरतते हुए चिन्हित कर कार्रवाई करने की पहल की है। जौनपुर के जिलाधिकारी (डीएम) मनीष कुमार वर्मा ने बड़े भू-माफियाओं को चिह्नित कर इनके विरुद्ध कार्रवाई करने एवं इसका ब्योरा पोर्टल पर दर्ज कराने का निर्देश दिया है। उन्होंने तहसील स्तरीय टास्क फोर्स की बैठक कर रिपोर्ट मांगी है। उन्होंने जिले के सभी उप जिलाधिकारियों को निर्देशित किया कि जितने भी बड़े भू-माफिया चिह्नित किए गए हैं उनका नाम एंटी भू-माफिया पोर्टल पर फीड कराया जाए। उन्होंने पोर्टल पर लंबित शिकायतों की समीक्षा करते हुए उन पर प्रभावी कार्रवाई करने का भी निर्देश दिया। डीएम की अध्यक्षता में हुयी बैठक में कर एवं राजस्व वसूली की भी समीक्षा की गई। डीएम ने निर्देशित किया कि स्टांप के मामलों में आरसी की वसूली की जाए। उन्होंने 10 बड़े बकायेदारों की के बारे में निर्देश दिया कि जिन लोगों ने पैसे जमा कर दिए हैं, उनका नाम हटाकर नए लोगों का नाम दर्ज किया जाए।

ससुराल गए युवक की मौत, सास-ससुर पर कोल्ड ड्रिंक में जहर देने का आरोप

फिरोजाबाद। एक युवक का पत्नी और ससुरालियों से विवाद हो गया था। इसके बाद पत्नी ससुराल में थी। आरोप है कि शादी की चौथी वर्षगांठ मनाने के लिए युवक को ससुराल बुलाया गया और वहां उसे कोल्डड्रिंक में जहर देकर देर रात हत्या कर दी गई। पुलिस को मामले में लड़के के परिवार ने तहरीर दी है जिसके बाद पुलिस मामले की जांच कर रही है। परिवार का कहना है कि मृतक इकलौता बेटा था। थाना उत्तर क्षेत्र के सविता नगर जाहरवीर मंदिर के पीछे कोटला रोड निवासी रामनरेश पुत्र बाबूराम एक प्राइवेट चिकित्सक के यहां काम करता हा। उनके बेटे अनूप कुमार की शादी 7 जुलाई 2018 को कैलाश नगर फिरोजाबाद निवासी कुसमा देवी के साथ हुई थी। उसके एक तीन साल का बेटा भी है। अनूप घर का इकलौता बेटा था। पिता ने तहरीर देकर कहा है कि बुधवार को पति पत्नी के बीच किसी बात को लेकर झगड़ा हो गया था। उस समय वह काम करने के लिए गया था। पत्नी ने मायके पक्ष वालों को बताया तो उन्होंने घर में घुसकर अनूप की मां और बहन के साथ मारपीट करते हुए सामान को बाहर फेंक दिया था।

बालू मौरंग की कालाबाजारी पर सीएम योगी सख्त, कड़ी कार्रवाई के निर्देश

लखनऊ। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा है कि बालू, मौरंग, गिट्टी जैसे उपखनिजों का आम आदमी से सीधा जुड़ाव है। इनकी कीमतों में अनावश्यक बढ़ोतरी न हो। विभिन्न विकास परियोजनाएं भी इससे प्रभावित होती हैं। ऐसे में उपखनिजों का अभाव दिखाकर कालाबाजारी करने वालों के खिलाफ सख्त कानूनी कार्रवाई की जाए। मुख्यमंत्री ने शुक्रवार को खनन विभाग की समीक्षा बैठक में यह निर्देश दिये।

मुख्यमंत्री ने कहा कि खनन कार्य से जुड़े सभी हितधारकों के लिए पारदर्शी प्रक्रिया हो। खनिजों व उप खनिजों के मूल्य हर हाल में नियंत्रण में रहें। फॉस्फोराइट, पोटाश, स्वर्ण धातु अयस्क, प्लेटिनम समूह के अयस्क, लौह अयस्क, एंडालूसाइट और सिलिमाइट जैसे उर्वरक खनिज, बहुमूल्य धातुओं, लौह धातु और रिफ्रैक्ट्री खनिजों के सम्बंध में निविदा की प्रक्रिया यथाशीघ्र पूरी कर ली जाए।

मुख्यमंत्री ने कहा कि बालू, मोरम के विकल्प के रूप में पत्थरों के क्रशिंग से उत्पन्न कृत्रिम बालू को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। बालू/मोरम के खनन पट्टों में ऑनलाइन अग्रिम मासिक किश्त के स्थान पर "Pay as you go" व्यवस्था लागू करते हुए महीने के अंत तक पूरी किश्त जमा करने का समय दिया जाना चाहिये। इससे पट्टाधारकों को बड़ी सहूलियत होगी।

खनन कार्यों के संबंध में अंतरराज्यीय परिवहन हेतु विनियमन शुल्क की दर में वृद्धि पर विचार किया जाना चाहिए। मुख्यमंत्री ने कहा कि 2016 से प्रभावी रॉयल्टी दर को पुनरीक्षित करने पर विचार किया जाए। इस सम्बंध में सभी स्टेकहोल्डर्स की राय भी ली जानी चाहिए। किसी भी दशा में ओवरलोडिंग न हो। यह नियमविरुद्ध भी है और दुर्घटनाओं का कारक भी बनता है। इस दिशा में सख्ती की जानी चाहिए।

मेरठ के थाने में हुई दरोगा की जन्मदिन पार्टी, सेल्फी के चक्कर में बैठी जांच

मेरठ। मेरठ के किठौर थाने में चौकी इंचार्ज के जन्मदिन पर केक काटने का फोटो सोशल मीडिया पर वायरल हो गया है। फोटो में दरोगा और पुलिसकर्मियों के साथ सेल्फी लेने वाले को एक पुराने मुकदमे में आरोपी बताया गया है। पांच जुलाई को किठौर थाने में तैनात चौकी इंचार्ज नरेश कुमार का जन्मदिन मनाया गया। थाना प्रभारी के कार्यालय में केक काटा गया। नरेश कुमार के साथ कई अन्य लोग भी शामिल रहे जिनकी फोटो सोशल मीडिया पर वायरल हुई। फोटो में दिख रहा एक व्यक्ति ग्राम असीलपुर निवासी नदीम है।

बताया जा रहा है कि नदीम का नाम कई साल पहले जानलेवा हमले की घटना में आया था, जिसका मुकदमा किठौर थाने में दर्ज है। नदीम अक्सर थाने में आता जाता रहता है। किठौर थाना प्रभारी अरविंद मोहन शर्मा अवकाश पर हैं। उनकी अनुपस्थिति में साइफन चौकी इंचार्ज नरेश कुमार कार्यवाहक थाना प्रभारी के रूप में कार्य कर रहे है।

एसपी देहात केशव कुमार ने कहा कि प्रकरण संज्ञान में है। जांच कराई जा रही है कि संबंधित व्यक्ति खुद थाने आया था या किसी ने बुलाया था। जो युवक फोटो में दिख रहा है, वह हिस्ट्रीशीटर नहीं है। अन्य आरोप को लेकर जांच की जा रही है।

इस मामले पर दारोगा नरेश कुमार का भी बयान आया है। दारोगा नरेश कुमार के मुताबिक जन्मदिन पर केक काटा गया था लेकिन वायरल फोटो में कोई भी व्यक्ति हिस्ट्रीशीटर नहीं है। जो आरोप लगाए जा रहे हैं वो गलत है।

सद्गुरु कबीर विज्ञान आश्रम में संत पर धारदार हथियार से हमला

जौनपुर। जौनपुर में मछलीशहर कोतवाली के रामपुर कटहित खास गांव स्थित सद्गुरु कबीर विज्ञान आश्रम में सत्संग मंडप के बगल में सोये संत ध्यान दास के ऊपर धारदार हथियार से जानलेवा हमला कर दिया गया है। उन्हें सिर में गंभीर चोट आई है। हमले के बाद उनकी चीख-पुकार सुनकर आश्रम के मुख्य संत विमल दास के ललकारने पर हमलावर भाग गये। सूचना पर पहुंची पुलिस ने घायल संत को सीएचसी पहुंचाया। जहां से गंभीर स्थिति को देखते हुए चिकित्सकों ने पहले जिला अस्पताल फिर ट्रामा सेंटर वाराणसी रेफर कर दिया। उनकी हालत चिंताजनक बनी हुई है।

घटना की सूचना पर क्षेत्राधिकारी मछलीशहर अतर सिंह व सीनियर सब इंस्पेक्टर रामप्रवेश कुशवाहा मय फोर्स के साथ आश्रम पर पहुंचकर जांच में जुट गये हैं। घायल संत के पिता केशव दास उर्फ रणजीत सिंह ने अज्ञात हमलावरों के खिलाफ तहरीर दी है। घायल संत के पिता भी इसी आश्रम में रहते हैं। यह लोग मूल रूप से फतेहपुर जिले के गांव नारायणपुर, थाना जहानाबाद के निवासी हैं। मौके पर पहुंची फील्ड यूनिट और डॉग स्क्वायड की टीम ने जांच पड़ताल की। खोजी कुत्ता घायल संत के बिस्तर के बगल स्थित मंदिर पर जाकर कुछ देर रुका लेकिन कुछ सुराग नहीं मिल पाया है। पुलिस मामले की जांच कर रही है। घटना के बाबत लोगों का कहना है कि आश्रम का विवाद पिछले 2 सालों से चल रहा है। इसके पूर्व मुख्य संत विमल दास 2019 में संदिग्ध परिस्थितियों में गायब हो गये थे।

हरियाणा से मैनपुरी जा रही 200 लीटर अवैध शराब बरामद

फिरोजाबाद। फिरोजाबाद में हरियाणा से मैनपुरी ले जाई जा रही 200 लीटर अवैध शराब को पकड़ लिया। आरोपी लग्जरी कार से शराब की सप्लाई करता था। फिरोजाबाद पुलिस ने कार समेत आरोपी को भी गिरफ्तार किया है। सीओ सिटी अभिषेक श्रीवास्तव ने बताया कि थानाध्यक्ष रामगढ़ हरवेंद्र मिश्रा ने मुखबिर की सूचना पर पुलिस टीम के साथ हाईवे स्थित ममता डिग्री कॉलेज के पास चेकिंग के दौरान एक सफेद रंग की ओक्टवा स्कोडा कार को तलाशी के लिए रोका, जिसमें अवैध रुप से हरियाणा राज्य की अंग्रेजी शराब भरी हुई थी। वह आगरा से मैनपुरी की ओर जा रही थी। अपने आप को घिरता देख आरोपी भागने की कोशिश करने लगा लेकिन पुलिस ने उसे पकड़ लिया।

ज्ञानवापी: मुस्लिमों का प्रवेश रोकने की मांग पर सुनवाई 14 तक टली

एजेंसी

वाराणसी। ज्ञानवापी मामले पर शुक्रवार को वाराणसी की अदालत में सुनवाई हुई। मुस्लिमों के प्रवेश पर रोक की अर्जी पर हुई सुनवाई फिलहाल 14 जुलाई तक टल गई है। परिसर को हिंदुओं को सौंपने समेत तीन बिंदुओं पर याचिका सिविल जज (फास्ट ट्रैक) कोर्ट में दाखिल की गई है। विश्व वैदिक सनातन संघ सहित तीन अन्य लोगों की ओर से यह अर्जी दी गई है। प्रतिवादी ने अदालत में आपत्ति दर्ज करने के लिए समय मांगा। इसके बाद अदालत ने अगली सुनवाई के लिए 14 जुलाई की तिथि तय कर दी है। विश्व वैदिक सनातन संघ की

महासचिव और आदि विश्वेश्वर की वाद मित्र किरण सिंह, वादी विकास साह व विद्याचंद ने अदालत में 77 पेज और 122 पैरा में वाद दिया था। उसमें मांग की गई है कि मुस्लिम पक्ष को ज्ञानवापी परिसर में प्रवेश से प्रतिबंधित किया जाए, ज्ञानवापी परिसर हिन्दुओं को पूजा-पाठ करने के लिए सौंपा जाए और भगवान आदिविश्वेश्वर की प्रतिदिन पूजा-अर्चना तत्काल शुरु की जाए। वादी ने कोर्ट कमीशन कार्यवाही की रिपोर्ट की भी दलील दी। मामले में सुनवाई 30 मई को होनी थी, लेकिन जिला जज ने मुकदमे को फास्ट ट्रैक कोर्ट महेन्द्र कुमार पांडेय की अदालत में स्थानांतरित कर दिया।

फास्ट ट्रैक कोर्ट में सुनवाई पर वादी ने अपना पक्ष रखना शुरू किया तो प्रतिवादी अधिवक्ता ने विरोध किया कि उन्हें वाद की प्रति उपलब्ध नहीं कराई गई है।

वाद पत्र की प्रति मिलने के बाद प्रतिवादी अधिवक्ता ने समय देने का अनुरोध किया। अदालत ने जून में सिविल की सुनवाई बंद रहने के ध्यान में रखते हुए आठ जुलाई की तिथि निर्धारित कर दी थी।

पबजी के लिए की मासूम की हत्या, मां-बाप समेत हत्यारा गया जेल

देवरिया। उत्तर प्रदेश के देवरिया में अपहरण कर मासूम की हत्या करने वाले पबजी के लती हत्यारे को उसके मां-बाप समेत पुलिस ने शुक्रवार को जेल भेज दिया। पुलिस ने मासूम के पिता की तहरीर पर दर्ज मुकदमें को तरमीम करते हुए हत्या समेत अन्य धाराओं में तीनों को जेल भेजा है। वहीं दादा समेत तीन लोगों को पुलिस ने छोड़ दिया।

देवरिया में लार क्षेत्र के हरखौली निवासी गोरख यादव दवाखाना चलाने के साथ ही प्राइवेट प्रेक्टिस करते हैं। उनकी तीन बेटी और एक बेटा संस्कार यादव 6 वर्ष का था। संस्कार गांव के ही नरसिंह शर्मा से उनके घर जाकर ट्यूशन पढ़ता था। प्रतिदिन की भांति वह बुधवार को ट्यूशन पढ़ने के लिए गया था। शाम को संस्कार यादव वापस घर नहीं पहुंचा तो परिजन परेशान हो कर उसको ढूंढ़ने लगे। इस बीच संस्कार की बहन भाई का पता लगाने के लिए शिक्षक के घर पहुंची। पूछताछ में ट्यूशन टीचर ने बताया कि संस्कार आज पढ़ने नहीं आया था। यह सुन परिजन परेशान हो उठे और उसकी खोजबीन शुरू कर दी। गांव के आधा दर्जन लोग बाइक लेकर बालक की तलाश करने लगे।

इसी बीच गांव के दक्षिण तरफ एक पुलिया के पास से एक कॉपी मिली जिसमें एक पत्र था। पत्र में लिखा था कि गोरख यादव 5 लाख रुपया की व्यवस्था करो नहीं तो तुम्हारे लड़के को नहीं छोड़ा जाएगा। यह पत्र मिलते ही परिवार सहित पूरे गांव में हड़कंप मच गया।

परिजनों ने घटना की सूचना पुलिस को दी। पुलिस ने गोरख यादव की तहरीर पर अज्ञात बदमाशों के विरुद्ध अपहरण का मुकदमा दर्ज कर जांच शुरु कर दी। मामले की गंभीरता को देखते हुए देर रात एसपी संकल्प शर्मा समेत अन्य अधिकारी भी लार थाने पर पहुंच गए। एसओजी ने ट्यूशन पढ़ाने वाले नरसिंह शर्मा और उनके परिजनों से पूछताछ शुरू की। पूछताछ में उनके पौत्र अरुण शर्मा (21) पर पुलिस का शक गहरा हो गया। पुलिस ने उससे सख्ती की तो उसने सच्चाई उगल दी। उसने बताया कि पबजी खेलने को लेकर उसके दादा-दादी उसे बराबर डॉटते रहते थे। वह उनसे रुपये मांगता था तो नाराज होते थे।

इससे परेशान होकर दोनों को फंसाने के लिए संस्कार को मार डाला।

देवरिया के एसपी संकल्प शर्मा ने बताया कि मासूम जिस शिक्षक से ट्यूशन पढ़ता था उसके पौत्र ने उसकी हत्या कर दी थी। घटना का खुलासा करते हुए हत्यारोपी युवक और उसकी मां व पिता को जेल भेज दिया गया है। मां बाप को घटना में साक्ष्य मिटाने का दोषी पाया गया है। अन्य जिन लोगों को हिरासत में लिया गया था उन्हें पूछताछ के बाद छोड़ दिया गया है।

नहर में गिरी स्कॉर्पियो, एक की मौत, एक लापता

मेरठ। मेरठ में गुरुवार शाम तेज रफ्तार स्कॉर्पियो गंगनगर में गिर गई। दो युवक शीशा तोड़कर बाहर आ गए, जबकि दो युवक लापता थे। एनडीआरएफ की टीम ने क्रेन की मदद से 17 घंटे की मशक्कत के बाद शुक्रवार सुबह स्कॉर्पियो को गंग नहर से निकाल लिया है।

स्कॉर्पियो में सवार एक युवक की मौत हो चुकी है। चालक बिहार के समस्तीपुर निवासी निरंजन को तलाशा जा रहा है। मरने वाला गुरु ग्राम निवासी देवराज है। हादसा चौधरी चरण सिंह कांवड़ पटरी मार्ग (गंगनहर पटरी) पर भोला झाल और पूठ पुल के बीच हुआ है। हादसे में दो युवकों को नहर में नहाने वाले लोगों ने बचा लिया। इसमें एक युवक काफी घबराया हुआ था। लड़खड़ाती जुबान से उसने बताया कि पिकअप को ओवरटेक करने के दौरान हादसा हुआ। वह गाड़ी का शीशा तोड़कर बाहर निकला है। बिहार के समस्तीपुर का रहने वाला निरंजन, गुरुग्राम का देवराज, ओमप्रकाश और धर्मेंद्र हरिद्वार एक कंपनी में मीटिंग करने जा रहे थे। गाड़ी की स्पीड काफी तेज थी।

भोला झाल और पूठ पुल के बीच पिकअप को ओवरटेक करने के चक्कर में स्कॉर्पियो गंगनगर की रेलिंग तोड़ते हुए उसमें गिर गई। हादसा इतना जबरदस्त था कि नहर में नहा रहे लोग सहम गए। आनन-फानन में लोगों ने मामले की सूचना पुलिस को दी। साथ ही नहर में गिरे युवकों को बचाने का प्रयास शुरू किया।

25 से 31 जुलाई तक सभी जिलों में बिजली महोत्सव

लखनऊ। आजादी के अमृत महोत्सव के तहत प्रदेश के सभी जिलों में बिजली महोत्सव एवं ऊर्जा दिवस मनाया जाएगा। यह कार्यक्रम 25 से 31 जुलाई तक निर्धारित किया गया है। इस महोत्सव में 75 वर्ष की उपलब्धियों पर चर्चा के साथ ही अगले 25 वर्ष के रोडमैप पर भी चर्चा की जाएगी।

कार्यक्रम स्थल पर कुसुम योजना, प्री-पेड स्मार्ट मीटर, रूफ टॉप सोलर योजना, उपभोक्ता अधिकार, विद्युत उत्पादन, पारेषण आदि पर नुक्कड़ नाटकों का आयोजन होगा। इन कार्यक्रमों में मंत्री, सांसद और विधायक उपस्थित रहेंगे। प्रमुख सचिव ऊर्जा एवं पावर कारपोरेशन के चेयरमैन एम. देवराज ने बिजली महोत्सव के संबंध में विस्तृत दिशा निर्देश जारी किए हैं।

उन्होंने अधिकारियों को निर्देश दिए हैं कि सौभाग्य योजना, दीन दयाल उपाध्याय ग्राम ज्योति योजना, वन नेशन वन ग्रिड आदि का प्रदर्शन करने, लघु फिल्म दिखाने को कहा है। सरकार द्वारा संचालित योजनाओं के क्रियान्वयन में अच्छा कार्य करने वाले कार्मिकों को सम्मानित करने, सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन करने, बिजली पर प्रदर्शनी लगाने, आयोजन स्थल पर आने के लिए लोगों को प्रेरित करने, आयोजन में विद्यार्थियों को बिजली से संबंधित जानकारी देने के निर्देश दिए हैं।

मासूम को स्कूल में ही बंद कर घर चले गए शिक्षक

सुखपुरा (बलिया)। बलिया में शिक्षकों की बड़ी लापरवाही सामने आई है। यहां के बेरुआरबारी के प्राथमिक विद्यालय सुखुपरा नम्बर-एक में गुरुवार को एक बच्चे को स्कूल के कमरे में ही बंद कर शिक्षक घर चले गये। घंटों बाद भी जब बच्चा घर नहीं पहुंचा तो परिजन खोजबीन में जुट गये। इसी बीच बच्चे के रोने की आवाज सुनकर स्कूल के आसपास खेल रहे युवकों ने बच्चे को अंदर देखा। इसके बाद ताला तोड़कर बच्चे को बाहर निकाला। शिक्षकों की इस लापरवाही से परिजनों व ग्रामीणों में नाराजगी है। सुखपुरा गांव के बाबा के पोखरा निवासी रमेश राजभर का पुत्र आदित्य प्राथमिक स्कूल सुखपुरा नम्बर एक में कक्षा एक का छात्र है।

मुर्मू उत्तर प्रदेश में प्रचार के लिये लखनऊ पहुंची

लखनऊ। राष्ट्रपति पद के लिये आगामी 18 जुलाई को हो रहे चुनाव में सत्तारूढ़ राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (राजग) की उम्मीदवार द्रोपदी मुर्मू शुक्रवार को उत्तर प्रदेश में अपने प्रचार अभियान के तहत लखनऊ पहुंच गयी हैं। उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ, भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष स्वतंत्र देव सिंह, उपमुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य और ब्रजेश पाठक के अलावा राजग के अन्य सहयोगी दलों के नेताओं ने हवाईअड्डे पर उनका स्वागत किया। राजग के घटक दलों के नेताओं का समर्थन जुटाने के लिये आहूत बैठक में हिस्सा लेने हेतु रवाना हो गयीं।

उदयपुर घटना पर विहिप नेता का विवादित बयान- हमारे एक आदमी को मारेंगे तो हम 10 मारेंगे

नई दिल्ली। उदयपुर में बीते दिनों हुई मानवता को शर्मसार कर देने वाली घटना ने पूरे देश के हिलाकर रख दिया है। लोग कन्हैयालाल के हत्यारों को कड़ी से कड़ी सजा देने की मांग कर रहे हैं। इसी बीच विश्व हिंदू परिषद (विहिप) की तरफ से उदयपुर घटना पर भड़काऊ बयान सामने आया है। विहिप के प्रांत मंत्री डॉक्टर राजकमल गुप्ता ने एक प्रेस कॉन्फ्रेंस के दौरान कहा कि यहां पर अगर कोई हमारे एक आदमी को मारेगा तो हम उनके 10 लोगों को मारेंगे। यह प्रेस कॉन्फ्रेंस मुरादाबाद के सिविल लाइन में हुई जहां विहिप के और भी कई पदाधिकारी मौजूद थे।

विहिप नेता ने पत्रकारों से कहा कि जिस तरह से कांग्रेसी सरकारों के प्रदेशो में हिन्दुओं की हत्याएं हो रही है अगर कोई उत्तर प्रदेश में एक हिन्दू को मारेगा तो हम उनके 10 को मारेंगे। उन्होंने कहा कि देश के किसी भी हिंदू को कहीं से भी धमकी दी जाती है तो इसकी शिकायत बजरंग और विहिप के कार्यकर्ताओं से करें। इसके लिए अलग-अलग प्रांत की ओर से हेल्पलाइन नंबर जारी किया गया है। मुरादाबाद के अलावा विहिप की प्रेस कॉन्फ्रेंस प्रयागराज में भी हुई। विहिप के क्षेत्रीय संगठन मंत्री (पूर्वी उत्तर प्रदेश) गजेंद्र ने यहां पत्रकारों से कहा कि इन घटनाओं के जरिए उदारवादी विचारों की स्वतंत्रता और धर्मनिरपेक्षता को चुनौती दी जा रही है जिसे विश्व हिंदू परिषद और बजरंग दल स्वीकार करता है। उन्होंने कहा कि धमकियों के शिकार हिंदुओं को आगे आकर तत्काल स्थानीय पुलिस को इसकी सूचना देनी चाहिए और शिकायत दर्ज करानी चाहिए। आपको बता दें कि राजस्थान के उदयपुर में दर्जी कन्हैयालाल की हत्या के बाद अब विश्व हिंदू परिषद ने देश भर में हिंदुओं की सहायता के लिए कुछ हेल्प लाइन नंबर जारी किए हैं।

डायरिया फैलने के बाद एक्शन में एके शर्मा

डिसीज प्रोन इलाकों का दौरा करें नगर आयुक्त, जिम्मेदारों के खिलाफ दिए कड़े निर्देश

एजेंसी

लखनऊ। लखनऊ में डायरिया के बढ़ते प्रकोप के बीच अफसरों और प्रशासन के हरकत में आने के बाद अब विभागीय मंत्री भी सक्रिय हुए है। प्रदेश के नगर विकास और ऊर्जा मंत्री एके शर्मा ने राजधानी के पॉश इलाकों में गिने जाने वाले अलीगंज समेत आस पास के मोहल्लों में सतर्कता बरतने के निर्देश दिए है।

मंत्री ने अलीगंज के फतेहपुर गांव में दूषित पेयजल के कारण फैले गंभीर डायरिया संक्रमण को लेकर अफसरों को दिशा निर्देश दिए। स्थानीय लोगों की समस्याओं का संज्ञान लेकर मंत्री एके शर्मा ने नगर आयुक्त इंद्रजीत सिंह को प्रभावित क्षेत्र में दौरा करने जे बाद पीड़ित लोगों की हर संभव मदद करने की बात कही।

मंत्री ने इस मुहिम में जिला प्रशासन और स्वास्थ्य कार्मिकों का भी सहयोग लेने के निर्देश दिए है।

जिम्मेदारों के खिलाफ एक्शन

नगर विकास मंत्री एके शर्मा ने कहा कि प्रभावित क्षेत्र में जब तक साफ पानी की आपूर्ति संचालित नहीं हो जाती, वहां पर साफ पानी की वैकल्पिक व्यवस्था के लिए पेयजल

टैंकर की व्यवस्था सुनिश्चित कराई जाए। लोगों को और बीमारियों की चपेट में आने से बचाने के लिए नियमित रूप से प्रभावित क्षेत्र में फॉगिंग कराई जाए। उन्होंने कहा कि बीते सवालों में जहां पर भी ऐसी बीमारियां फैली हैं उन सभी स्थानों का स्थलीय निरीक्षण करा लिया जाए। उन्होंने इस मामले में दोषी अधिकारियों तथा साफ सफाई में लापरवाही बरतने वाली कार्यदायी संस्था पर सख्त कार्रवाई करने के भी निर्देश दिए हैं।

डीएम भी पहुंचे थे निरीक्षण के लिए

लखनऊ डीएम सूर्यपाल गंगवार और विधायक डॉ. नीरज बोरा फतेहपुर गांव का निरीक्षण करने गुरुवार को पहुंचे थे। इस दौरान डीएम के निर्देश पर फतेहपुर गांव की ब्रांच पाईपलाइन को बन्द कराकर पेयजल टैंकरों से पेयजल उपलब्ध कराया जा रहा है। विधायक नीरज बोरा ने वर्तमान पेयजल पाईपलाइन के स्थान पर नयी पेयजल पाईपलाइन डालने की बात कही। साथ ही जलकल विभाग ने स्थानीय लोगों को निजी पानी की टंकी की सफाई कराने की भी बात कही गई। डीएम ने पूरे इलाके में रोग पर नियंत्रण होने तक पेयजल टैंकरों से ही जलापूर्ति देने के निर्देश दिए।

21वीं सदी में उस ऊंचाई को हासिल करेंगे जिसका देश हकदार: मोदी

नयी दिल्ली। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने देश के सर्वसमावेशी विकास पर जोर देते हुये आज कहा कि 21वीं सदी में उस ऊंचाई को हासिल किया जायेगा जिसका भारत हकदार है।

श्री मोदी ने समावेशिता के माध्यम से विकास, विकास के माध्यम से समावेशिता विषय पर आज यहां आयोजित प्रथम अरूण जेटली स्मृति व्याख्यान को संबोधित करते हुये कहा आज का दिन मेरे लिए अपूर्णीय क्षति और असहनीय पीड़ा का दिन है। मेरे घनिष्ठ मित्र और जापान के पूर्व प्रधानमंत्री शिंजो आबे जी अब हमारे बीच नहीं है। मेरे मित्र होने के साथ ही वह भारत के भी सच्चे दोस्त थे। उनके कार्यकाल में दोनों देशों की साक्षी विरासत खूब आगे बढी है। जापान के सहयोग के जो भारत के विकास में काम हो रहे उसके लिए श्री आबे हमेशा याद किये जायेंगे। आज का यह आयोजन मेरे और घनिष्ठ मित्र अरूण जेटली जी को समर्पित है। उनको याद करने पर बहुत सी बाते याद आती है। उनके बोलने की अदा से हम सब कायल है। उनका व्यक्तित्व विविधता से भरा था। आज हर कोई अरूण जी को याद करते हैं। जो विषय वस्तु रखा गया है वह सरकार का मूल मंत्र है।

श्री मोदी ने कहा कि सरकारी और

निजी दोनों क्षेत्रों पर भरोसा करने का मौका है जिससे विकास आगे बढ़ रहा है। विकास से जुड़ा हर क्षेत्र तेजी से आगे बढ़ रहा है। 21वीं सदी में उस ऊंचाई को हासिल करेंगे जिसका भारत हकदार है। चुनौतियां है तो उसका 130 करोड़ जबाव भी है। समावेशन के बल पर विकास को हासिल करना है।

उन्होंने कहा कि बगैर समावेशन का नन्न तो विकास संभव है और बगैर विकास के समावेशन के लक्ष्य को भी हासिल नहीं किया जा सकता है। इसके लिए सरकार ने सबके समावेशन पर जोर दिया है। पिछले आठ वर्षों में समावेशन के लिए जिस तरह से काम किया गया है वैसा उदाहरण दुनिया में कहीं भी नहीं मिलेगा। देश में नौ करोड़ महिलाओं को गैस के कनेक्शन दिये गये हैं। बीते आठ वर्ष में भारत ने 10 करोड़ से अधिक शौचालय बनाकर गरीबों को दिया है जो दक्षिण कोरिया की आबादी से दोगुना है। 45 करोड़ से अधिक जनधन खाते खोले गये हैं। गरीबों को तीन करोड़ पक्के मकान दिये गये हैं। भारत में कुछ वर्ष पहले आयुष्मान भारत योजना शुरू की गयी। इसकी वजह से 50 करोड़ से अधिक गरीबों को पांच लाख रुपये तक का मुक्त उपचार मिलना सुनिश्चित हुआ है। 3.5 करोड़ लोगों ने इसका उपयोग कर उपचार कराया है। इसमें समावेशन पर जोर दिया गया है ताकि गरीबों को भी आरोग्य के मामले में अच्छी सुविधा मिले। जो पहले अलग से अब उन्हें विकास की मुख्यधारा से जोड़ा गया है। देश की एक तिहाई लोगों को अब आयुष्मान योजना के माध्यम से मुख्यधारा से जोड़ा गया है जिससे हेल्थकेयर क्षेत्र का कायाकल्प हो गया है।

फेडरल बैंक पर 5.72 करोड़ और बीओआई पर 70 लाख का जुर्माना

एजेंसी

मुंबई। रिजर्व बैंक (आरबीआई) ने विनियामक प्रावधानों का अनुपालन नहीं किये जाने के आरोप में फेडरल बैंक लिमिटेड पर 5.72 करोड़ रुपये और बैंक ऑफ इंडिया (बीओआई) पर 70 लाख रुपये का जुर्माना ठोका है। आरबीआई की ओर से शुक्रवार को जारी विज्ञप्ति में कहा गया है कि 31 मार्च 2020 को केंद्रीय बैंक के निरीक्षण एवं अन्य मूल्यांकन रिपोर्ट से पता चला कि फेडरल बैंक यह सुनिश्चित करने में विफल रहा कि बीमा कंपनी द्वारा बीमा ब्रोकिंग एवं कॉर्पोरेट एजेंसी सेवाओं में लगे अपने कर्मचारियों को कोई प्रोत्साहन का भुगतान नहीं किया गया है। इसके आधार पर बैंक को कारण बताओ नोटिस जारी किया गया।

नोटिस पर बैंक के उत्तर के बाद आरबीआई इस निष्कर्ष पर पहुंचा कि इस संबंध में केंद्रीय बैंक की ओर से जारी निर्देशों का अनुपालन नहीं किया गया है।

इसके बाद फेडरल बैंक लिमिटेड पर पांच करोड़ 72 लाख रुपये का जुर्माना किया गया।

भारत में वर्ष 2021 के अंत में टेलीफोन ग्राहकों की संख्या 117.84 करोड़ रही: ट्राई

नयी दिल्ली। देश में टेलीफोन ग्राहकों की संख्या वर्ष 2021 के अंत में 117.84 करोड़ रही जो वर्ष 2020 में 117.38 करोड़ थी।

भारतीय दूरसंचार विनियामक प्राधिकरण (ट्राई) ने शुक्रवार को भारतीय दूरसंचार क्षेत्र के रुझानों के बारे में वर्ष 2021 की वार्षिक रिपोर्ट जारी की।

रिपोर्ट में बताया गया कि पिछले वर्ष में इंटरनेट का इस्तेमाल करने वाले लोगों की संख्या बढ़कर 82.93 करोड़ रही जबकि वर्ष 2020 के अंत में यह संख्या 79.52 करोड़ थी। इसी अवधि में ब्रॉडबैंड का इस्तेमाल करने वालों की संख्या 74.47 करोड़ से बढ़कर 79.21 करोड़ रही।

वर्ष 2021 में मासिक प्रति उपभोक्ता कमायी (एआरपीयू) बढ़कर 108.40 रुपये हो गयी जो इससे पिछले वर्ष में 94.87 रुपये थी और मासिक उपयोग के मिनट (एमओयू) बढ़कर 834 मिनट हो गए जो वर्ष 2020 में 759 मिनट थे।

रिपोर्ट में भुगतान वाले डीटीएच परिचालकों के साथ कुल सक्रिय ग्राहकों की संख्या वर्ष 2021 के अंत में 6.85 करोड़ बतायी गयी।

आंकड़ों में बढ़ोतरी के बावजूद दूरसंचार क्षेत्र के कुल सकल राजस्व में गिरावट दर्ज की गयी। वर्ष 2021 में यह घटकर 2,68,580 करोड़ रुपये रहा जो वर्ष 2020 में 2,74,208 करोड़ रुपये था।

यह रिपोर्ट भारत में दूरसंचार सेवाओं का एक व्यापक परिप्रेक्ष्य प्रदान करती है और दूरसंचार सेवाओं के साथ-साथ डीटीएच सेवाओं के आंकड़ें प्रस्तुत करती है।

पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस मंत्रालय ने की ओएलएपी बोली के आठवें दौर की शुरूआत

एजेंसी

नयी दिल्ली। सरकार ने अन्वेषण और उत्पादन गतिविधियों में तेजी लाने के तहत ओपन एक्रेज लाइसेंसिंग कार्यक्रम (ओएलएपी) की बोली के आठवें दौर की शुरुआत कर दी है। इसमें अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रतिस्पर्धात्मक बोली प्रक्रिया के लिए 10 ब्लॉकों को पेश किया जा रहा है। पेट्रोलियम एवं प्राकृतिक गैस मंत्रालय ने शुक्रवार को एक बयान में कहा कि बोलियों को एक समर्पित ऑनलाइन ई-बोली पोर्टल पर छह सितंबर 2022 को दोपहर 12 बजे तक जमा किया जा सकता है जिसकी औपचारिक शुरुआत सात जुलाई 2022 से हो गयी। आठवें दौर के ब्लॉकों के सफल आबंटन से 36,316 वर्ग किलोमीटर अन्वेषण रकबा बढ़ जायेगा और ओएलएपी के तहत समग्र अन्वेषण रकबा 2,44,007 वर्ग किलोमीटर तक हो जायेगा।

बोली के लिए मौजूद ब्लॉक नौ जगहों में फैले हैं।

इनमें दो भूस्तरीय ब्लॉक हैं, चार उथले पानी वाले ब्लॉक हैं, दो गहरे पानी वाले ब्लॉक हैं और दो अत्यंत गहरे पानी वाले ब्लॉक हैं। संभावना है कि ओएएलपी के आठवें दौर से लगभग 60-70 करोड़ अमेरिकी डॉलर के बराबर का अन्वेषण कार्य तुरंत शुरू हो जायेगा।

इसमें गुजरात-खम्भात का सीबी-ओएनएचपी-2022/1 (188.52 वर्ग किलोमीटर), असम का एस-ओएनएचपी-2022/1(2057.63 वर्ग किलोमीटर), मुंबई का एमबी-ओएसएचपी-2022/1 (6059.94 वर्ग किलोमीटर), कच्छ का जीके-ओएसएचपी -2022/1 (765.54 वर्ग किलोमीटर), केरल-कोंकण का केके- ओएसएचपी -2022/1 (6717.56 वर्ग किलोमीटर), बंगाल-पूर्णिया का बीपी-ओएसएचपी -2022/1 (5754.92 वर्ग किलोमीटर), सौराष्ट्र का जीएस-डीडब्लूएचपी-2022/1 (2742.7 वर्ग किलोमीटर), केरल-कोंकण का केके- डीडब्लूएचपी--2022/1 (1112.71 वर्ग किलोमीटर), कृष्णा गोदावरी का के जी-यूडीडब्लूएचपी-2022/1 (1199.64 वर्ग किलोमीटर) और महानदी का एमएन- यूडीडब्लूएचपी -2022/1 (9717.34 वर्ग किलोमीटर) का ब्लॉक है।

हाइड्रो-कार्बन अन्वेषण और लाइसेंसिंग नीति को 30 मार्च, 2016 को लागू किया गया था। उसके बाद से अब तक 'ओपन एक्रेज लाइसेंसिंग' कार्यक्रम के सात दौर पूरे हो चुके हैं। साथ ही 134 अन्वेषण और उत्पादन ब्लॉकों को जारी किया जा चुका है। ये सभी ब्लॉक 2,07,691 वर्ग किलोमीटर के रकबे में स्थित हैं और 19 जमीन के निचले स्तर सम्बंधी बेसिनों में फैले हैं। हाइड्रोकार्बन अन्वेषण और लाइसेंसिंग नीति (हेल्प) राजस्व साझा करने की प्रणाली है।

यह भारतीय अन्वेषण और उत्पादन सेक्टर में 'व्यापार सुगमता' को बढ़ाने का एक बड़ा कदम है। इसमें आकर्षक और उदार नियम हैं, जैसे रॉयल्टी दरें, तेल पर कोई उपकर नहीं, दूसरे वर्ग और तीसरे स्तर के बेसिनों के ब्लाकों पर लगने वाली बोली के लिये राजस्व को साझा न करने, अपनी मर्जी से ब्लॉक निर्धारित करने के लिये निवेशकों को छूट, पारंपरिक और गैर-पारंपरिक हाइड्रोकार्बन संसाधन, पूरे संविदा-काल के दौरान अन्वेषण अनुमति तथा सरल, पारदर्शी और तेज बोली और आबंटन प्रक्रिया।

शेयर बाजार तेजी के साथ बंद

मुंबई ।

मुम्बई शेयर बाजार शुक्रवार को तेजी के साथ बंद हुआ। सप्ताह के अंतिम कारोबारी दिन बाजार में यह उछाल दुनिया भर के बाजारों से मिले अच्छे संकेतों के साथ ही खरीददारी बढ़ने से आया है। दिन भर के कारोबार के बाद तीस शेयरों पर आधारित बीएसई सेंसेक्स 303.38 अंक करीब 0.56 फीसदी की बढ़त के साथ ही 54,481.84 अंक पर बंद हुआ। कारोबार के दौरान एक समय यह 448.68 अंक तक उछला था। वहीं नेशनल स्टॉक एक्सचेंज का निफ्टी भी 87.70 अंक तकरीबन 0.54 फीसदी ऊपर आकर 16,220.60 अंक पर बंद हुआ। सेंसेक्स के शेयरों में दिग्गज कंपनी लार्सन एंड टुब्रो, पावरग्रिड, एनटीपीसी, आईसीआईसीआई बैंक, एक्सिस बैंक, डॉ. रेड्डीज लैब, नेस्ले, भारती एयरटेल, इन्फोसिस और हिंदुस्तान यूनिलीवर के शेयर ऊपर आये। वहीं दूसरी ओर माजुकी इंडिया, इंडसइंड बैंक, टीसीएस और एशियन पेंट्स के शेयर गिरे हैं। एशियाई बाजारों की बात करें तो जापान का निक्की, हांगकांग का हैंगसेंग और दक्षिण कोरिया का कॉस्पी बढ़त पर रहा जबकि चीन का शंघाई कंपोजिट सूचकांक नुकसान में रहा। यूरोप के प्रमुख बाजारों में शुरूआती कारोबार में गिरावट रही जबकि अमेरिकी बाजार में तेजी आई। बाजार जानकारों के अनुसार इस तेजी का कारण जिंसों के दाम में गिरावट और मुद्रास्फीति

में कमी है। इससे केंद्रीय बैंक नीतिगत दर बढ़ाने की गति धीमी होगी। इसके अलावा सौदे को पूरा करने के लिये की गयी खरीददारी से भी बाजार पर सकारात्मक प्रभाव पड़ा है।

महिंद्रा हॉलिडेज की दो-तीन साल में 1,000 कमरे जोड़ने की योजना

मुंबई । महिंद्रा हॉलिडेज एंड रिसॉर्ट्स इंडिया लिमिटेड (एमएचआरआईएल) की अगले दो-तीन साल में कम-से-कम 1,000 कमरे जोड़ने की योजना है। कंपनी के वरिष्ठ अधिकारी ने कहा है कि कंपनी की अगले कुछ वर्षों में नई परियोजनाएं शुरू करने, मौजूदा सुविधाओं के विस्तार और अधिग्रहण के जरिये कमरों की संख्या में खासी बढ़ोतरी करने की योजना है। उन्होंने कहा, कंपनी कमरों की संख्या में तगड़ी वृद्धि के लिए प्रयासरत है। हमारी योजना अगले दो-तीन साल में कम-से-कम 1,000 कमरे जोड़ने की है। एमएचआरआईएल नई परियोजनाओं, अधिग्रहण और पट्टे के जरिये इस लक्ष्य को हासिल करना चाहती है। कंपनी ने पिछले दो साल में 800 से अधिक कमरे जोड़े हैं। उन्होंने कहा कि कंपनी ने अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी अपनी मौजूदगी बढ़ाई है। अब इंडोनेशिया के बाली, श्रीलंका के बेन्टोटा और थाइलैंड के पट्टाया जैसे शहर भी उसकी सूची में शामिल हो गए हैं।

सोने में उछाल, चांदी नीचे आयी

नई दिल्ली । घरेलू बाजार में सोने की कीमतें बढ़ी हैं जबकि चांदी नीचे आयी है। दिल्ली सर्राफा बाजार में शुक्रवार को सोना 97 रुपये बढ़कर 50,613 रुपये प्रति 10 ग्राम पहुंच गया। वहीं गत कारोबारी दिवस में सोना 50,516 रुपये प्रति 10 ग्राम पर बंद हुआ था हालांकि, चांदी 303 रुपये नीचे आकर 56,540 रुपये प्रति किलोग्राम तक फिसल गयी। पिछले कारोबारी सत्र में चांदी 56,843 रुपये प्रति किलोग्राम पर बंद हुई थी। अंतरराष्ट्रीय बाजार में सोना तेजी के साथ ही 1,742 डॉलर प्रति औंस पर कारोबार कर रहा था जबकि चांदी 19.20 डॉलर प्रति औंस पर बनी थी।

घरेलू एयरलाइन कंपनियों को दी मोदी सरकार ने राहत, बुनियादी उत्पाद शुल्क से राहत दी

नई दिल्ली । एटीएफ की बढ़ती कीमत से परेशान हो रही घरेलू एयरलाइन कंपनियों के लिए अच्छी खबर है। वित्त मंत्रालय ने अंतरराष्ट्रीय उड़ानों का संचालन करने वाली घरेलू एयरलाइंस को तेल विपणन कंपनियों से विमान ईंधन (एटीएफ) की खरीद पर 11 प्रतिशत बुनियादी उत्पाद शुल्क से राहत दे दी है। मंत्रालय ने अधिसूचना में कहा कि घरेलू एयरलाइंस को अंतरराष्ट्रीय उड़ानों के संचालन के लिए बेचे जाने वाले एटीएफ पर बुनियादी उत्पाद शुल्क नहीं वसूला जाएगा। यह फैसला एक जुलाई से ही लागू हो गया है। सरकार ने गत एक जुलाई को विमान ईंधन के निर्यात पर छह रुपये प्रति लीटर की दर से विशेष अतिरिक्त उत्पाद शुल्क लगाने की घोषणा की थी। उसके बाद संदेह पैदा हुआ था कि अंतरराष्ट्रीय उड़ानों का संचालन करने वाली घरेलू एयरलाइंस पर यह शुल्क लागू होगा या नहीं। तेल विपणन कंपनियों की राय थी कि एटीएफ के निर्यात पर उत्पाद शुल्क लगने के बाद अंतरराष्ट्रीय उड़ानों वाली घरेलू एयरलाइंस को 11 प्रतिशत की दर से बुनियादी उत्पाद शुल्क देना होगा। लेकिन वित्त मंत्रालय ने इस पर साफ किया है कि अंतरराष्ट्रीय उड़ानों के लिए घरेलू एयरलाइंस पर यह उत्पाद शुल्क नहीं लागू होगा। यह व्यवस्था विदेशी एयरलाइंस को उत्पाद शुल्क में दी जाने वाली छूट के अनुरूप ही होगी। केपीएमजी के कर साझेदार अभिषेक जैन ने कहा, 'विदेश जाने वाले विमान के विमान ईंधन पर उत्पाद शुल्क लागू होने से सरकार ने राहत दे दी है। यह एयरलाइन उद्योग के लिए एक स्वागत-योग्य कदम है।'

दो शेयर में आई तेजी से भारतीय बिग बुल झुनझुनवाला की संपत्ति एक दिन में 1,061 करोड़ रुपये बढ़ी

मुंबई ।

शेयर बाजार से कमाई कर अरबों की दौलत जुटाने वालों में राकेश झुनझुनवाला का नाम पहली कतार में आता है। इसलिए उन्हें भारतीय शेयर बाजार का बिग बुल भी कहा जाता है। झुनझुनवाला ने खिताब को एक बार फिर से सही साबित किया है। उनकी होल्डिंग में शामिल ज्यादातर शेयरों में गुरुवार को तेजी देखने को मिली, लेकिन 02 स्टॉक में ऐसी शानदार उछाल आई कि एक ही दिन में झुनझुनवाला की दौलत करीब 1,061 करोड़ रुपये बढ़ गई। झुनझुनवाला के पोर्टफोलियो में सबसे ज्यादा वैल्यू वाले दो स्टॉक टाइटन और स्टार हेल्थ एंड एलाइड इंश्योरेंस हैं। गुरुवार के कारोबार में इन दोनों स्टॉक में बंपर उछाल देखने को मिली। टाटा समूह की कंपनी टाइटन के शेयरों में करीब 08 फीसदी तक की तेजी देखने को मिली, तब स्टार हेल्थ का शेयर 16 फीसदी से ज्यादा उछलने में कामयाब रहा। भारत के वारेन बफेट के नाम से मशहूर झुनझुनवाला की टोटल नेटवर्थ में इन दो शेयरों का बड़ा योगदान है। बीएसई पर गुरुवार को टाइटन का शेयर 114.60 रुपये चढ़कर 2,128 रुपये पर बंद हुआ था। कारोबार के दौरान यह एक समय 2,170.95 रुपये तक गया था, इसके हिसाब से इसकी इंट्रा-डे उछाल 7.8 फीसदी तक रही। पिछले एक साल में टाइटन का शेयर 23 फीसदी से ज्यादा मजबूत हुआ है। अभी इसका मार्केट कैप 1,88,920 करोड़ रुपये है। इसका 52-वीक का हाई 2,767.55 रुपये है, जबकि 52-वीक लो 1.661.85 रुपये है। कंपनी के शेयरहोल्डिंग पैटर्न को देखने में इसमें झुनझुनवाला और उनकी पत्नी के पास 5.05 फीसदी हिस्सेदारी है। इसका मतलब हुआ कि झुनझुनवाला परिवार के पास टाइटन के 4,48,50,970 शेयर हैं।

टाइटन ने चालू वित्तीय साल की पहली तिमाही यानी अप्रैल-जून के दौरान बिक्री में जबरदस्त उछाल दर्ज की। इस दौरान कंपनी की बिक्री 205 फीसदी बढ़ी है। कंपनी ने हर कैटेगरी में शानदार परफॉर्म किया। जबरदस्त रिजल्ट के चलते गुरुवार को इसके शेयरों में भारी खरीदारी देखने को मिली। इस कारण टाइटन के शेयरों ने छलांग लगा दी। सिर्फ

टाइटन की गुरुवार की उड़ान से झुनझुनवाला की दौलत 513.99 करोड़ रुपये बढ़ी। दूसरी ओर गुरुवार को स्टार हेल्थ का शेयर बीएसई पर 54.25 रुपये चढ़कर 530.20 रुपये पर बंद हुआ। अभी इसका मार्केट कैप करीब 30,544.83 करोड़ रुपये है। कंपनी में राकेश झुनझुनवाला के पास 82,882,958 शेयर हैं यानी 14.40 फीसदी हिस्सेदारी है। वहीं उनकी पत्नी रेखा के पास 3.11 फीसदी यानी 17,870,977 शेयर हैं। इस तरह दोनों के पास मिलाकर स्टार हेल्थ की 17.5 फीसदी हिस्सेदारी यानी 100,753,935 शेयर हैं। इसमें आई तेजी से गुरुवार को झुनझुनवाला की दौलत में 546.59 करोड़ रुपये का इजाफा हुआ।

जीएमआर के संयुक्त उद्यम ने इंडोनेशिया के मेडन हवाई अड्डे का परिचालन शुरू किया

मुंबई । जीएमआर समूह के संयुक्त उद्यम अंगकासा पुरा एविआसी (एपीए) ने इंडोनेशिया के मेडन में 'कुआलानामु अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डा (केएनएम) का परिचालन शुरू कर दिया है। कंपनी ने इसकी जानकारी दी। एपीए, जीएमआर एयरपोर्ट्स लिमिटेड और इंडोनेशिया के सरकारी स्वामित्व वाले हवाई अड्डा परिचालक पीटी अंगकासा पुरा II का संयुक्त उद्यम है। विज्ञप्ति के अनुसार, परियोजना के साथ जीएमआर इंफ्रास्ट्रक्चर की अनुषंगी कंपनी जीएमआर एयरपोर्ट्स ने बढ़ते इंडोनेशियाई विमानन बाजार में प्रवेश किया है। परियोजना के लिये भागीदारी 25 साल के लिए है। उत्तरी सुमात्रा के गवर्नर एदी रचमायादी और अंगकासा पुरा द्वढ्ढ के अध्यक्ष और निदेशक मोहम्मद अवलुद्दीन ने कहा कि संयुक्त उद्यम ने औपचारिक रूप से इंडोनेशिया के परिवहन मंत्री बुडी कार्य सुमादी की उपस्थिति में 'मेडन' हवाई अड्डे के परिचालन को संभाला। वर्तमान में, जीएमआर समूह दिल्ली, हैदराबाद हवाई अड्डों के साथ-साथ फिलीपीन में मैक्टन सेबू अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे (एमसीआईए) का संचालन कर रहा है। समूह हाल ही में फिलीपीन में क्लार्क हवाई अड्डे का निर्माण भी पूरा किया है। इसके अलावा यह ग्रीस के क्रेते में एक नया हवाई अड्डा भी बना रहा है।

डॉलर की यूरो को कड़ी शिकस्त

न्यूयॉर्क । दुनिया की 2 सबसे बड़ी मजबूत मुद्रा अमेरिकी डॉलर और यूरोप एक दूसरे के मुकाबले में बराबरी पर खड़े हो गए हैं। यूरो मुद्रा में भारी गिरावट देखने को मिल रही है। वहीं अमेरिकी डॉलर मजबूती के साथ आगे बढ़ रहा है। लगभग 20 बरस के बाद डॉलर और यूरो लगभग एक ही स्तर पर आकर खड़े हो गए हैं। यूरो की गिरावट थम नहीं रही है। अभी भी गिरावट की आशंका बनी हुई है। यूरोप में ऊर्जा संकट और बांड मार्केट को लेकर यूरोपियन सेंट्रल बैंक की नीतियों के कारण यूरो में जबरदस्त गिरावट देखने को मिल रही है। यूरोपीय देशों में ऊर्जा संकट जल्द खत्म होने की संभावना भी नहीं है। ऐसी स्थिति में यूरो मुद्रा लगातार अंतरराष्ट्रीय बाजार में गिरावट की ओर है। अमेरिका में ब्याज की दरें बढ़ जाने से अंतरराष्ट्रीय बाजार में डॉलर की मांग बढ़ी है। जिससे डॉलर मुद्रा मजबूत हुई है। वहीं यूरोपीय सेंट्रल बैंक ने अभी तक ब्याज दरों में कोई वृद्धि नहीं की है। जिसके कारण यूरो मुद्रा को दोहरी मार झेलनी पड़ रही है।

इंडिगो के पायलट्स और क्रू के कटे वेतन में 8 फीसदी का इजाफा, 1 अगस्त से लागू होगा फैसला

नई दिल्ली ।

भारत की निजी क्षेत्र की सबसे बड़ी एवं किफायती हवाई कंपनी इंडिगो ने अपने पायसट्स और केबिन क्रू की कटे हुए वेतन को 8 फीसदी दोबारा लागू करने का फैसला किया है। बढ़ी हुई सैलरी 1 अगस्त से लागू होगी। इस तरह पायलटों और केबिन क्रू के कुल वेतन को प्री-कोविड सैलरी के 16 फीसदी तक बहाल किया गया है। कोरोना वायरस संक्रमण के दौरान जब एयरलाइन ट्रैफिक घटा था तब कंपनी ने अपने कर्मचारियों की सैलरी में कटौती की थी। इंडिगो की डोमेस्टिक फ्लाइट्स में से 55 फीसदी फ्लाइट्स 2 जुलाई को देरी से चलीं, क्योंकि बड़ी संख्या में क्रू मेंबर्स ने बीमारी के नाम पर छुट्टी ले ली। सूत्रों ने बताया था कि क्रू मेंबर्स इस तरह छुट्टी लेकर एयर इंडिया के भर्ती अभियान में शामिल होने चले गए थे। इस मामले के बारे में पूछे जाने पर एविएशन रेगुलेटर डीजीसीए के प्रमुख अरुण कुमार ने रविवार को कहा, हम इसे देख रहे हैं।

4 अप्रैल को इंडिगो ने कुछ पायलट सस्पेंड कर दिए थे, जो कोविड-19 महामारी के चरम पर होने के दौरान की गई वेतन कटौती के विरोध में हड़ताल करने की योजना बना रहे थे। इंडिगो के सीईओ रोंजॉय दत्ता ने 8 अप्रैल को कर्मचारियों से एक ईमेल के जरिए कहा था कि वेतन बढ़ाना एक कठिन मुद्दा है, लेकिन एयरलाइन अपनी प्रॉफिटेबिलिटी और प्रतिस्पर्धी माहौल के आधार पर वेतन की लगातार समीक्षा और समायोजन करेगी। 4 अप्रैल को इंडिगो ने कुछ पायलट सस्पेंड कर दिए थे, जो कोविड-19 महामारी के चरम पर होने के दौरान की गई वेतन कटौती के विरोध में हड़ताल करने की योजना बना रहे थे। इंडिगो के सीईओ रोंजॉय दत्ता ने 8 अप्रैल को कर्मचारियों से एक ईमेल के जरिए कहा था कि वेतन बढ़ाना एक कठिन मुद्दा है, लेकिन एयरलाइन अपनी प्रॉफिटेबिलिटी और प्रतिस्पर्धी माहौल के आधार पर वेतन की लगातार समीक्षा और समायोजन करेगी।

जापान की 11 कंपनियों से 1,338 करोड़ का निवेश आएगा

जयपुर ।

राजस्थान के मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने जापान की कंपनियों का आह्वान किया किया वे राज्य में पेट्रोरसायन परिसर और कौशल विकास केंद्र के निर्माण में भी निवेश करें। गहलोत ने कहा कि राजस्थान में जापान की कंपनियों ने प्रमुखता से निवेश किया है और जापानी निवेश राजस्थान में उद्यमियों के लिए प्रेरणास्रोत रहा है। राजस्थान सरकार की ओर से जापान की 11 कंपनियों से समझौता ज्ञापन (एमओयू) किए गए और गहलोत के अनुसार इससे 1,338 करोड़ रुपए का निवेश आएगा। गहलोत इन एमओयू पर हस्ताक्षर के लिए नीमराना स्थित डाईकिन जापानीज इंस्टिट्यूट ऑफ मैन्युफैक्चरिंग एक्सिलेंस (डीजेआईएमई) में आयोजित कार्यक्रम को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि जापान की कंपनियों को अब बाड़मेर में बन रहे पेट्रोरसायन परिसर, इनवेस्ट राजस्थान और कौशल विकास केंद्र के निर्माण में निवेश कर एक अध्याय और लिखना चाहिए। जापानी जोन उद्यमियों में चर्चा का विषय रहता है। जापान की 11 कंपनियों द्वारा किए गए इन एमओयू से 1,338 करोड़ रुपये का निवेश आएगा और जापान व राजस्थान के रिश्ते और ऊंचाई पर जाएंगे। उन्होंने जापान की कंपनियों से आह्वान किया कि वे पचपदरा में बन रही रिफाइनरी के पेट्रोरसायन परिसर में भी निवेश करें।

शार्ट न्यूज

मलेशिया मास्टर्स : यिंग से हारकर सिंधु बाहर

कुआला लंपुर। भारत की शीर्ष शटलर पीवी सिंधु शुक्रवार को चीनी तापेई की ताई जू यिंग से क्वार्टरफाइनल मुकाबला हारकर मलेशिया मास्टर्स से बाहर हो गयीं। टोक्यो ओलंपिक की रजत पदक विजेता यिंग ने सिंधु को एक्सियाटा एरिना में 55 मिनट चले मुकाबला में 21-13, 12-21, 21-12 से मात दी। यह सिंधु की यिंग के खिलाफ लगातार सातवीं हार है। दोनों अब तक 22 बार आमने-सामने आये हैं जिसमें सिंधु को 17 बार हार का सामना करना पड़ा है।पहले गेम में सिंधु को ताई जू का डिफेंस तोड़ने में परेशानी का सामना करना पड़ा और हाफ टाइम तक वह 9-11 से पीछे चल रही थीं। बैकहैंड शॉट का उचित प्रयोग करते हुए चीनी तापेई खिलाड़ी ने पहला गेम 21-13 से जीतकर मैच में 1-0 की लीड हासिल की। सिंधु ने दूसरे गेम में बेहतरीन फुटवर्क दिखाते हुए 11-4 की बढ़त हासिल कर ली। यिंग ने मैच में वापसी करने का प्रयास किया लेकिन शुरुआती बढ़त की बदौलत सिंधु ने दूसरा गेम 21-12 से जीत लिया। निर्णायक गेम में दोनों खिलाड़ियों के बीच कांटे की टक्कर हुई। सिंधु ने शुरुआती बढ़त हासिल करने के बाद अपनी लय खो दी और एक साथ कई पॉइंट गंवा दिये।

गुजरात इस साल करेगा राष्ट्रीय खेलों की मेजबानी

नयी दिल्ली। गुजरात इस साल 27 सितम्बर से लेकर 10 अक्टूबर तक राष्ट्रीय खेलों की मेजबानी करेगा । भारतीय ओलम्पिक संघ (आईओए) के महासचिव राजीव मेहता ने शुक्रवार को यह घोषणा करते हुए कहा,मुझे यह घोषणा करते हुए खुशी हो रही है कि गुजरात इस साल राष्ट्रीय खेलों का मेजबान होगा। मैं आईओए का शुक्रगुजार हूं कि उसने गुजरात सरकार के मेजबानी करने के प्रस्ताव को शीघ्र मंजूर कर लिया।

दिल्ली राज्य कबड्डी प्रतियोगिता 9-10 जुलाई को

नयी दिल्ली। दिल्ली राज्य कबड्डी प्रतियोगिता का आयोजन 9-10 जुलाई को सरिता विहार में किया जा रहा है। दिल्ली राज्य कबड्डी संघ के उपाध्यक्ष निरंजन सिंह ने शुक्रवार को यह जानकारी देते हुए बताया कि प्रतियोगिता पुरुष और महिला दोनों वर्गों में होगी। संघ के महासचिव सुरेंद्र सिंह के अनुसार प्रतियोगिता का उद्घाटन नौ जुलाई को सुबह दस बजे लोकसभा सांसद दक्षिण क्षेत्र रमेश बिधूड़ी और नेता प्रतिपक्ष दिल्ली विधानसभा रामवीर सिंह बिधूड़ी द्वारा किया जाएगा। पुरस्कार वितरण सांसद पूर्वी क्षेत्र गौतम गंभीर और भाजपा नेता ब्रह्म सिंह द्वारा किया जाएगा। इस मौके पर और भी गणमान्य व्यक्ति मौजूद रहेंगे।

पांच विकेट से जीता वेस्ट इंडीज

गयाना। वेस्ट इंडीज ने निकोलस पूरन (74) और काइल मेयर्स (55) की अर्द्धशतकीय पारियों की बदौलत बांग्लादेश को तीसरे टी20 में पांच विकेट से मात दी। तीन मैचों की श्रंखला का पहला मैच बारिश में धुलने के बाद वेस्ट इंडीज ने बाकी दोनों मैच जीतकर सीरीज़ 2-0 से अपने नाम की। बांग्लादेश ने टॉस जीतकर पहले बल्लेबाजी करते हुए विंडीज के सामने 164 रन का लक्ष्य रखा था, जिसे कैरिबियाई टीम ने 10 गेंदें रहते ही हासिल कर लिया। बांग्लादेश की ओर से पारी की शुरुआत करने उतरे लिटन दास ने 41 गेंदों पर तीन चौकों और दो छक्कों की बदौलत टीम को ठोस शुरुआत दिलायी। अनामुल हक (10) और शाकिब अल हसन (5) न्यून स्कोर पर आउट हो गये, लेकिन अफ़ीफ़ हुसैन ने लिटन का साथ देते हुए 50 रन की पारी खेली। अफ़ीफ़ ने 38 गेंदों की अपनी पारी में दो चौके और दो छक्के लगाये। इसके अलावा कप्तान महमूदुल्लाह रियाद ने 22(20) और मोसद्देक हुसैन ने 10(6) रन बनाये। वेस्ट इंडीज की ओर से हेडन वाल्श ने अपने चार ओवर में 25 रन देकर दो विकेट लिये जबकि रोमारियो शेफर्ड और ओडियन स्मिथ को एक-एक विकेट हासिल हुआ।

अफ्रीका की लिज़ेल ली ने अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट से सन्यास लिया

केप टाउन। दक्षिण अफ्रीका महिला क्रिकेट टीम की विस्फोटक बल्लेबाज़ लिज़ेल ली ने शुक्रवार को अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट से सन्यास लेने की घोषणा की। 30 वर्षीय ली ने यहां जारी एक बयान में कहा कि वह विभिन्न अंतरराष्ट्रीय टी20 लीग में खेलना जारी रखेंगी। साल 2021 की आईसीसी प्लेयर ऑफ द इयर ली ने अपने अंतरराष्ट्रीय करियर की शुरुआत 2013 में बांग्लादेश के खिलाफ खेली गयी टी20 श्रंखला से की थी। उन्होंने दो टेस्ट, 100 एकदिवसीय और 82 टी20 मैचों में प्रोटियाज़ टीम का प्रतिनिधित्व किया। एकदिवसीय मैचों में 3,315 रन बनाकर वह दक्षिण अफ्रीका की दूसरी सबसे ज्यादा रन बनाने वाली खिलाड़ी हैं। उन्होंने इस दौरान तीन शतक और 23 अर्धशतक भी लगाये हैं। टी20 मैचों में उन्होंने एक शतक और 13 अर्धशतकों के साथ 1,896 रन बनाये हैं। वह खेल के सबसे छोटे प्रारूप में दक्षिण अफ्रीका की सबसे ज्यादा रन बनाने वाली महिला खिलाड़ी हैं। ली ने बयान में कहा,मैं बहुत सारी मिली-जुली भावनाओं के साथ अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट से संन्यास की घोषणा करती हूं। बहुत कम उम्र से ही मैंने क्रिकेट खेला और अपने देश का उच्चतम स्तर पर प्रतिनिधित्व करना चाहा। मैं पिछले आठ वर्षों में उस सपने को जीने में सक्षम रही और मुझे लगता है कि मैंने प्रोटियाज को वह सब कुछ दिया है जो मैं दे सकती थी। उन्होंने कहा, मुझे लगता है कि मैं अपने करियर के अगले चरण के लिए तैयार हूं और दुनिया भर में घरेलू टी 20 क्रिकेट खेलना जारी रखूंगी। यह एक अविश्वसनीय यात्रा रही है। यह उन सभी के बिना संभव नहीं होता जिन्होंने मेरे अंतरराष्ट्रीय करियर के दौरान मेरा समर्थन किया है।

गुटेरेस ने जी20 को वैश्विक खाद्य संकट के कारण 'तबाही' की चेतावनी दी

संयुक्त राष्ट्र। संयुक्त राष्ट्र संघ के महासचिव एंटोनियो गुटेरेस ने शुक्रवार को जी20 देशों के समूह को इस साल कई दफा खाद्य संकट की स्थिति सामने आने के बारे में चेतावनी दी। श्री गुटेरेस ने जी20 विदेश मंत्रियों की बैठक में अपने एक वीडियो संदेश में कहा, इस साल कई बार वैश्विक खाद्य संकट के जोखिम का सामना करना पड़ सकता है। अगला साल और भी खतरनाक साबित हो सकता है। श्री गुटेरेस ने कहा कि यूक्रेन संघर्ष का दुनिया के समक्ष आई कई अन्य मुसीबतों में योगदान रहा है, जो सामाजिक और आर्थिक तबाही का कारण बन सकता है। संयुक्त राष्ट्र प्रमुख का मानना है कि खाद्य उत्पादों की कीमतों में हो रही तेजी से वृद्धि और कुपोषित लोगों की संख्या में हो रही बढ़ोतरी के पीछे यूक्रेन संकट जिम्मेदार है। श्री गुटेरेस ने मंत्रियों से कहा कि उर्वरकों के बिना मकई और गेहूं से चावल सहित सभी प्रमुख फसलों में कमी आ सकती है, जिससे अरबों लोग प्रभावित होंगे।

इजरायल एयरलाइंस तुर्की के लिए उड़ानें फिर से शुरू करेगी

जेरूसलम। इजरायल एयरलाइंस 15 साल के बाद तुर्की के लिए उड़ानें फिर से शुरू करने के लिए तैयार हैं। इजरायल के परिवहन और विदेश मंत्रालय की ओर से जारी बयान के मुताबिक दोनों देशों के बीच हस्ताक्षरित विमानन समझौते के तहत बाद तुर्की में विभिन्न गंतव्यों के लिए उड़ानों को फिर से शुरू करने की अनुमति दी गयी है। इज़राइली एयरलाइंस ने 15 साल पहले सुरक्षा प्रतिबंधों और बेतहाशा खर्च के मद्देनजर तुर्की के लिए उड़ानें रोक दी थी। वर्तमान में केवल तुर्की की प्रमुख कंपनियां तुर्की एयरलाइंस और पेगासस एयरलाइंस दोनों देशों के बीच मार्गों पर उड़ान भरती हैं। बयान में कहा गया है कि नया समझौता दोनों देशों के बीच विमानन संबंधों को बढ़ावा देने तथा आर्थिक और रणनीतिक संबंधों को मजबूत करने की दिशा में एक और महत्वपूर्ण कदम है। इसी सप्ताह इजरायल की अर्थव्यवस्था मंत्री ओर्ना बारबिवे ने तुर्की में इजरायल के आर्थिक और व्यापार मिशन कार्यालय को फिर से खोलने की घोषणा की थी।

बीच में मैं दबाव के कारण खेल का आनंद नहीं ले रही थी : हरमनप्रीत कौर

कोलम्बो। भारत की वनडे और टी20 अंतर्राष्ट्रीय कप्तान हरमनप्रीत कौर ने वर्तमान में अपने अच्छे फ़ॉर्म का श्रेय खुद के साथ की हुई बातचीत को दिया हैं। साथ ही उन्होंने बताया कि अब वह मैदान पर खेल का आनंद लेने लगी हैं। उन्हें इस बात की खुशी हैं कि अब उनके पास कभी भी गेंदबाज़ी करने की आज़ादी है जो पहले टीम की रणनीति और गेम प्लान के तहत संभव नहीं था।

श्रीलंका के विरुद्ध 2-1 से जीती टी20 अंतर्राष्ट्रीय सीरीज़ में महत्वपूर्ण योगदान देने के बाद हरमनप्रीत ने तीन वनडे मैचों में कुल 119 रन बनाए। इसमें तीसरे मैच में 88 गेंदों पर 75 रनों की मैच जिताऊ पारी शामिल थी जिससे भारत ने बतौर पूर्णकालिक कप्तान उनके कार्यकाल की पहली वनडे सीरीज़ को क्लीन स्वीप किया। टी20 अंतर्राष्ट्रीय सीरीज़ की तरह वनडे सीरीज़ में भी कप्तान प्लेयर ऑफ़ द सीरीज़ चुनी गई। यह स्वीकार करते हुए कि पिछले कुछ समय से वह खेल का आनंद नहीं ले रही थी, हरमनप्रीत ने बताया कि वह प्रसन्न हैं कि इस दौरे पर उनकी सभी योजनाएं सफल हुईं।

हरमनप्रीत ने कहा, मेरे लिए यह महत्वपूर्ण है कि मैं हर एक पल का आनंद लूं।

बीच में मैं आनंद नहीं ले रही थी क्योंकि मैंने बहुत दबाव बना लिया था जो किसी के साथ हो सकता है। मैं उस दौर से गुज़र रही थी लेकिन अब मैंने मज़े करने का प्लान बनाया है। मैच की स्थिति जो भी हो, मैं क्रीज़ पर खड़े रहकर टीम को योगदान दूंगी। पिछले कुछ महीनों में मैं यही करने की कोशिश कर रही हूं।

उन्होंने आगे कहा, साथ ही टीम के खेलने के अंदाज़ के देखकर मुझे और प्रसन्नता हो रही हैं। मैं हमारे तेज़ गेंदबाज़ों को मौक़े देना चाहती थी और मुझे खुशी है कि उन्होंने दोनों हाथों से इन मौक़ों को स्वीकार किया। शुरुआती ओवरों में हम हमेशा स्पिनरों पर निर्भर करते थे लेकिन उन्होंने ज़िम्मेदारी ली और नतीजे आपके सामने है। जब योजनाएं सफल होती हैं, बहुत आनंद आता है। शायद यही कारण था कि मैं खुश थी क्योंकि सब कुछ हमारी योजनाओं के अनुसार चल रहा था। दोनों सीरीज़ में हरमनप्रीत ने गेंद के साथ भी अपना योगदान दिया। अपनी ऑफ़ स्पिन से उन्होंने तीन वनडे मैचों में दो विकेट झटके। अपने करियर में 121 वनडे मैचों में उन्होंने केवल 68 में गेंदबाज़ी की हैं और 31 विकेट चटकाए हैं।

हालांकि उन्होंने इशारा किया कि आने वाले मैचों में हम उन्हें गेंदबाज़ी करते देखेंगे। तीसरे वनडे में उन्होंने पांच ओवर फेंके और चमारी अटापट्टू की महत्वपूर्ण विकेट अपने नाम की। भारतीय कप्तान ने कहा, यहां आने से पहले मैंने स्वयं खुद से बातचीत करते हुए कहा था कि मुझे अपना 100 प्रतिशत देना है और टीम के लिए रन बनाने हैं। मैं बहुत खुश हूं कि मुझे विकेट भी मिले क्योंकि मैं हमेशा से गेंदबाज़ी करना चाहती थी। मैं बहुत खुश हूं कि मैं दोनों भी विभागों में अपना योगदान दे पाई। उन्होंने आगे कहा, मैंने हमारे प्रमुख कोच (रमेश पोवार) को पहले भी कहा था कि मैं गेंदबाज़ी करने के लिए उपलब्ध हूं लेकिन वह किसी गेम प्लान के तहत संभव नहीं हो पाया। मैं भाग्यशाली थी कि (विश्व कप 2022 में भारत के) अंतिम मैच में मुझे कुछ ओवर डालने का अवसर मिला। मैं लंबे समय से तैयारी कर रही थी कि मुझे गेंदबाज़ी करनी चाहिए। मैं प्रसन्न हूं कि मुझे सफलताएं मिली।

50 के हुए सौरव गांगुली

नयी दिल्ली। भारत के पूर्व कप्तान और भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड (बीसीसीआई) के अध्यक्ष सौरव गांगुली ने शुक्रवार को अपना 50वां जन्मदिन मनाया।

कोलकाता के प्रिंस ने अपने अंतरराष्ट्रीय करियर की शुरुआत 1992 में वेस्ट इंडीज के खिलाफ गाबा में की थी। उन्होंने 1996 में अपना पहला टेस्ट मैच लॉर्ड्स में खेला जहां उन्होंने 131 रन की शतकीय पारी खेलकर लॉर्ड्स के ऑनर्स बोर्ड में अपना नाम दर्ज करवा लिया।

1972 में जन्मे गांगुली ने अपने 17 साल के क्रिकेट करियर में 113 टेस्ट और 311 एकदिवसीय मैचों में भारत का प्रतिनिधित्व किया। उन्होंने दोनों प्रारूपों में कुल 18,575 रन बनाये और 38 शतक भी ठोके।

गांगुली को उनकी दमदार बल्लेबाज़ी के अलावा दिलेर कप्तानी के लिये भी जाना जाता है।

गांगुली को आधुनिक भारतीय टीम को आकार देने का श्रेय दिया जाता है। उन्होंने 195 मैचों में भारत की कप्तानी की, जिसमें से 97 में टीम ने जीत दर्ज की।

गांगुली ने अक्टूबर 2019 में बीसीसीआई के अध्यक्ष का पद संभाला था।

गांगुली को जन्मदिन की बधाई देते हुए पूर्व भारतीय क्रिकेटर युवराज सिंह ने कहा, जन्मदिन मुबारक दादा। आप एक बेहतरीन दोस्त, एक दमदार कप्तान और एक ऐसे वरिष्ठ रहे हैं जिससे हर युवा खिलाड़ी सीखना चाहेगा।

शिखर धवन ने ट्वीट किया, जन्मदिन की ढेरों बधाई दादा। आपके अच्छे स्वास्थ और अनंत खुशियों से भरे जन्मदिन की शुभकामनाएं देता हूं।

भारतीय टीम के पूर्व स्पिनर हरभजन सिंह ने कहा, एक महान खिलाड़ी, बेहतरीन नेता, बीसीसीआई अध्यक्ष और मेरे कप्तान। जन्मदिन की बहुत शुभकामनाएं दादा, आपका आने वाला साल मंगलमय हो। आपके साथ हमेशा प्यार।

नैटवेस्ट सीरीज़ 2002 के यादगार फाइनल में मैन ऑफ द मैच रहे मोहम्मद कैफ़ ने ट्वीट किया, एक बेहतरीन बल्लेबाज से लेकर एक बेहतरीन कप्तान तक और अब पूरे भारतीय क्रिकेट का नेतृत्व कर रहे हैं, मेरे पसंदीदा कप्तान मेंटर को जन्मदिन की बहुत-बहुत शुभकामनाएं।

क्रॉक्विज़क-स्कूपस्की ने लगातार दूसरी बार जीता मिश्रित युगल खिताब

लंदन। अमेरिका की डेसिरै क्रॉक्विज़क और ब्रिटेन के नील स्कूपस्की ने ऑस्ट्रेलिया के मैथ्यू एब्डेन और सैम स्टोसुर को हराकर लगातार दूसरी बार विम्बलडन का मिश्रित युगल खिताब अपने नाम किया। क्रॉक्विज़क-स्कूपस्की की जोड़ी ने गुरुवार को खेले गये मुकाबले में ऑस्ट्रेलियाई युगल को 6-4, 6-3 के सीधे सेटों में मात दी। इससे पहले यह जोड़ी विम्बलडन 2021 का मिश्रित युगल खिताब भी जीत चुकी है। अपने घर के ग्रैंड स्लैम में अपने माता-पिता के सामने खेलने को लेकर उत्सुक स्कूपस्की ने मैच के बाद बताया कि यह जोड़ी टूर्नामेंट शुरू होने से कुछ समय पहले तक मिश्रित युगल प्रतियोगिता में हिस्सा लेने पर विचार नहीं कर रही थी।स्कूपस्की ने कहा, मुझे डेस ने आखिरी मिनट में खेलने के लिए बुलाया। हम खेलने वाले नहीं थे, इसलिए हम केवल दो सप्ताह के लिए एक टीम के रूप में रहे हैं। अगर वह मेरे साथ खेलती हैं तो हम अगले साल तीसरे खिताब के लिये प्रयास करेंगे।

हार्दिक ने युवराज का कारनामा दोहराया

एजेंसी

साउथम्पटन। आलराउंडर हार्दिक ने इंग्लैंड के खिलाफ पहले टी 20 में 51 रन बनाने के अलावा चार विकेट लेकर युवराज सिंह के कारनामे को दोहरा दिया है। युवराज के बाद हार्दिक ही एक ऐसे भारतीय खिलाड़ी हैं, जिसने एक टी20 मैच में 50 रन भी बनाए और चार विकेट भी लिए।

हार्दिक पंड्या चोटिल होने के कारण 2018 से 2020 तक क्रिकेट से दूर रहे। इस दौरान उनके करियर पर कई सवाल उठाए गए। यह भी कहा गया कि उनका करियर ज्यादा लंबा नहीं चलेगा। क्या वह पुराने हार्दिक बन पाएंगे? क्या वह चोट मुक्त रह सकते हैं? क्या वह गेंदबाज़ी कर सकते हैं? यदि हां, तो क्या वह अपनी गति और मैदान पर अपनी पुरानी तीव्रता को फिर से वापस ला सकते हैं ?

फिर आईपीएल 2022 की शुरुआत में आपने सोचा कि वह कप्तानी के दबाव को कैसे झेल पाएंगे और अपने खेल को कैसे आगे बढ़ा पाएंगे ?

सीज़न की शुरुआत में फिर आपने सोचा कि क्या वह गुजरात टाइटंस के बल्लेबाज़ी क्रम को मज़बूत बनाने के लिए अतिरिक्त दबाव ले रहे हैं और खुद बल्लेबाज़ी क्रम के सारे कार्यों को पूरा कर रहे हैं। वह नंबर तीन और चार पर बल्लेबाज़ी करते हुए पारी खत्म होने तक बल्लेबाज़ी कर रहे थे। कुल मिलाकर एक खिलाड़ी कई काम एक साथ पूरी ज़िम्मेदारी के साथ करना चाह रहा था।

शुक्रवार को हार्दिक ने ज़बरदस्त खेल दिखाया। टी20 विश्व कप के बाद भारत के लिए यह सबसे कठिनतम मैचों में एक था। इंग्लैंड की टीम इस फ़ॉर्मैट में काफ़ी अच्छी है। इस मैच में हार्दिक ने पहले अर्धशतक बनाया और फिर चार विकेट लिए। इससे पहले एक ही मैच में 50 रन बनाते हुए चार विकेट लेने का काम सिर्फ़ युवराज सिंह ने किया था।

हार्दिक ने कहा, मैं अपने क्रिकेट का आनंद ले रहा हूं। मैंने अपने शरीर पर काफ़ी काम किया है और मैं इसके लिए लगातार तैयारी कर रहा था। मैंने पिछले साल एक लंबा ब्रेक लिया था। इसी कारण से मैं इस चीज़ पर पूरा ध्यान दे रहा था कि मैं मैदान पर बढ़िया प्रदर्शन करने लिए बिल्कुल तैयार रहूं और मैं इस प्रयास में सफल रहा। मैं अपने खेल पर पूरा ध्यान देना चाहता था लेकिन एक समय ऐसा भी आया कि मुझे एक ब्रेक की आवश्यकता थी। अगर मैं अपने खेल का आनंद नहीं ले सकता हूं तो मेरा खेलना कहीं से भी सार्थक नहीं है। मेरे लिए पूरा मामला तीव्रता और प्रयास का है। जब मैंने उस मामले में संतोषजनक कार्य कर लिया तो मुझे काफ़ी संतुष्टि हुई।

हार्दिक फ़िलहाल काफ़ी बढ़िया लय में हैं। उनका करियर हालिया समय में काफ़ी सकारात्मक तरीक़े से आगे बढ़ा है। उन्होंने गुजरात की कप्तानी करते हुए आईपीएल का ख़िताब अपने नाम किया। इसके बाद आयरलैंड में भारतीय टीम का भी नेतृत्व किया। हार्दिक के अनुसार वह इस बात की फ़िक्र नहीं कर रहे हैं कि भविष्य में क्या होगा और अपने वर्तमान का आनंद ले रहे हैं।

शिंजो आबे पर गोली चलाने वाले शख्स ने खुद बनाई थी बंदूक, भागने की नहीं की कोशिश

नई दिल्ली। जापान के पूर्व प्रधानमंत्री शिंजो आबे को गोली मारे जाने के बाद देश के सुरक्षा व्यवस्था पर सवाल उठने लगे हैं। पूर्व प्रधानमंत्री पर गोली चलाने वाले को पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया है। घटना को लेकर अभी तक जो जानकारी सामने आई है उसमें ऐसा प्रतीत होता है कि शिंजो आबे पर गोलियां चलाने वाले तेत्सुया यामागामी ने हमले के लिए जिस बंदूक का इस्तेमाल किया है उसे उसने खुद ही बनाया है। जापान के पब्लिक ब्रॉडकास्टर एनएचके ने पुलिस के हवाले से अपनी रिपोर्ट में यह दावा किया है।

हमले के तुरंत बाद आरोपी को गिरफ्तार कर लिया गया। रिपोर्ट में यह भी कहा गया है कि पूर्व पीएम पर गोली चलाने के बाद भी उसने भागने की कोशिश नहीं की।

यामागामी नारा का ही रहने वाला है जहां शिंजो आबे चुनाव प्रचार के लिए एक सभा को संबोधित कर रहे थे। एनएचके के अनुसार, माना जाता है कि संदिग्ध ने लगभग 2005 तक तीन साल तक समुद्री आत्मरक्षा बल के लिए काम किया था।

प्रत्यक्षदर्शियों के अनुसार, हमलावर ने आबे पर दो गोलियां चलाईं और दूसरी गोली लगने के बाद ही पूर्व प्रधानमंत्री गिर पड़े। मौके पर मौजूद लोगों ने कहा कि शिंजो आबे जब भाषण दे रहे थे तभी पीछे से हमलावार ने अटैक कर दिया। गोली मारने के बाद हमलावर भागने की कोशिश भी नहीं की और उसी जगह खड़ा रहा। घटना के कई वीडियो भी सामने आए हैं जिसमें हमलावर नजर आ रहा है।

हमले इस्तेमाल गन की आवाज आम बंदूक से अलग थी

जापान के हंटर एसोसिएशन ने कहा कि इस्तेमाल की जाने वाली बन्दूक एक सेल्फ मॉडिफाई गन लगती है क्योंकि औमतौर पर बंदूक वैसी आवाज नहीं करती है जैसा की इस हमले के दौरान देखने औ सुनने को मिला है। दुनिया के सबसे सुरक्षित देशों में से एक माने जाने वाले जापान में यह हमला हैरान करने वाला है। जापान में बंदूक नियंत्रण के सख्त कानून लागू हैं।

2020 में दे दिया था इस्तीफा

आबे ने 2020 में यह कहते हुए प्रधानमंत्री पद से इस्तीफा दे दिया था कि उनकी एक पुरानी बीमारी फिर से उभर आई है। उन्होंने उस समय कहा था कि अपने कई लक्ष्यों को अधूरा छोड़ना उनके लिए परेशान करने वाली बात है।

उन्होंने सालों पहले उत्तर कोरिया द्वारा अगवा किए गए जापानी नागरिकों के मुद्दे, रूस के साथ क्षेत्रीय विवाद और जापान के युद्ध त्यागने वाले संविधान के संशोधन के मुद्दों को हल करने में अपनी नाकामी की बात की थी।

ईरान ने यमन में ईरानी हथियार जब्त करने के ब्रिटेन के दावे को खारिज किया

तेहरान। ईरान के शुक्रवार को यमन में ईरानी हथियारों की खेप जब्त करने के ब्रिटेन सरकार के दावे को खारिज कर दिया। मंत्रालय की वेबसाइट के अनुसार विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता नासिर कनानी ने दावे को खारिज करते हुए इसे आधारहीन और पुराना करार दिया और ब्रिटेन पर यमन युद्ध में सहभागी होने का आरोप लगाया। श्री कनानी के हवाले से कहा गया है कि ब्रिटेन सऊदी नीत सेना गठबंधन को यमन के रक्षाहीन लोगों के खिलाफ लगातार आधुनिक हथियार बेचता रहा है। यमन वर्ष 2014 से गृह युद्ध में फंसा हुआ है और ईरान समर्थित हैती विद्रोहियों ने उत्तर में कई प्रांतों पर अपना नियंत्रण कर लिया है।

शिंजो आबे को क्यों मारी गोली? गिरफ्तार शूटर ने पुलिस के सामने कबूला गुनाह

टोक्यो। जापान के पूर्व प्रधानमंत्री शिंजो आबे की शुक्रवार को एक कार्यक्रम में गोली मारकर हत्या कर दी गई। स्थानीय मीडिया ने पुलिस सूत्रों के हवाले से बताया कि आबे पर हमला करने वाला व्यक्ति काफी समय से इसकी योजना बना रहा था। उसके पास से भारी मात्रा में विस्फोटक सामान भी बरामद किया गया है। शिंजो आबे को हमलावर ने गोली क्यों मारी इसको लेकर भी खुलासा हो गया है।

पुलिस सूत्रों के मुताबिक, आबे पर हमला करने वाला व्यक्ति तेत्सुया यामागामी उनसे असंतुष्ट था और उन्हें मारना चाहता था। आबे का हत्यारा 41 वर्षीय शख्स जापानी मैरीटाइम सेल्फ-डिफेंस फोर्स का पूर्व सदस्य रह चुका है। उसने जिन गोलियों से हमला किया वे खुद से बनाई गई गोलियां थीं। अधिकारियों ने बताया कि शूटर के घर से विस्फोटक मिले हैं। 67 वर्षीय आबे को पश्चिमी जापान के नारा में शुक्रवार को भाषण शुरू करने के कुछ मिनटों बाद ही पीछे से गोली मार दी गयी थी। आबे को विमान से एक अस्पताल ले जाया गया, लेकिन उनकी सांस नहीं चल रही थी और उनकी हृदय गति रुक गयी थी। अस्पताल में बाद में उन्हें मृत घोषित कर दिया गया। पुलिस ने हमलावर तेत्सुया यामागामी को मौके से ही पकड़ लिया। हालांकि पुलिस ने हमलावर के बारे में अधिक जानकारी नहीं दी। लेकिन जापानी मीडिया रिपोर्टों में कहा गया है कि संदिग्ध ने 2005 तक सेना में तीन साल बिताए थे। जापानी मीडिया द्वारा पुलिस के हवाले से कहा गया है कि बंदूकधारी हमलावर ने अपना अपराध कबूल कर लिया है। उसने कहा कि उसने अबे को मारने की कोशिश की क्योंकि वह उनसे असंतुष्ट था। हालांकि, एक अन्य जापानी मीडिया रिपोर्ट में कहा गया है कि शूटर ने पुलिस को बताया कि उसे आबे की राजनीतिक विचारधारा के खिलाफ कोई शिकायत नहीं है।

इससे पहले गोली लगने के बाद आबे को विमान से एक अस्पताल ले जाया गया, लेकिन उनकी सांस नहीं चल रही थी और उनकी हृदय गति रुक गयी थी। अस्पताल में बाद में उन्हें मृत घोषित कर दिया गया। पुलिस ने घटनास्थल पर ही संदिग्ध हमलावर को गिरफ्तार कर लिया। घटना के बाद प्रधानमंत्री फुमियो किशिदा और उनके कैबिनेट मंत्री देशभर में अन्य प्रचार अभियानों को बीच में रोक कर तोक्यो लौट आए।

श्रीलंका : चिकित्सा विशेषज्ञों ने सरकार से की पद छोड़ने की मांग

कोलंबो। श्रीलंका के राष्ट्रीय चिकित्सा संघ ने जनता की सुरक्षा कर पाने में पूरी तरह से विफल रहने के लिए सरकार की आलोचना करते हुए कहा है कि सरकार अब बिना कोई देर किए अपना पद त्याग दे और एक सर्वदलीय सहमति से प्रशासन को बागडोर सौंपें। संघ ने एक बयान में कहा, हमने मुश्किलों से घिरे लोगों को काफी परेशानियों का सामना करते देखा है और आलम यह है कि यही अब जिंदगी का एक हिस्सा बन गया है। इन हालातों से सभी अवगत हैं लेकिन अधिकारी फिर भी आंखों पर पट्टियां बांधकर बैठे हैं। इसमें कहा गया, सरकार लोगों को सुरक्षा देने के अपने कर्तव्य का निर्वहन करने में विफल रही है। ऐसी परिस्थिति भी हम भी बिना किसी झिझक के यह बताने के लिए मजबूर हैं कि इन सभी बीमारियों के संभावित इलाज के रूप में यह जरूरी है कि देश के लिए सम्पूर्ण दिशा में ही बदलाव लाया जाए। बयान में कहा गया,वक्त प्रयास करने का नहीं, तत्काल कार्रवाई करने का है। हमारा ऐसा मानना है कि देर पहले ही बहुत हो चुकी है लेकिन कभी न होने से देर होने में ही भलाई है। एसोसिएशन के अध्यक्ष समथ डी. धर्मरत्ने और मानद सचिव ईशान डी जोयसा ने कहा कि श्रीलंका अपने सबसे खराब आर्थिक संकट का सामना कर रहा है। इससे बाहर निकालने के लिए कोई स्पष्ट समाधान नहीं होने के कारण इसे बस घसीटा जा रहा है, जिससे आखिर में इसका डूबना तय है। उल्लेखनीय है कि श्रीलंका इस वक्त विदेशी मुद्रा भंडार में भारी कमी होने की वजह से विकट आर्थिक संकट का सामना कर रहा है। यहां भोजन, ईंधन और दवाई जैसी बुनियादी चीजों की भी काफी किल्लत हो गई है।

फिलीपींस के राष्ट्रपति मार्कोस कोरोना संक्रमित हुए

मनीला। फिलीपींस के राष्ट्रपति फर्डिनेंड रोमुअलडेज मार्कोस कोरोना संक्रमित पाए गए हैं। प्रेस सचिव रोज बीट्रिक्स क्रूज-एंजेल्स ने शुक्रवार को यह जानकारी दी। सुश्री एंजेल्स ने संवाददाता को बताया कि श्री मार्कोस ने कोविड-19 एंटीजन परीक्षण करवाया जिसमें वह पॉजिटिव पाए गए। उन्होंने कहा राष्ट्रपति को हल्का बुखार है, लेकिन वह कमजोरी महसूस नहीं कर रहे।प्रेस सचिव ने कहा कि राष्ट्रपति अपने संपर्क में आने वाले व्यक्तियों को सचेत कर रहे हैं और उन्हें कोविड के नियमों का पालन करने की सलाह दी है। सुश्री एंजेल्स ने कहा कि श्री मार्कोस अब मनीला में दूतावास में अमेरिकी स्वतंत्रता कार्यक्रम में शामिल नहीं हो सकेंगे। वह हालांकि आज रात बूस्टर डोज लेने के बाद वर्चुअली स्थानीय अधिकारियों के साथ एक बैठक में शामिल होंगे।

प्रधानमंत्री पद की दौड़ में नहीं हैं जेम्स क्लेवरली

लंदन। ब्रिटेन के शिक्षा मंत्री जेम्स क्लेवरली ने कहा कि प्रधानमंत्री बोरिस जॉनसन के इस्तीफे के बाद वह प्रधानमंत्री पद की दौड़ में शामिल नहीं है। गौरतलब है कि श्री जॉनसन के गुरुवार को प्रधानमंत्री के पद से इस्तीफा देने की घोषणा की थी। उन्होंने कहा था कि वह अपने उत्तराधिकारी की नियुक्ति तक पद पर बने रहेंगे। श्री क्लेवरली ने स्काई न्यूज को बताया, नहीं, मैं प्रधानमंत्री की दौड़ में नहीं हूं। जैसा कि आप जानते हैं मेरी पत्नी कैंसर से जूझ रही है और उनका उपचार चल रहा है। मैं यह सहज महसूस कर रहा हूं कि यह मेरे लिए सही समय नहीं है और वास्तव में पार्टी में कई उम्मीदवार हैं जो कि प्रधानमंत्री पद के लिए मुझसे ज्यादा श्रेष्ठ है। पूर्व शिक्षा मंत्री मिशेल डोनेलन ने 24 घंटे के बाद गुरुवार को अपने पद से इस्तीफा दे दिया। उसी दिन श्री जॉनसन ने श्री क्लेवरली को इस पर नियुक्त कर दिया था। इससे पहले श्री क्लेवरली ने ब्रिटेन के नए शिक्षा मंत्री के रूप में यूरोप और उत्तरी अमेरिका के राज्य मंत्री के रूप में कार्य किया था। श्री जॉनसन पर 2020 और 2021 के दौरान कोविड नियमों का उल्लंघन करने और दुराचार के आरोपी क्रिस पिंचर की पार्टी के उप मुख्य सचेतक के रूप में नियुक्ति तथा अन्य श्रृंखलाबद्ध घटनाक्रम को लेकर इस्तीफे का दवाब था। पिछले सप्ताह जॉनसन सरकार के 50 से अधिक मंत्रियों ने अपने पदों से इस्तीफा दे दिया था।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक, प्रवीण कुमार सिंह द्वारा आला प्रिंटिंग प्रेस 3636 कटारा दिना बेग लाल कुआं... से मुद्रित एवं , ब्लाक नं 23 मकान नं 399 त्रिलोक पुरी दिल्ली -91 से प्रकाशित
संपादकः प्रवीण कुमार सिंह, आरएनआई नं. ·DELHIN/2011/38334, किसी भी विवाद के लिए पीआरबी एक्ट अंतर्गत उत्तरदायी, टेलीफोन नं.: 011-26700510/11 , ई-मेल : info@gauravshalibharat.com, समस्त विवादो का न्यायलय दिल्ली होगा

बारिश का घातक रोग मलेरिया

बारिश का मौसम जितना फायदेमंद है उतना ही नुकसान दायक भी है। इस मौसम में अगर सावधानी नहीं बरती गई तो किसी जानलेवा बीमारी के शिकार भी हो सकते हैं। कई बीमारियां ऐसी हैं जो बारिश के मौसम में आपका जीना मुहाल कर सकती हैं।ऐसी ही एक प्रमुख बीमारी है मलेरिया।मानसून, मच्छर और मलेरिया के असर को अगर दिमाग में बिठा लें तो बेहतर है। मलेरिया से होने वाली मौतें भले ही दिन पर दिन कम होती जा रही हों, लेकिन अभी भी देश में हर साल मलेरिया के कम से 10 लाख नए मामले सामने आ रहे हैं। इससे खुद को कैसे बचाए रख सकते हैं, आइए हम आपको बताते हैं।

क्या है इसके कारण

मलेरिया प्लाजमोडियम नामक एक परजीवी के संक्रमण से होता है। मादा एनोफिलिस मच्छर के काटने से यह संक्रमण हो जाता है। जहां कहीं भी साफ और प्राकृतिक पानी ठहरा रहता है, वहां ये मच्छर पैदा होते हैं। अभी मानसून में बारिश का पानी जगह-जगह जमा हो जाता है, वहां ये मच्छर बड़ी संख्या में पनपते हैं।

इसके लक्षण

मलेरिया होने पर तेज बुखार सहित फ्लू जैसे कई लक्षण सामने आते हैं। इनमें ठंड के साथ जोर की कंपकंपी, सिर में दर्द, मांशपेशियों में दर्द, थकावट आदि शामिल हैं। मितली, उल्टी, डायरिया जैसे लक्षण भी हो सकते हैं। खून की कमी और आंखों के पीला होने जैसी स्थितियां भी आ सकती हैं।

बचाव

मलेरिया के मच्छर साफ और एक जगह ठहरे पानी में पैदा होते हैं। मानसून में ये स्थितियां जगह-जगह बनती हैं। अपने घरों एवं उनके आसपास पानी जमा न होने दें। पानी की टंकियों, कंटेनरों और बरतनों को हमेशा ढक कर रखें। मच्छरों को भगाने वाले क्रीम, द्रवीय पदार्थ, क्वॉयल, स्प्रे, मैट आदि के प्रयोग जरूरी हैं। खिड़कियां जालीदार हों तो इन मच्छरों से काफी सुरक्षा मिलती है। वैसे तो मलेरिया रोधी दवाइयां भी हैं, लेकिन उन्हें रोज खाना पड़ता है, जो संभव नहीं। इसलिए वो विदेशी पर्यटकों के काम ही आती हैं। यहां के लोगों को हर दिन एहतियात बरतनी होती है। दैनिक जीवन की सावधानियों में पूरी बांह की शर्ट पहनना, कमरे में मच्छरदानी लगाकर सोना आदि कारगर उपाय हैं।

उपचार

हम सब जानते हैं कि सावधानी से बेहतर कोई दूसरा इलाज नहीं हो सकता। जरूरी सावधानियां बरतकर इससे काफी हद तक बचा रहा जा सकता है, फिर भी लापरवाहियों के कारण लोग इसकी चपेट में आ रहे हैं। कई दवाएं भी अब मलेरिया के इलाज में निष्प्रभावी साबित हो रही हैं, लेकिन ऐसी भी दवाओं की कमी नहीं, जिनसे मलेरिया का प्रभावी इलाज हो जाता है। मलेरिया के विशेषज्ञ के पास इसका पूरा इलाज मौजूद है। अगर जल्द इलाज शुरू किया जाए तो शरीर के जरूरी अंगों तक खून की आपूर्ति बाधित हो जाती है। प्लाजमोडियम फेल्सीपेरम परजीवी से संक्रमण का तत्काल इलाज न किया जाए तो किडनी फेल हो सकती है, दौरा शुरू हो सकता है, मानसिक रूप से विक्षिप्त होने की स्थिति, कोमा और अंत में मौत की नौबत भी आ सकती है।

हकलाने की समस्या का इलाज स्पीच थेरेपी

कई बच्चें साफ नहीं बोल पाते हैं।कई बार एक शब्द को बोलने में उनको परेशानी होती है। जैसे शब्दों श की जगह स, ल की जगह न, डम् की जगह र। ऐसे में सुनने वाले को समझ नहीं आता कि बोलना क्या चाह रहा है। शब्दों के स्पष्ट उच्चारण नहीं होने की वजह से अर्थ भी बदल जाते हैं। दरअसल हमारे गले की बनावट ऐसी है कि इससे हम खाना खाते हैं, पानी पीते हैं और सांस लेने की प्रक्रिया भी होती है। इसी से बोलते भी हैं। बोलने में हवा का इस्तेमाल होता है। कई बच्चों के जन्म से ही कंठ में बोलने वाली नली में कोई खराबी होने की वजह से वो स्पष्ट नहीं बोल पाते। इसे भाषा विज्ञान में वोकल कॉर्ड कहते हैं। यदि किसी के भी वोकल कॉर्ड में समस्या हो तो वह साफ और शब्दों को सही नहीं बोल पाता। यह समस्या तो है, लेकिन लाइलाज नहीं है।ऐसे बच्चों की मजाक बनाने से वो आगे से कम बोलना शुरू कर देते हैं, ताकि उनका मजाक न बने और इस तरह के बच्चे धीरे-धीरे बोलने से कतराने लगते हैं। कई स्कूलों में ऐसे बच्चों की बोलने, तुतलाने की समस्या को दूर करने के लिए स्पीच थेरेपिस्ट होते हैं। ये डॉक्टर या तो दवाई देकर या कुछ प्रैक्टिस के जरिए तुतलाने, अस्पष्ट बोलने की समस्या को ठीक कर देते हैं। कभी-कभी वोकल कॉर्ड को ठीक करने के लिए मामूली सा ऑपरेशन करना पड़ता है, जिससे वोकल कॉर्ड को ठीक किया जाता है। फिर ऐसे बच्चे भी शुद्ध और सही बोलने लगते हैं।

सेहत के लिए जरूरी अच्छा नाश्ता

अच्छी सेहत के लिए जरूरी है कि अच्छा नाश्ता किया जाए जिसमें कार्बोहाइड्रेट एवं लीन प्रोटीन हो। यह दिनभर की भूख को कम कर देता है जिससे वजन में कमी लाई जा सकती है। वर्जीनिया विश्वविद्यालय के प्रो. डा. डेनिएला और वेनेजुएला के डी क्लीनिकास कारकास अस्पताल के एंड्रोनोलॉजिस्ट के अध्ययन से पता चला है कि वह महिलाएं जो बिग ब्रेक फास्ट डाईट लेती हैं वह पांच गुना तक वजन कम कर सकती हैं उनके मुकाबले में जो रिस्ट्रिक्टिव लो कैलोरी डाइट लेती हैं।

नाश्ते का स्वास्थ शरीर के लिए अहम रोल है जिसे नजरअंदाज नहीं किया जा सकता। सुबह के समय शरीर का लेवल और एडरीनेलाईन उपर चला जाता है,जो खाने को खोजता है। इस समय मेटाबोलिम उपर चला जाता है और हमारे दिमाग को उसी समय ताकत ताकत की जरूरत होती है। सुबह के समय यदि नहीं खाएंगे या कम खाएंगें तो दिमाग अपने लिए ऊर्जा हासिल करने के लिए दूसरा विकल्प तलाशता है। वह एक एमरजेंसी सिस्टम का प्रयोग करता है और ऊर्जा को मासपेशियों से हासिल करता है,जिससे उत्तक नष्ट हो जाते हैं। इसके बाद जब कोई खाना खाता है तो शरीर और दिमाग हाई अलर्ट मोड पर होता है,जिससे शरीर खाने में से प्राप्त ऊर्जा को वसा के रूप में एकत्र कर लेता है जो मोटापे का कारण है। सुबह के समय ब्रेन केमिकल सिरोटोनिन लेवल अधिक होता है और खाने की इच्छा सबसे कम होती है। जैसे जैसे दिन चढ़ने लगता है सेरोटोनिन लेवल कम होने लगता है और चाकलेट और बिस्कुट खाने की इच्छा बढती है यदि आप यह चीजें खाने लगते हैं तो आपका सिरोटिन लेवल बढने लगता है और शरीर को अच्छा लगने लगता है जो एक आदत पैदा करता है।

ब्रेक्सटन हिक्स भ्रूण के लिए है फायदेमंद

ब्रेक्सटन हिक्स गर्भावस्था में होने वाली ऐठन (संकुचन) है। ब्रेक्सटन हिक्स के दौरान महिला को ऐसी शंका होने लगती है कि कहीं गर्भ में पल रहे बच्चे को सांस लेने में तकलीफ तो नहीं होगी और इस जैसे कई अन्य सवाल गर्भधारण करने वाली महिलाओं के मन उठते हैं। लेकिन ब्रेक्सटन हिक्स गर्भावस्था में होने वाली एक सामान्य घटना है और इसका बच्चे या भ्रूण पर कोई दुष्प्रभाव नहीं पड़ता। इस लेख को पढ़ें और ब्रेक्सटन हिक्स तथा भ्रूण पर इसके प्रभाव के बारे में जानें।

ब्रेक्सटन हिक्स और भ्रूण पर प्रभाव- प्रसव का समय नजदीक आने पर ब्रेक्सटन हिक्स एक आम क्रिया बन जाती है। इसे ऐसे भी कह सकते हैं कि ब्रेक्सटन हिक्स भ्रूण के लिये सहायक क्रिया है। यह क्रिया गर्भाशय के लिये रक्त प्रवाह और भ्रूण को ऑक्सीजन पहुंचाने में मदद करती है। गर्भावस्था की अंतिम अवस्था में ब्रेक्सटन हिक्स क्रिया महिला को प्रसव के लिए तैयार करने और बच्चे के सिर को योनि में नीचे जाने में सहायता प्रदार करती है। इसके विपरीत प्रसव के समय होने वाला संकुचन, गर्भाशय ग्रीवा को फैलाने में कोई सहयता नहीं करता है। सामान्यतः ब्रेक्सटन हिक्स संकुचन पीड़ा रहित होते हैं। हालांकि कुछ महिलाएं इस क्रिया के दौरान असहज सा महसूस करती हैं।

एक स्त्री रोग विशेषज्ञ द्वारा सामान्य और विकासित हो रहे भ्रूण व भ्रूण की हदय गति विविधताओं के ऊपर की गई शोध में पाया की ब्रेक्सटन हिक्स भ्रूण के लिए हानिकारक नहीं है। ब्रेक्सटन हिक्स बच्चे के लिए फायदेमंद होते हैं। ओन्लीमाईहेल्थ आपको पहले भी बता चुका है कि कुछ महिलाओं को इस दौरान असहज महसूस हो सकता है। यदि ब्रेक्सटन हिक्स के दौरान दर्द होता है तो डॉक्टर को दिखाएं। लेकिन घबराएं नहीं यह बहुत ही सामान्य घटना है। ब्रेक्सटन हिक्स आमतौर पर 30 सेकंड के लिए होते हैं और कभी- कभी हर 15 से 20 मिनट में यह क्रिया होती है। यदि दर्द निरंतर होता रहता है तो इसके अन्य कारण भी हो सकते हैं। ऐसा होने पर आप अपने चिकित्सक से सलाह लें।

स्वादिष्ट और शक्तिवर्धक आलू सूप

बारिश का मौसम है। ऐसे में चाट, पकौड़े और चटपटा खाने का मन तो करता ही है।जब खाते जाते हैं तो इस बात का ख्याल ही नहीं आता की यह कहीं ना कहीं हमारे स्वास्थ्य के लिए नुकसानदायक है।खाने के बाद बदहजमी और एसिडिटी की समस्या का सामना करना पड़ जाता है।इसलिए इस मौसम के लिए हम कुछ ऐसा लेकर आए हैं, जो स्वादिष्ट होने के साथ-साथ शक्तिवर्धक भी है। जी हां वह है पोटेटो सूप यानी आलू का सूप, खाने में जितना यमी लगता है, उतना ही सेहत के लिए फायदेमंद भी है। अगर आपको डॉक्टर ने वसा और नमक से परहेज करने के लिए कहा है तो इसमें इसकी मात्रा कम रखी जा सकती है। कई डॉक्टर तो मधुमेह नियंत्रण के लिए भी आलू के सूप की सलाह देते हैं। आइये आलू के सूप के फायदों को जानते हैं।

हड्डियां को रखता है मजबूत

सूप में पाई जाने वाली पोटेशियम की अच्छी मात्रा होने से न केवल ब्लड प्रेशर सामान्य रहता है, बल्कि हमारी हड्डियां भी सुरक्षित रहती हैं। दरअसल, उम्र के साथ हड्डियां भी कमजोर पड़ने लगती हैं। ऐसे में आलू सूप का सेवन हड्डियों के नुकसान को रोकता है। इसके अलावा आलू सूप में पाया जाने वाला कैल्शियम भी इसमें मदद करता है।एक शोध के अनुसार 18 से 50 साल के व्यक्ति को प्रतिदिन 1000 एमजी कैल्शियम की जरूरत पड़ती है, जबकि 50 वर्ष से ज्यादा उम्र वालों को हर दिन 1200 एमजी कैल्शियम लेने की सलाह दी जाती है। एक कटोरी आलू के सूप से कम से कम 178 एमजी कैल्शियम प्राप्त होती है।

दिल का रखता है ख्याल

फाइबर से भरपूर सब्जियां दिल के लिए अच्छी होती हैं। आलू सूप में आलू के अलावा शामिल की जाने वाली दूसरी सब्जियों में फाइबर की अच्छी मात्रा होती है, इसलिए बरसात में आलू सूप का सेवन कर कोरोनरी हार्ट बीमारियों से बचाव किया जा सकता है। एक शोध में पाया गया है कि आलू सूप में बड़े स्तर पर पोटेशियम की मात्र पाई जाती है, जो कि ब्लड प्रेशर को सामान्य बनाए रखने में सहायक होता है।

वजन घटाने में मददगार

आलू सूप वजन घटाने में मदद करता है। इससे सिर्फ 164 कैलोरी मिलती है। दरअसल, आलू सूप पीने के बाद काफी देर तक फुलनेस यानी पेट भरे होने का एहसास बना रहता है। ऐसे में थोड़ी-थोड़ी देर में खाने की इच्छा नहीं होती। आलू के अलावा आलू सूप में प्याज और गाजर से भी ज्यादा कैलोरी नहीं मिलती।

इसके अन्य लाभ

आलू के कई अन्य स्वास्थ्य लाभ भी हैं, जैसे आंखों की रोशनी बढ़ाना, त्वचा कोमल रखना, इम्यून सिस्टम (प्रतिरोधक क्षमता) ठीक करना आदि। दरअसल, आलू सूप में इस्तेमाल होने वाली अन्य सब्जियों जैसे कि गाजर और प्याज में विटामिन की भरपूर मात्रा पाई जाती है। विटामिन जहां हमारी आंखों की रोशनी के लिए वरदान है, वहीं यह हमारी त्वचा को दमकाने का काम भी करता है। इसके अलावा विटामिन ए प्रतिरोधक क्षमता को भी बढ़ाता है, जो बीमारियों से लड़ने में मदद करता है। आलू सूप, प्रोटीन का भी स्त्रोत है। इससे आपके बाल भी घने और सिल्की बने रहते हैं। यहां तक कि आलू सूप में काबरेहाइड्रेट भी अच्छी-खासी मात्र में पाया जाता है। इसलिए इसे पीने के बाद आपको कमजोरी महसूस नहीं होगी।

सूप बनाने के लिए आवश्यक सामग्री

55 ग्राम मक्खन
110 ग्राम कटा हुआ प्याज
425 ग्राम कटे और छिले हुए आलू
120 एमएल दूध क्रीम
1 चम्मच नमक व काली मिर्च
900 एमएल सब्जी का स्टॉक
सजावट के लिए हरा धनिया पत्ती

विधि

- एक सॉस पैन में बटर गर्म करें। इसमें कटा हुआ आलू और प्याज डालकर भूनें।
- नमक और काली मिर्च डालें और इसे दस मिनट के लिए ढक दें।
- उसमें सब्जियों का स्टॉक मिलाएं और उबलने के लिए 10 से 15 मिनट तक छोड़ दें।
- इसमें गाढ़ा दूध (जिसमें क्रीम भरपूर हो) मिलाएं और ब्लेंडर से मिक्स करें।
- आपका सूप तैयार है। कटोरी में निकालकर इसे कटी फ्रेश धनिया पत्तियों से सजाएं।
- अगर सूप को और क्रीमी बनाना चाहते हैं तो इसमें ऊपर से क्रीम मिला सकते हैं और स्वाद का अलग आनन्द ले सकते हैं।
- स्वाद के लिए कुछ प्रयोग करना चाहें तो इस सूप का और आनन्द ले सकते हैं।